ढाढी बादररो बणायो

वीरवांण

सम्पादिका

श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, रावतसर

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७ | [illegible] शकाब्द १८८२ | ख्रिस्ताब्द १९६०

प्रथमावृत्ति १००० | | मूल्य ४.५०

[illegible]

RAJASTHAN PURATANA GRANTHMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular.

*

GENERAL EDITOR

ACHARYA JINA VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, (Germany); Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona; and Vishveshvrananda Vaidic Research Institute, Hosiyarpur, Punjab; Gujrat Sahitya Sabha, Ahemdabad, Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay; General Editor, Gujarat Puratattva Mandira Granthavali; Bharatiya Vidya Series; Sinhghi Jain Series etc. etc.

* *

NO. 33

VEERVANA

OF

DHADHEE BADAR

with

Introduction, Appendices, etc.

* * *

Published
Under the Orders of the Government of Rajasthan
By

The Director, Rajasthana Prachya Vidya Pratisthana
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

V.S. 2017] [*1960 A.D.*

VEERVANA

OF

DHADHEE BADAR

★

EDITED

With introduction, appendices etc

Shreemati Rani Lakshmi Kumari Choondawat
of Rawatsar

*

Published under the orders of the Government of Rajasthan

By

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE
JODHPUR (Rajasthan)

V S 2016] [1960 A.D

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृतभाषाग्रन्थ–१. प्रमाणमञ्जरी–तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६.०० । २. यन्त्रराजरचना–महाराजा सवाई जयसिंह, मूल्य १.७५ । ३. महर्षिकुलवैभवम्–स्व० श्रीमधुसूदन ओझा, मूल्य १०.७५ । ४. तर्कसंग्रह–पं० क्षमाकल्याण, मूल्य ३.०० । ५. कारकसम्बन्धोद्योत–पं० रभसनन्दि, मूल्य १.७५ । ६. वृत्तिदीपिका–प० मौनिकृष्ण, मूल्य २.०० । ७. शब्दरत्नप्रदीप, मूल्य २.०० । ८. कृष्णगीति–कवि सोमनाथ, मूल्य १.७५ ९ शृङ्गारहारावली–हर्षकवि, मूल्य २.७५ । १०. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य–पं० लक्ष्मीधरभट्ट, मूल्य ३.५० । ११. राजविनोद–कवि उदयराज, मूल्य २.२५ । १२. नृत्तसंग्रह, मूल्य १.७५ । १३. नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग–महाराणा कुम्भकर्ण, मूल्य ३.७५ । १४. उक्तिरत्नाकर–पं० साधुसुन्दरगणि, मूल्य ४.७५ । १५. दुर्गापुष्पाञ्जलि–प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, मूल्य ४.२५ । १६. कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत–भोलानाथ, मूल्य १.५० । १७. ईश्वरविलास महाकाव्य–श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५० । १८. पद्यमुक्तावली–कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट, मूल्य ४.०० । १९. रसदीर्घिका–विद्याराम भट्ट, मूल्य २.०० । २०. काव्यप्रकाशसङ्केत-भट्ट सोमेश्वर, भाग १, मूल्य १२.००, भाग २, मूल्य ८.२५ । २१. वस्तुरत्नकोश, अज्ञात कर्तृक, मूल्य ४.०० ।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ–१. कान्हडदे प्रबन्ध–कवि पद्मनाभ, मूल्य १२.२५ । २. क्यामखारासा–कवि जान, मूल्य ४.७५ । ३. लावारासा–गोपालदान, मूल्य ३.७५ । ४. वांकीदासरी ख्यात–महाकवि वांकीदास, मूल्य ५.५० । ५. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, मूल्य २.२५ । ६. जुगल-विलास–कवि पीथल, मूल्य १.७५ । ७. कवीन्द्रकल्पलता–कवीन्द्राचार्य मूल्य २.०० । ८. भगतमाळ–चारण ब्रह्मदासजी, मूल्य १.७५ । ९. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, मूल्य ७.५० । १०. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची भाग २, मूल्य १२.०० । ११. मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मूल्य ८.५० न पै. । १२. रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढा, मूल्य ८-२५ न पै । १३. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १, मूल्य ४.५० । १४. वीरवांण, ढाढी वादर कृत, मूल्य ४.५० ।

प्रेसोंमें छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ–१. त्रिपुराभारतीलघुस्तव–लघुपंडित । २. शकुनप्रदीप–लावण्यशर्मा । ३. करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर । ४. बालशिक्षा व्याकरण–ठक्कुर संग्रामसिंह ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा–पं० कृष्णमिश्र । ६. वसन्त-विलास फागु । ७ नृत्यरत्नकोश भाग २ । ८. नन्दोपाख्यान । ९ चान्द्रव्याकरण । १० स्वयंभूछंद–स्वयभू कवि । ११. प्राकृतानंद–कवि रघुनाथ । १२. मुग्धावबोध आदि औक्तिक-सग्रह । १३ कविकौस्तुभ–प० रघुनाथ मनोहर । १४. दशकण्ठवधम्–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी । १५ भुवनेश्वरीस्तोत्र सभाष्य–पृथ्वीधराचार्य, भा. पद्मनाभ । १६ इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध । १७ हम्मीरमहाकाव्यम्–नयचन्द्रसूरि । १८ ठक्कुर फेरू रचित रत्नपरीक्षादि ।

राजस्थानी और हिन्दीभाषा ग्रन्थ–१ मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग २–मुंहता नैणसी । २ गोरावादल पदमिणी चऊपई–कवि हेमरतन । ३ चन्द्रवंशावली–कवि मोतीराम । ४ सुजान संवत–कवि उदयराम । ५ राजस्थानी दूहा सग्रह । ६. राठोडारी वंशावली । ७. सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्य ग्रंथ सूची । ८. देवजी बगडावत और अन्य वार्ताएँ । ९. बगसीराम और अन्य वार्ताएँ ।

इन ग्रंथोके अतिरिक्त अनेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषामे रचे गये ग्रंथोका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है ।

सञ्चालकीय वक्तव्य

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानकी स्थापनाके साथ ही हमारी कामना रही है कि राजस्थानसे सम्बद्ध विविध भाषानिबद्ध साहित्यिक ग्रन्थोंके सग्रह और सरक्षणके साथ ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोका प्रकाशन भी किया जाये। इसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिये हमने 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' का कार्य प्रारभ किया है जिसमे अब तक ३५ ग्रन्थ प्रकाशित किये जा चुके हैं।

प्रस्तुत काव्य ग्रन्थ राजस्थानी भाषामे रचित है और इतिहास प्रसिद्ध गठोड वीर वीरमजीसे सम्बद्ध है। ढाढी वादर नामक मुस्लिम कविकी यह कृति साहित्यिक और ऐतिहासिक दृष्टिसे विशेष महत्त्वपूर्ण है। वादर अर्थात् बहादुर कविने प्रस्तुत काव्यमे विपक्षियोका वर्णन भी पूर्ण निष्पक्षता और उदारतासे किया है किन्तु साहित्यिक क्षेत्रमे यह कृति प्राय उपेक्षित रही है।

इतिहास-प्रसिद्ध चूण्डावत राजवशोत्पन्न विदुषी लेखिका श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूण्डावतने कुछ साहित्यिक कृतियोके साथ प्रस्तुत काव्य 'वीरवाण' हमे बताया तो हमने सहर्ष इसका प्रकाशन स्वीकार कर लिया। साहित्यिक सेवाओके कारण श्रीमती रानी चूण्डावतजीको हम धन्यवाद देते हैं। साथ ही यह आशा व्यक्त करते हैं कि राजस्थानके राजवशोसे सम्बद्ध अन्य व्यक्ति भी श्रीमती रानी चूण्डावतजीके विद्यानुरागका अनुकरण कर अपने सग्रहकी साहित्यिक रचनाओको शीघ्र ही प्रकाशमे लानेका उपक्रम करेंगे।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर
दशहरा २०१७ वि०स०

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

विषय-तालिका

++++++

विषय			पृष्ठ संख्या
सञ्चालकीय वक्तव्य			१–१६
सम्पादकीय प्रस्तावना	...	...	१–६२
वीरवांण	...	...	१–३२
परिशिष्ट १	...	...	१–२६
परिशिष्ट २	...	...	१–३०
परिशिष्ट ३	...	...	१–२२
परिशिष्ट ४	...	...	१–५
परिशिष्ट ५	...	...	

भूमिका

राजस्थान बहुत प्राचीन काल से ही सुसांस्कृतिक प्रदेश रहा है। इस कथन के प्रमाण में शिल्प-स्थापत्य, संगीत, चित्रकला और साहित्य के हजारों ही उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। साहित्य में सम्बन्धित देश की आत्मा के दर्शन होते हैं और साहित्य वास्तव में किसी देश की संस्कृति का प्रतीक एवं प्रतिनिधि कहा जा सकता है। राजस्थान भारतीय साहित्य का भण्डार है। राजस्थान में निर्मित साहित्य द्वारा भारतीय संस्कृति का उत्तम और पूर्ण रूपेण चित्रण हुआ है।

राजस्थान में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, ब्रजभाषा और खड़ी बोली आदि में प्रचुर साहित्यिक निर्माण का कार्य हुआ है। अन्य भाषाओं में थोड़ा बहुत साहित्य निर्माण होते रहने पर भी राजस्थानी भाषा में सर्वोत्कृष्ट साहित्य की रचनाएं प्रस्तुत की गई हैं। राजस्थानी भाषा वास्तव में राजस्थानियों की मातृभाषा है जिससे यह स्वाभाविक ही हुआ है कि इस भाषा में हृदयगत् भावनाओं का सजीव और सरस निरूपण हुआ है। राजस्थानी भाषा का साहित्य गद्य और पद्य दोनों में ही मिलता है। राजस्थानी साहित्य वास्तव में समुद्र की भांति गहन है जिसमें नाना प्रकार के ग्रन्थ-रत्न छिपे हुए हैं। राजस्थानी भाषा में कई वर्षों से खोज-कार्य होते रहने पर भी कई ग्रन्थ-रत्नों की जानकारी साहित्य-क्षेत्र में नहीं के समान हैं। ऐसे ही ग्रन्थ-रत्नों में "वीरवाण" की गणना भी हो सकती है।

"वीरवाण" नामक काव्य ग्रन्थ के अपर नाम 'नीसाणी वीरमजीरी," "निसाणी वीरमाणरी", "वीरमांण" और "वीरमायण" आदि भी कहे जाते। किंतु प्राप्त हस्तलिखित प्रति में "वीरवांण" नाम ही मिलता है इसलिये प्रकाशन में इसका नाम "वीरवांण" ही दिया गया है।

इस काव्य ग्रन्थ के एक से अधिक नाम प्रचलित रहने का प्रधान कारण यही ज्ञात होता है कि इस काव्य को अभी तक प्रकाशन का सुअवसर नहीं मिल सका। ऐसा नहीं कहा जा सकता कि "वीरवाण" के विषय में सम्बन्धित लोगों को जानकारी नहीं रही है। वास्तव में राजस्थान के साहित्य-रसिकों और विद्वानों में "वीरवाण" की चर्चा बराबर रही है, जिसके परिणामस्वरूप इस काव्य के सम्बन्ध में यत्र तत्र थोड़ी पंक्तियां कई ग्रन्थों में प्राप्त होती हैं किन्तु उनसे काव्य और कर्ता के सम्बन्ध में बहुत ही सीमित जानकारी मिलती है।

राजस्थानी भाषा और साहित्य के विकास एवं उन्नयन में प्रायः सभी वर्गों का थोड़ा-बहुत सहयोग रहा है किन्तु इस क्षेत्र में प्रमुख कार्य चारणों, जैन साधुओं, यतियों, क्षत्रियों, रावों, मोतीसरों और ढाढ़ीयों द्वारा सम्पन्न हुआ है। अब तक ढाढ़ीयों द्वारा रचित साहित्य को विशेष महत्व नहीं दिया गया, इसका मुख्य कारण जातिगत द्वेष और रूढ़िमय विचारों से ढाढ़ीयों को निम्न कोटि का समझा जाना है। भारतीय स्वाधीनता के उपरान्त ऐसे विचारों का स्वतः उन्मूलन हो जाता है। अब सभी वर्गों के साहित्य का अनुसंधान, सम्पादन औ प्रकाशन होना चाहिये तथा साहित्यिक क्षेत्र में सबको समान रूप में प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

"वीरवाण" का कर्ता बादर अर्थात् बहादुर ढाढ़ी था जैसा कि काव्य से प्रकट होता है। राजस्थान के सुप्रसिद्ध विद्वान स्व० पं० रामकरणजी आसोपा ने "वीरवाण" के कर्ता का नाम "रामचन्द्र" बताया है[1] किन्तु बिना ठोस प्रमाणों के यह स्वीकार नहीं किया जा सकता। यह अनिवार्य नहीं है कि साहित्य रचना का कार्य कोई विशेष वर्ग ही कर सकता है। हमारी वर्गगत उपेक्षा के कारण पता नहीं तथाकथित साहित्यकारों की कितनी रचनाएं नष्ट हो चुकी हैं और कितनी रचनाएं अभी अन्धकार में पड़ी हैं ?

चारणों की साहित्य-सेवा तो सर्व प्रसिद्ध है ही किन्तु कविरावों, मोतीसरों, नगारचियों और ढाढ़ियों का कार्य भी वीरों को काव्यमयी वाणी से प्रोत्साहित करना और अपने आश्रय-दाताओं का यश-वर्णन करना रहा है। मांगलिक अवसरों त्यौंहारों और युद्धों में सुयश का काव्यात्मक वर्णन प्रायः उपरोक्त श्रेणी के साहित्यकारों द्वारा ही होता रहा है। आज भी राजस्थान में यह शुभ परम्परा किसी न किसी प्रकार से प्रचलित है।

ढाढ़ी दमामियों और नगारचियों की श्रेणी में लिये जाते हैं तथा सारंगी अथवा सारंगी के प्रकार का एक वाद्य रबाब बजाते हैं।[2] कृष्ण जन्माष्टमी के दूसरे दिन दधिमहोत्सव अथवा नन्द महोत्सव पर वैष्णव मन्दिरों में ढाढ़ी-ढाढिन का स्वांग बनाकर लोग नाचते हैं जिससे ढाढियों की प्राचीनता की जानकारी मिलती है। ढाढ़ी नीचे दिया हुआ पद्य कह कर राम जन्म के समय अपनी दिव्य मानता सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं—

दशरथ रे घर जनमियां, हंस ढाढ़िन मुख बोली।
अठारा करोड़ ले चौक मेलिया, काम करन को छोरी॥

मध्यकाल में मुसलमान शासकों के दबाव से कई जातियों के लोग मुसलमान हो गये थे। "वीरवाण" ग्रन्थ का कर्ता बहादुर भी मुसलमान ढाढ़ी था और इसके आश्रय दाता जोईया भी मुसलमान थे।

बादर ढाढी ने मुसलमान होते हुए भी अपने आश्रय दाता की उदारता से प्रेरित होकर शत्रु पक्ष के राठौड वीर वीरमजी का यश वर्णन भारतीय संस्कृति के अनुरूप किया है।

---

१. राजरूपक नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित, भूमिका पृष्ठ २।
२. मुर्दम सुमारी रिपोर्ट राज मारवाड़, सन् १८९१ पृ. ३६८।

इस प्रकार "वीरवाण" वास्तव में एक मुसलमान कवि की राजस्थानी भाषा में लिखित महत्वपूर्ण काव्य कृति है।

राजस्थानी काव्य-ग्रंथ "वीरवाण" में वर्णित विषय का सारांश सम्बन्धित विशेष तथ्यों सहित इस प्रकार है—प्रारंभ में कवि ने शारदा और गणपति की वंदना करते हुए वीरमजी और सम्बन्धित वीरों के विषय में यथातथ्य निरूपण करने का अपना अभिप्राय प्रकट किया है (१ । १–३) [3] कवि ने लिखा है—

सुणी जिती सारी कहूँ, लहु न झूठ लगार।
मालजेत जगमालरो, वीरम जुध विचार ॥३॥

तत्पश्चात कवि ने जोधपुर राव सलखाजी (वि० सं० १४१४–१४३१ और ई० स० १३५७-१३७४) के चारों पुत्रों की वीरता का संक्षिप्त वर्णन एक ही नीसाणी में किया है–

"सुत च्यारू सलपेसरा, कुल में किरणाला।
राजस बका राठवड़ सरीर वडाला॥

साथ लिया दल सामठा वीरत्त रूपाला।
भिड़ोया भारत भीमसा दल पारथ वाला॥

देस दसु दीस दाविया कीया धक चाला।
केवी धस गीर कदरा वप सक वडाला॥"[4]

फिर जैतसिंह जी की गुजरात पर हुई लड़ाई का वर्णन किया गया है और "माल देवजीरो समो" लिखा गया है। इस युद्ध में गुजरात के यवन शासक मुहम्मद बेगड़ा द्वारा किये गये तीजणियों के हरण के बदले में जगमाल जी द्वारा व्यापारी के वेश में चढ़ाई कर ईद के अवसर पर बादशाह की पुत्री "गींदोली" को अन्य लड़कियां सहित लाने का और अपनी "तीजणियों" को मुक्ति दिलाने का वर्णन है। फिर "रावजी मालदेवजी रो पेलो झगड़ो" लिखा गया है, जिसमें दिल्ली सुलतान और मुहम्मद बेगड़े की भीनाद पर सम्मिलित चढ़ाई और मालदेव जी की विजय का वर्णन है।

मालदेव जी के गींदोली सम्बन्धी युद्धों का वर्णन करते हुए लिखा गया है—

---

३ पहला अंक पृष्ठ का और दूसरा अंक पद्य संख्या का सूचक है।

४ राव सलखाजी के मल्लीनाथजी, जैतमलजी, वीरमजी और शोभासिंहजी नामक चार पुत्र थे (जोधपुर राज्य का इतिहास भाग १ डा. गौरीशंकरजी हीरा चन्दजी ओझा पृ १८४। जोधपुर, बीकानेर और किशनगढ़ के राठौड़ राजवंश वीरमजी से सम्बन्धित हैं। बीकानेर दुर्ग के सूर्यपोल द्वारा की प्रशस्ति और वंश-कुमार ग्रंथ पत्र ८)

"गींदोलीरी लड़ाई में झगड़ा तीन तो रावल मालदेजी आपरै लोकसुं एकला किया। झगड़ो चोथो भाटी घड़सी रावल जी वीरमदेजी कंवर जगमाल जी सोलखी माधोसिंह जी। पांचमो झगड़ो कंवर जगमालसिंह जी एकला भूतारे जोरसें कीइंयां। पांचमां झगड़ा में तीन लाख आदमी खेत पड़ीया। अठी राठोरां रा आदमीं लाख छा जांमासु आदमी हजार पचीस खेत महाराई चक्र जुद्ध हुयो।" पृ०१५

वीरवाण और उसके कर्ता के सम्बन्ध में राजस्थानी ग्रंथ में दी गई टिप्पणी महत्व-पूर्ण है जिसमें कहा गया है "मैं बादर ढ़ाढ़ी जोईया का ही हूँ सो मैंने पूछकर जैसी हकिकत सुनी वैसी काव्य में प्रकट की है। मैंने अपनी उक्ति अथवा सामर्थ्य के अनुसार रावलजी, जगमालजी और कुंवर जी रिड़मल जी के कहने से यश बनाकर सुनाया। इस युद्ध के बीस वर्ष बाद यह ग्रंथ बनाया है।"[५]

वीरमजी और जोहीयों के सम्बन्ध का वर्णन दूहा छन्द संख्या ६२ से प्रारंभ होता है। प्रारंभ में महामाया का स्मरण करते हुए लुणराव के सात पुत्रों की वीरता का वर्णन किया गया है। फिर प्रकट किया गया है कि जोहीया मावव ने एक बार मुहम्मद शाह के अशर्फियों के ऊंट लूट लिये। तब मुहम्मद शाह ने सारे, जोहियों के सिंध को दबा लेने की धमकी दी। तब जोहिये वीरमजी से मिले—

"मैसंद नै जगमाल रै, जबर वैर ओजांण।
आया सरणै जोहियां, सिंध छोडै साहिवाण॥"

दिल्ली सुलतान की सेना ने वीरमजी पर चढ़ाई की किन्तु वे जोहियों की रक्षा में तत्पर रहे। युद्ध में वीरमजी की विजय हुई जिसके लिये लिखा है:—

वीरम मालें वीरवर, अरिअण दिया उठाय।
सरब फोज पतसाहरी, पाछी गी पिछताय॥

तदुपरान्त वीरमजी और जोहियों के संघर्ष का कारण बताया गया है, कि जोहियो ने जवाद नामक सुन्दर घोड़ी की बछेरी वीरमजी के भाई मलीनाथ जी के मागने पर भी न दी।

---

५. संभव है कि सम्बन्धित पंक्तियां काव्य की प्रमाणिकता बताने के लिये क्षेपक रूप में जोड़ी गई हो। काव्य का सम्बन्ध मुख्यतः हार्दिक अभिव्यक्ति से होता है। कवि के लिये शास्त्रज्ञ अथवा उच्च शिक्षित होना आवश्यक नहीं होता। क्योंकि विद्यालय की शिक्षा का सम्बन्ध बहुधा बौद्धिक अध्ययन से ही होता है। सामान्य शिक्षित व्यक्ति भी बहुश्रुत और अपनी कला के धनी होते हैं। किन्तु वे अपनी रचनाओं को कभी कभी शुद्ध लिखने में भी असमर्थ होते हैं। ऐसी अवस्था में काव्य में समय समय पर परिवर्तन होते रहते है। लोकप्रिय होने पर काव्य प्रायः मौखिक ही प्रचलित हो जाते हैं। फिर ऐसे काव्य में मूल छन्दों का भुलाना और नवीन छंदों का जुड़ना असंभव नहीं होता। ऐसा प्रतित होता है कि पीछे से किसी ने वीरवांण को लिपिबद्ध कर स्पष्टीकरण के लिये गद्यांश जोड़ दिये हैं।

मलीनाथ मागी मुपा, साकुर माले समाव ।
जका न दीधी जोहिया, उणसु त्रधी उपाध ॥

मलीनाथजी ने मधु जोहिया को रुपया आदि का लालच दिया साथ ही दला ने भी समझाया किन्तु मधु नही माना । तब धोखे से जोहिया को मारने की योजना बनी —

मारै लेसु माल, साकुर पण लेसु सरब ।
जोया पर जगमाल, रचै मूक उण रात रो ॥

एक बुढिया मालिन ने जोहियों को इस "चूक" की सूचना दी जिसका सरस वर्णन इस प्रकार किया गया है—

मालण नै नितरी मोहर, दलो दिरातो दान ।
चूक तणी चरचा चली, आई मालण कान ॥
जद उण मालण जाणीयो, दलै दियो बहु दान ।
मीलू उणरो मीलणों, कथ आ घालू कान ॥
डिगती डिगती डोकरी, पूगी दलै पास ।
दला चूक ता पर दुम्हल, नात सके तो नास ॥
तलगाडै थाणा तठै, सावै वदन सात ।
वीरा था पर वाजसी, रुक झडी अधरात ॥

राठौडों द्वारा होने वाली "चूक" का समाचार जान कर दला ने अपने परिवारों को रवाना कर दिया —

दलै कबिला टेम नै, बाहिरज कीधा वेग ।
साथै वदन सात ही, तिके उरसरी तेग ॥

अब राठाडा और जोहिया, दोनों ही दलों की ओर से युद्ध की तैयारी होने लगी । इसी समय दिल्ली बादशाह कुतबद्दीन की सेवा में जाने वाले तीस अशर्फिया के ऊटा को वीरमजी ने लूट लिया —

ऊटा तीसा ऊपर असरफीया आवै ।
मा मेलो पतसाह के जोगणपुर जावै ॥
पैमकसी पतसाहरै पतसाह पुगावै ।
मिलीया वीरम मारगा अस लीया आवै ॥
मत्र मोहरा पतसाहरी लुटे लीजावै ।
मामल हुय सारा सुभट मीया फरमावै ॥
ओ धन वीरम आपरै घरमे नह मावै ।
वीरम श्री भरा थानरो पोह फेम पड़ावै ॥

बादशाही सेना से हुए युद्ध और उसम राठौड़ों की विजय का वर्णन इस प्रकार किया गया है —

चढ घोड़ा भड़ चालीया रज गेण ढकाया ।
मिलीया भारत जांगलु अथ रतरा आया ॥
मीर केइ रीण मारीया मदु मन चाया ।
काट कटकां काढ़ीया खल खेंग खपाया ॥
हुर अपछर हरप अत सुरां वर पाया ।
ग्रीधण साकण जोगणी पल पूरा पाया ॥
वीरम छोडे जांगलु साहीयांण सिधाया ।
सज जुध जोया सांपला वीरम वचवाया ॥
जद पीछा तठ पातसा धर अपणी धाया ।
दल जी कोसां दोय तक सामे ले आया ॥
सजे उमंग साहिवाण मैं वीरम व्रध वाया ।
दीध वधाई राइकां जद गोगा जाया ॥
एक महीनो आठ दिन थठ गोठां थाया ।
वैरो लप रहवास कुंदलजी दरघाया ॥
बारा गाम ज बगसीया चिता वीरम चाया ।
डांण वले उचका दिया आधा अपणाया ॥
धाडै धन धुर माफीया मांफी वैमाया ।
वीरमकुं देवण वलै लप वैरे लाया ॥

इस युद्ध से राठोड़ो की स्थिति सुदृढ़ हो गई और—

लप वैरे पैदा सलप, सपरी आवै साप ।
सापांरा उपजै सदा, लेपे रिपीया लाप ॥

राठौड़ भाई जोहियों से बदला लेने का उपाय करने लगे। एक दिन वीरमजी ने जोहियों की साढणिया छीन लीः—

दीठी वीरम हेक दिन पीती सर पांणी ।
वीरम रै सव सांढीयां निंजरां गुजराणी ॥
वीरम चित विटालिया ऊधी मत आणी ।
सात हजारु सांढीयां दिन हेक दगांणी ॥
आयर जिणरी ओठीयां कल कुकरांणी ।
दस हजार चढीया दुभल रज गैण ढकांणी ॥
मारै वीरम मेटसां करसां तुरकांणी ।
लप वैरे वीरम लियै सांढ्यां आंपांणी ॥
दोय कोसां पूगो दलो लारे लुणीयांणी ।
मानों मानों मारकां सचो सलपाणी ॥

मलिनाथ जगमाल सु तिण किसडो ताणी ।
आप तणी घर छोडके आयो आपाणी ॥
आपा मारण उठींया लप कोट लगाणी ।

कवि ने अपने आश्रयदाता दला जोया की विशेष प्रशंसा की है—

सरणाया साधार, ढलै जिसो नह देपीयो ।
वीरमरा विनपार, उवर गुना जिण जारीयो ॥

दला ने राठौड़ों से समझौते का प्रयत्न भी किया—

दल भेज प्रधान कु ए जाव अपदे ।
वीरम तुम गुना करो हम जाय पिमदे ॥
ढावो दावो ठाकरा धर पाय धरदे ।
मदु न माने माहरी कल काहे करदे ॥
हेकण जगा न मावही दोय सेर वकदे ।
हेकण म्यान न मावही दोय षाग धकदे ॥
तुम हिंदु गुना करो मुप बोलो मदे ।
दोय घर डाकण परहरे गाम वणीया हदे ॥

वीरमजी ने दला को उत्तर भेजते हुए लिखा—

आपै वीरम राठवड आगल पलावै ।
डाकण किणनै परहरै जव भूषी थावै ॥
गुण भूलो सारा दलो परवान मेलावै ।
आप प्रधान सु अपीयो वीरम वट पावै ॥
सूर उगै साइयाण मै निन थाह पलावै ।
जोया हदी नीपका पोसे ने पावै ॥
दले अरु देपाल कु नित धाह सुणावै ।
वीरम न्याय नह लही अन्याव सुहावै ॥
जोइया वडपण जाणनै कथ नीत करावै ।
पाँमे फेरू पाजरू साफरै रापवै ॥

दला के समझौते के प्रयत्न व्यर्थ हुए और वह वीरमजी की अनिति से बहुत दुखी हुआ जिसके लिए कहा गया है—

दोनु तरफारों दलो, दुप अुगनै निम दीह ।
भलीया रहे न जोइया, लोपी वीरम लीह ॥

एक दिन वीरमजी ने जोहियों की धरती पर अधिकार कर अपने "दाणी" बैठा दिये और १५ जोहिया को भी मार दिया । तब जोहियों ने राठौड़ों पर चढ़ाई कर दी ।

इसी समय वीरमजी ने एक और चाल चली। जिसका वर्णन इस प्रकार किया गया है:—

बुकणरे दोय बेटीयां गन एक नीहालै।
नाम वड़ी कसमीदे परणो देपालै॥
रांनल कंवरी राजवण अभ अछरां गालै।
सो मांगी देवराज युं कर जोड़ हतालै॥
रांनल मुझकुं राजवण भाभी परणालै।
भावज गुण भूलां नहीं धर्म पोड़ विचालै॥
कहीयो जद कसमीर दे चढ़ क्रोध अचालै।
हुं परणांसु हिंदवां तुरकां हरटालै॥
सो कुछ हिंदु हम सुणां जिसकुं परणालै।
परणांसुं सगरण करै वीरम विगनालै॥
जद पाछो कहीदो जसु आगम अपतालै।
मानै भाभी माहरो वायक सिर मालै॥
वैठी रोसै वापनै कर मुंडे कालै।

विवाह के अवसर पर हुई मारकाट का वर्णन महत्वपूर्ण है जिसमें कवि की अन्य समान कर्मवाली जातियों के प्रति उपेक्षावृत्ति की झलक मिलती है—

चारण चारण कुकतां आरण जगांणा।
वामण सुरी वासता सिर आप दिरांणा॥
भागा मुंडा भाठदां पुन दांत पिराणा।
डोफा भागा डुलड़ा झाटक झेरांणा॥
कटिया हात कमीणदा दत नेग दिरांणां।
गहणा गायणीयां तणां लुटे लिवराणां॥
केतां पात्रज कटी हातां हेरांणा।
जावै गुणीयण जीव लेकर पांचा तांणा॥
ठांवां पंथ विच एकठां मिल ठाक घतांणा।
फिर कोइ इसड़ा ज्याग मै मत पाव दिरांणा॥
सलपांणी जिसड़ा सुपह वनड़ा वरवांणा।
बुकणका घर पोहकै धन सोध लिरांणा॥
बुकण सहतां वेलीयां इक पाड़ दिरांणा।
भटीयाणीदे भागका क्या चक्र फिरांणा॥
कहं भाटी कसमीर कुं क्या फाग पिलांणा॥

दला जोहिया ने समझौते का प्रयत्न फिर भी चालू रक्खा और वीरमजी को अपने प्रधान द्वारा इस प्रकार सूचित किया—

दलैपान विचार कर परधान पठाया।
लप वरे वीरम कनै ए जाय कैवाया॥

तगड तपी पग भार सै भग वीरम आया।
आया कु आदर दिया हम लीध वधाया॥

लख वेरो रहवास कु दलजी दरवाया।
धरती चोनी गामडा सब राज समाया॥

उस मासु वीरम वनै आवा वगसाया।
डाण वलै उचका दिया आदा अपणाया॥

चोवी गाम चबुतरा कि काज वैठाया।
पोमे इक्सठ पाजरु सफरै रापाया॥

जोइया पग माडे जिती धरे नीही रहाया।
हाली रहे न जुटिया कैहर उचराया॥

मीलीया चिडीया महलै आहि जाणक आया।
जाणक डोकर पोलडै निच वाय वमाया॥

क्या तेरा अवगुण किया हम लीध नीभाय।
पायरहि दुगुण किया सब जाय भुलाया॥

वीरम जी की रानी मागलियाणी भी जिनने सातों जोहियों को अपना राखी भाई बनाया था समझौते का प्रयत्न करने लगी किन्तु उसका कोइ परिणाम न हुआ।

युद्ध का मुख्य कारण यह हुआ कि वीरमजी ने दरगाह के "फरास" पेड़ को काट डाला जिसका वर्णन करते हुए मुस्लिम कवि ने अपनी श्रद्धा इस प्रकार व्यक्त की है—

दरपत हरोपल पीरदा विच दरगह सोनै।
जोइया देस नीदेस मै जिण सामो जोवै॥

पीर प्रचाइल प्रगट दुप दालद पीवै।
राम रहिम जु एक है कबु दोय न होवै॥

नीर फरामा वाढ वाढ नपाती ढोवै।
के मुला तागा करै हुन हाका होवै॥

फरहास के कटने का समाचार सुन कर दला जोहिया को बहुत दुख हुआ और उसने एक दिन जाकर वीरमजी की गायों को घेर लिया—

जेज न कीधी जोइया, घेरी जायर गाय।
सुण वीरम ग्वाला सबद, लागी उर मैं लाय॥

दस हजार जोया दुग्गल, कटठ सारा कोट।
ढाला अगा चालणा, ढाला करै न ओट॥

जोहियों द्वारा गायें घेर लेने पर वीरमजी ने भी विलंब नहीं किया और वे युद्ध के लिये चलने लगे। मागलियाणी ने उनको समझाया मैं भाई को समाचार भेजती हूँ वह अवश्य ही प्रातः काल गायें लौटा देगा।

वीरमजी ने मागलियाणी राणी को उत्तर दिया कि लखवेरं की सीमा से जोइये मेरी गायो को लेकर जीवित नहीं जा सकते और यदि मैं तुम्हारे कहने से चुप बैठुंगा तो वे समझेंगे कि राठौड़ कायर हैं। ऐसी अवस्था में मेरा आलस्य कर बैठना असंभव है—

फणधर छांडै फणद सुं न भार संभावै।
अरक पिछम दिस उगवै विधि वेद विलावै॥
विग घटै वींहगेस को सिव ध्यान भुलावै।
गोरख भूलै ग्यांन कुं जत लिछमण जावै॥
सत छाडै सीता सती हणमंत घबरावै।
धणीयां धाडेता तणीकी पबरां पावै॥
हुं सुंक कर बेठु घरे जग उलटो जावै॥

वीरमजी दो हजार सवारो को साथ ले जोइयों पर चढाई करने के लिये तैयार हो गये। इधर जोहीये दस हजार सवारों सहित युद्ध के लिये तैयार हुए। काव्य में युद्ध के प्रारंभिक वातावरण को सफलता पूर्वक अंकित किया गया है। भूत, प्रेत जोगिनी, गिद्ध आदि का युद्ध भूमि में आना, वीरो की हुंकार आदि का वर्णन वीर रस के अनुरूप हुआ है। वीरम ने सर्व प्रथम तलवार चलाकर ६५ जोहियो को मार गिराया। फिर वीरम और मदु के बीच भयकर युद्ध हुआ। दोनो घायल हो गये। कवि ने पुनः वीरमजी की वीरता का बखान करते हुए लिखा है—

लोप भवर गिर लंकरो कुण जावै वारै।
आभ भुजां कुण ओढ मै कुण सायर जारै॥
मिणधर दे मुप अगुली मिण कवण लिवारै।
सिंह पटा भर सांप हो कुंण मैंड पघारै॥
तेरु कुण सायर तिरै जमकुं कुण मारै।
वाद करै रिण वीरमो नर कोण वकारै॥
मदु तो विन मारको कुंण आसग धारै।

दोनों ओर के युद्ध का सजीव वर्णन करते हुए कवि ने बताया है कि अन्त में वीर और मदु दोनों ही युद्ध भूमि में मर कर सो गये। कवि कहता है—

अंग वीरमरै ओपीया, घाव एक सो दोय।
अंग मदुरै उपरा, गिणती चढै न कोय॥

तदुपरान्त कवि ने दोनों दलों की ओर से वीर गति प्राप्त करने वाले योद्धाओं के नाम दिये हैं—

निसाणी

पडीया वीरम पापली सग टतरा सुरा ।
सोलपी मावो सुभट पडपेत सनुरा ॥
पडीयो चायल सेंसमल पल कर भप भूरा ।
भीम पडे रिण सापलो तन कर चक चूरा ॥
टोलो पड मोयल दुभल पत्रवट नट पोर ।
हजूरी वनी पडे टोयण दल टोर ॥
पडोयो आहेडी पनो भडीयो पग भोर ।
साणी पड पाणक सुभट कीर मर तन कोर ॥
मागलीयो मगलो पडे जग सारो जाणै ।
महुन टोय पड मूरमा पापर हय पाणै ॥
वीरम मग गीठीया विहृद तद ऊची ताणै ।
अछरा नर पोहता इता अग बैठ निमाणे ॥

॥ दूहा ॥

सोडा हाडा सिसोदा, पडभाना अरु गोड़ ।
चानडा तुर चवाण पड, रिण पडीया राठोड ॥

जोहिया की ओर से मार गये योद्धाओ का वर्णन इस प्रकार किया गया है—

जसु रिण मे जुभीया कर जोम हमला ।
मदु जैल रिण रहे भड तेगा भना ॥
घट फूटा देपालगा धुडले नर चला ।
दोय महस जोया दुभन हुरा मग हला ॥
चढीया टोली चारसे गिरगे गननला ।
सन आया माहो नाणमे दर अला अला ॥
दलो कहै मै परजीया मानी नर कोई ।
वीरमसु जुध वानने मन सेन कराई ॥
मार वीरम रिण मुवा भड न्याम्द भाई ।
धूड थलोइण धाटने जो कीधी मो पाई ॥

वीरमजी के पाँच पुत्र थे, (१) चूंडा, (२) सत्ता, (३) गोगादेव, (४) देवराज और (५) विजय राज।[१]

उपरोक्त युद्ध के पश्चात् कवि ने चूण्डा के प्रसङ्ग में लिखा है कि एक समय चूंड़ा सोया हुआ था। तब उस पर सर्प ने अपने फण की छाया की। तब पास ही खड़े बारहठ आला ने जाना कि चूण्डा वास्तव में कोई छत्रपति राजा है। फिर चूण्डा द्वारा घास की गाड़ियो में सैनिक छिपा कर मंडोवर गढ़ में ले जाने और गढ़ पर अधिकार करने का वर्णन है।

तदुपरान्त गोगादेव द्वारा दला जोहिया से युद्ध कर वीरमजी का बदला लेने का वर्णन है। चूण्डा जी ने गोगादेव से कहा कि "मैं तो मामे को मारूंगा नही सो तुम ही युद्ध करो।"

गोगा देव ने पाच सौ सवारो को साथ लेकर दला जोहिया पर चढाई की और दला को मार दिया।

दला के मारे जाने का समाचार पूंगल पहुँचाया गया। समाचार प्राप्त कर लुणियाणी जोहीयो ने क्रोधित होकर गोगादेव पर चढाई की। युद्ध मे गोगादेव ने वीरता पूर्वक युद्ध किया और अन्त में वीरगति प्राप्त की जिसके लिये कवि ने लिखा है--

हुय सिद्ध दसमो हालीयो संग नाथ जलंधर ॥

अन्त में कवि ने "चितहलोल" गीत में गोगादेव की प्रशंसा करते हुए और काव्य की छन्द-संख्या बताते हुए अपने काव्य को पूर्ण किया है।[२]

'वीरवाण' में ऐतिहासिक घटनाओ का यथा तथ्य चित्रण करने का प्रयत्न किया गया है जिससे हम इसको ऐतिहासिक काव्य मान सकते हैं। प्राचीन काल में प्रत्येक विषय के लिये पद्य को प्रधानता दी गई है और गद्य को प्रायः उपेक्षित किया गया है। यो अपवाद स्वरूप राजस्थानी भाषा में गद्य भी प्रचुर मात्रा मे मिलता है। हजारो ही वार्ताएं, ख्यात, विगत और पीढ़िया आदि राजस्थानी गद्य के अनूठे उदाहरण हैं। ऐतिहासिक घटनाओं के यथा तथ्य चित्रण की ओर रहता है। प्राचीन काल में कई कवि इतिहासकार भी रहे हैं। ऐसी अवस्था में इतिहास के आगे काव्यत्व की प्रायः उपेक्षा हुई है और ऐतिहासिक पद्यों में काव्यत्व नाम मात्र को ही मिलता है। किन्तु "वीरवाण" के लिये ऐसा नहीं कहा जा सकता।

"वीरवाण" में ऐतिहासिक घटनाओ का यथा तथ्य निरूपण किया गया है। साथ ही मार्मिक प्रसङ्गो के अनुकूल भावनापूर्ण काव्यात्मक अभिव्यक्ति भी हुई है। काव्य में वर्णित प्रमुख घटनाए निम्नलिखित हैं--

---

(१) मुहणोत नैणसी री ख्यात भाग २ (का० ना० प्र० सभा) पृ० ८७। कवि राजा बांकीदासजी ने वीरमजी के पुत्र ६ माने हैं--

गोगादे १, देवराज २, जैसिंघ ३, वीजो ४, चुण्डा ५ व पाची ६। देखिये बांकीदासरी ख्यात, वार्ता सं० ५२ पृष्ठ ६, राजस्थान पुरातत्व मन्दिर जयपुर।

(२) गोगादेव राठोड़ और सम्बन्धित विषयों में प्राप्त आदेश पर ज्ञातव्य परिशिष्ट में दिये गये हैं।

(१) जैतसिंह री झगड़ो—जैतसिंह द्वारा गुजरात के परमारों पर आक्रमण कर राजधरा पर अधिकार करना।

(२) मालदेजी री समो—अहमदाबाद के मुहम्मद बेगडा से युद्ध कर गीन्दोली का हरण करना। इसमें पांच झगड़ों अर्थात् युद्धों का वर्णन है।

(३) वीरम जी और जोहिया का युद्ध जिसमें वीरमजी और जोहिया के सम्बन्ध, युद्ध के कारण, युद्ध का वर्णन और युद्ध के परिणाम दिये गये हैं। इसी प्रसङ्ग में दिल्ली बादशाह के अशर्फियों से लदे ऊंटों की राठौड़ों द्वारा हुई लूट और युद्ध का वर्णन भी दिया गया है।

(४) वीरमजी के पुत्र चूण्डा द्वारा मण्डोवर पर अधिकार करना।

(५) वीरमजी के एक पुत्र गोगादेव द्वारा जोहियों से युद्ध कर वीरमजी की मृत्यु का बदला लेने और वीर गति प्राप्त करने का वर्णन।

उपरोक्त पांचों ही घटनाएं इतिहास प्रसिद्ध हैं और सम्बन्धित ग्रन्थों से प्रमाणित होती हैं। विशेष प्रमाणों के अभाव में इन घटनाओं को अनैतिहासिक नहीं ठहराया जा सकता। अन्य इतिहास ग्रन्थों से भी किसी न किसी रूप में सम्बन्धित घटनाओं का समर्थन होता है। सम्बन्धित विषय में प्रमुख इतिहासकारों के मत इस प्रकार हैं—

स्व० डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

मुहणोत नैणसी लिखता है—'वीरम महेवे के पास गुढा (ठिकाना) बांध कर रहता था। महेवा में खून कर कोई अपराधी वीरमदेव के गुढे में शरण लेता तो वह उसे अपने पास रख लेता। एक समय जोहिया दल्ला भाइयों से लड़कर गुजरात में चाकरी करने चला गया, जहां रहते समय उसने अपना विवाह कर लिया। कुछ दिनों बाद वह वहां से अपनी स्त्री सहित स्वदेश की तरफ लौटा। मार्ग में महेवे पहुँच कर वह एक कुम्हारी के घर ठहरा और एक नाई से बुलवाकर अपने बाल बनवाये। नाई ने उसके पास अच्छी घोड़ी, सुन्दर स्त्री और बहुत सा धन देखा तो तुरन्त जाकर इसकी खबर जगमाल को दी। अनन्तर जगमाल की आज्ञानुसार उसके गुप्तचर कुम्हारी के घर जाकर सब कुछ देख भाल आये। कुम्हारी ने इसका पता पा दल्ला से कहा कि तुम पर चूक होने वाली है। फिर दल्ला का मार्ग पूछे जाने पर उसने उसे वीरम के पास जाने की सलाह दी। तदनुसार दल्ला अविलम्ब स्त्री सहित वीरम के गुढे में जा पहुंचा। पांच सात दिन तक वीरम ने दल्ला को अपने पास रखा और उसकी मान मनुहार की। विदा होते समय दल्ला ने कहा कि वीरम, आज का शुभ दिन मुझे तुम्हारे प्रताप से मिला है। जो तुम भी कभी मेरे यहां आओगे तो चाकरी में पहुंचूंगा मैं तुम्हारा राजपूत हूं। वीरम ने कुशलतापूर्वक उसे उसके घर पहुंचवा दिया।

"माला के पुत्रों और वीरमदेव में सदा झगड़ा होता रहता था, (अतएव) वह (वीरम) महेवे का परित्याग कर जैसलमेर गया वहां भी वह ठहर न सका और पीछा आया तथा गावों को लूटने और धरती का बिगाड़ करने लगा। कुछ दिनों बाद वहां का रहना भी कठिन जान वह जागलू में ऊदा मूलावत के पास पहुंचा। ऊदा ने कहा कि वीरम, मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं, कि तुम्हें अपने पास रख सकूं, अतएव आगे जाओ। तुमने नागौर को उजाड़ दिया है, यदि उधर का खान आवेगा तो मैं उसे रोक दूंगा। तब वीरमदेव जोहियावाटी में चला गया। पीछे से नागोर के खान ने चढाई कर जागलू को घेर लिया, जिस पर गढ़ के द्वार बन्द कर ऊदा भीतर बैठ रहा। खान के कहलाने पर ऊदा उससे मिलने गया, जहां वह बन्दी कर लिया गया। खान ने उससे वीरम का पता पूछा, पर उसने बताने से इन्कार कर दिया। इस पर उसकी माता से पुछवाया गया, पर वह भी डिगी नहीं। दोनों की दृढ़ता से प्रसन्न होकर खान ने ऊदा को मुक्त कर दिया और वीरम का अपराध भी क्षमा कर दिया।

'वीरम के जोहियों के पास पहुंचने पर उन्होंने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया और दाण में उसका बिस्वा (भाग) नियत कर दिया। तब वीरम के कामदार कभी-कभी सारा का सारा दाण उगाहने लगे। यदि कोई नाहर वीरम की एक बकरी मारे तो यह कह कर कि नाहर जोहियों का है वे बदले में ११ बकरियां ले लेते थे। एक बार ऐसा हुआ कि आसीरिया भाटी बुक्कण को, जो जोहियों का मामा व बादशाह का साला था और अपने भाई सहित दिल्ली में रहता था, बादशाह ने मुसलमान बनाना चाहा। इस पर वह भाग कर जोहियों के पास जा रहा। उसके पास बादशाह के घर का बहुत सा माल और वस्त्राभूषण आदि थे। गोठ जीमने के बहाने उसके घर जाकर वीरम ने उसे मार डाला और उसका माल असबाब तथा घोड़े आदि ले लिये। इससे जोहियों के मन में उसकी तरफ से शंका हो गई। इसके पांच - सात दिन बाद ही वीरम ने ढोल बनाने के लिए एक फरास का पेड कटवा डाला। इसकी पुकार भी जोहियों के पास पहुंची पर वे चुप्पी साध गये। एक दिन दल्ला जोहिये को ही मारने का विचार कर वीरम ने उसे बुलाया। दल्ला खरसल (एक प्रकार की छोटी हल्की बैल गाड़ी) पर बैठ कर आया, जिसके एक घोड़ा और एक बैल जुता हुआ था। वीरम की स्त्री मांगलियाणी ने दल्ला को अपना भाई बनाया था। चूक का पता लगते ही उसने दल्ला को इसका इशारा कर दिया। इस पर जंगल जाने का बहाना कर दल्ला खरसल पर चढ़कर घर की तरफ चल दिया। कुछ दूर पहुंच कर खरसल को तो उसने छोड़ दिया और घोडे पर सवार होकर घर पहुंचा। वीरम जब राजपूतों सहित वहां पहुंचा उस समय दल्ला जा चुका था। दूसरे दिन ही जोहियों ने एकत्र होकर वीरम की गायों को घेरा। इसकी खबर मिलने पर वीरम ने जाकर उनसे लडाई की। वीरम और दयाल[1] परस्पर भिड़े। वीरम ने उसे मार तो लिया पर जीता वह भी न बचा और खेत रहा। वीरम के साथी गांव बडेरण से उसकी ठकुराणी (भटियाणी) को लेकर निकले। धाय को अपने

(१) मुंहणोत नैणसी का पूर्ण वक्तव्य परिशिष्ट में दिया गया है।

एक वर्ष के पुत्र चूण्डा को आल्हा चारण के पास पहुँचाने का आदेश दे वह राणी मागलियाणी सहित सती हो गइ ।

(जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड, पृष्ठ १६३)

श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ

"यह सलखाजी के पुत्र और रावल मल्लिनाथजी के छोटे भाई थे । यद्यपि मल्लिनाथ जी ने इन्हें खेड की जागीर दी थी, तथापि जोहिया दला की रक्षा करने के कारण इनके और मल्लीनाथजी के बीच झगडा उठ खडा हुआ । इससे इन्हें खेड छोड देना पडा । वहा से पहले तो यह सेतरावा की तरफ गए और फिर चूटीसरा में जाकर कुछ दिन रहे । परन्तु वहा पर भी घटनावश एक काफिले को लूट लेने के कारण शाही फौज ने इन पर चढाई की । इस पर यह जागलू में साखला ऊदा के पास चले गये । इसकी सूचना मिलने पर जब बादशाही सेना ने वहा भी इनका पीछा किया, तब यह जोहियों के पास जा रहे । जोहियों के मुखिया कल्चा ने भी इनकी पहले दी हुइ सहायता का स्मरण कर इनके सत्कार का पूरा पूरा प्रबन्ध कर दिया । परन्तु कुछ ही दिनों में इनके और जोहिया के बीच झगडा हो गया । इसी में वि० स १४४० (ई० स० १३८३) में यह लखवेरा गाव के पास वीरगति को प्राप्त हुए । विरमजी के पाच पुत्र थे १ देवराज, २ चूडा, ३ जैसिह, ४ विजा और ५ गोगादेव ।

(मारवाड का इतिहास प्रथम खण्ड)

"वीरवाण की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें कवि ने मुसलमान होते हुए भी धार्मिक उदारता का परिचय दिया है । जोहिया मुसलमानों की सहनशीलता का परिचय भी प्रस्तुत काव्य द्वारा प्राप्त होता है । जोहिया ने वास्तव में वीरमजी और उनके साथियों की हठधर्मा पूर्ण कामा और अपराधो से विवश होकर ही युद्ध किया था । फिर वीरमजी की रानी मागलियाणी ने जोहिया मुसलमानो को अपना राखीबन्ध भाइ बनाया तो दोनो ही पक्षों ने अपने उच्च सम्बन्धो का निर्वाह किया । यहा तक कि चूण्डाजी भी अपने मामा पर तलवार चलाने के लिये नही तैयार होते हैं और गोगादेवजी को वीरमजी का बदला लेने के लिये भेजते हैं ।

"वीरवाण" में वीररस का उत्कृष्ट निरूपण हुआ है । 'वीरवाण" वास्तव में वीर रस प्रधान काव्य है और इसमें आलबन, उद्दीपन, स्थाइ एव सचारी भावों का विस्तृत वर्णन हुआ है । युद्ध के कारण मध्य युगीन परिस्थितियों के सर्वथा अनुरूप हैं जैसे स्त्री हरण, मार्ग में जाते हुए धन का लूटना, घोडा ऊटो और गायों को घेरना, धार्मिक भावनाओं पर आघात करना आदि । युद्ध का वर्णन तो कवि कल्पना और ओझ से ओतप्रोत हुआ है ।

'वीरवाण' की तीसरी विशेषता कथा वस्तु का सुसगठित होना है । काव्य सम्बन्धी प्रत्येक घटना पिछली घटनाओ से जुडी हुइ है और वीरमजी तथा जोहियों के युद्ध में सघष चरम सीमा पर पहुँचता है । सघर्ष का अन्त गोगादेव द्वारा जोहियो से बदला लेने से होता है और यही काव्य पूर्ण भी होता है । इस प्रकार काव्य की कथा वस्तु भी पूर्ण सगठित है ।

'वीरवाण' की भाषा राजस्थानी है । 'वीरवाण' की भाषा पूर्ण रूपेण परिमार्जित नहीं होते हुए भी विषय के अनुरूप ओजपूर्ण है । भाषा में कइ स्थलों पर पजाबी प्रभाव भी

झलकता है। पंजाबी की "दा" "दी" विभक्तियों का प्रयोग "रा" "री" के स्थान पर कई बार हुआ है। बहादुर ढाढ़ी का शास्त्रीय अध्ययन नहीं ज्ञात होता है और इसलिये भाषा दोष और छन्द दोष भी कई स्थानों पर मिल जाते हैं।

'वीरवाण' में राजस्थानी काव्य के प्रिय अलंकार 'वैण सगाई" का सफल प्रयोग भी कई छन्दों में किया गया है।

राजस्थान में ढाढी कवियों ने नीसाणी और दूहा छन्दों को अधिक अपनाया है। इतिवृत्तात्मक वर्णन के लिये निसाणी, चौपाई और दूहा छन्द सर्वथा उपयुक्त रहते हैं। इसलिये 'वीरवाण' में भी नीसाणी और दूहों का प्रयोग किया गया है। कवि के शास्त्रीय अज्ञान अथवा प्रतिलिपि कर्ता के अज्ञान से कई छन्दों में मात्रा दोष भी वर्तमान है। काव्य के अन्त में एक गीत चितहिलोल है और यह काव्य कला का अनुपम उदाहरण है।

पद्य के साथ गद्य का प्रयोग कई राजस्थानी ग्रन्थों में मिलता है। राजस्थानी वार्ताओं और ख्यातो मे गद्य की प्रधानता होती है तथा पद्य का प्रयोग न्यून होता है। इसी प्रकार कुछ राजस्थानी काव्यो में कहीं-कहीं गद्य भी मिल जाता है। विषय के स्पष्टीकरण के लिये 'वीरवाण' में कही कही गद्य की कुछ पंक्तिया मिल जाती हैं। 'वीरवांण' में प्रयुक्त राजस्थानी गद्य पूर्ण परिमार्जित हैं और इसमें पद्य की तरह तुक मिलाने की प्रवत्ति भी दिखाई देती है।

'वीरवाण' का कर्ता स्व० पं० रामकरणजी आसोपा के लेखानुसार रामचन्द्र नहीं ज्ञात होता जैसा कि उन्होंने स्व० सम्पादित राजरूपक भूमिका में प्रकट किया है। 'वीरवांण' का कर्ता बादर अर्थात् बहादुर ढाढ़ी था। ढाढी भी हिन्दु नहीं वरन् मुसलमान ढ़ाढ़ी था जैसा कि हिन्दुओं के लिये किये गये उसके काफिर शब्द-प्रयोग से ज्ञात होता है। कवि के आश्रय दाता भी मुसलमान जोहिये थे और कवि ने अपने आश्रय दाता और इस्लाम धर्म के लिये बहुत ही आदर सूचक प्रयोग स्थान स्थान पर किये हैं।

वास्तव में 'वीरवाण' सम्बन्धित इतिहास के लिये एक आधारग्रन्थ है। 'वीरवांण' काव्य का कर्ता ढ़ाढ़ी बादर सम्बन्धित कई घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी, निष्पक्ष, उदार और काव्य-कला निपुण व्यक्ति ज्ञात होता है। ग्रन्थ की ऐतिहासिक और काव्यात्मक उपयोगिता समझ कर ही हमने अपनी नवीन खोज में प्राप्त तथा सम्बन्धित घटनाओं पर आधारित आढ़ा पाड़खान जी रो रूपक, गोगादेव जी रो, वीरमदेवजी री बात, चूण्डाजी री बात, गोगादेवजी री वात आदि और मुहणोत नैणसी का पूरा वक्तव्य परिशिष्ट में दिये हैं। साथ ही ग्रन्थ के परिशिष्ट में देवगढ़ से प्राप्त 'वीरवाण' की एक अन्य प्रति के पाठान्तर और काव्य-सम्बन्धी कठिन राजस्थानी शब्दों के हिन्दी अर्थ भी दे दिये हैं। वीरवाण की एक प्रति हमें श्री मागीलाल व्यास, जोधपुर से देखने को मिली किन्तु इसका पाठ नितान्त अशुद्ध होने से हम इसका उपयोग नही कर सके।

अन्त में मै "राजस्थान ओरिन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट" के संमान्य संचालक आदरणीय मुनि श्री जिन विजयजी महाराज के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूं जिन्होंने प्रस्तुत उत्कृष्ट काव्य के सम्पादन और प्रकाशन के लिये प्रेरणा दी है।

लक्ष्मी निवास काटेज,
बनी पार्क, जयपुर
श्रावणी तीज, सं० २०१४ वि०

लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत

ढाढी बादररो वणायो

वीरवांण

॥ श्री गणेशाय नम । श्री सारदाय नम ॥
॥ श्री मालाजी । श्री रामचन्द्राय नम ॥

अथ ग्रथ वीरवाण ढाढी बादररो वणायो लिषते ।
रावजी श्री सलषेजीरा कवरॉ च्यारारा परवाडा लिषते ।

दूहा

सुमत समापो सारदा, आपो उकती आप ।
कमधा जस बरनन करू, तुझ महर परताप ॥ १

समरू गणपत सरसती, पाण जोड लग पाय ।
गाउ हु सनपाणीया, विध विध सुजस बणाय ॥ २

सुणी जिती सारी कहू, लहू न भूठ लिगार ।
मानजंत जगमालरो, वीरम जुध विचार ॥ ३

राज समानो नगरमें, सोभत जैत सरीयाण ।
थान पेड वीरम थपे, जगजाहर घण जाण ॥ ४

मालदेजी जैतसींघजीरो वीरमदे जिसोघतजीरो राज-वरनन

नीसाणी

सुत च्यारूं सलपेमरा कुलमैं किरणाला ।
राजस वंका राठवड वरवीर वडाला ।।
साथ लियां दल सामठा वीरदाँ रुखवाला ।
भिड़िया भारत भीमसा दल पारथ वाळा ।।
देस दमु दीस दाविया कीदा धकचाळा ।
केवि धस गीर कंदरा वपसंक वड़ाळा ।। १

जैतसींघरो झगड़ो लिखंते

जैत चढ़े गुजरातकुं सामान मझाया ।
पमंग लिया संग पांचसै चड पुर चलाया ।
सामत चढ़िया सूरमा राडधरैं आया ।
चित उजल चोगानमैं तंवु तणवाया ।
अपैनंदैं मीलणका मनसोभा थाया ।। २

वीसैं विधविध वरजिया मत जावो भाई ।
देस दिपाया जैतकुं आ कुवद कमाई ।।
गोयल पेड गमाडीया उंणहुंत सवाई ।
धर जासी घर लुटसी कर जेज न काई ।। ३

वीसैं वरज्या नह रेया थट भेळा थाया ।
अपानंदा एकठा उठ डैरै आया ।
हुकमज दीयो हजूरियां लप दारू लाया ।
चळु करंता चूक ह्वी अरी काट उड़ाया ।
जैत कमंधज जेण दीन धर श्रोण धपाया ।
पमांरां धर पालटी धर जैतल पाया ।
गांवां अठचालीस सै राड़धरा आया ।। ४

दूहा

राडघरो कायम कीयो, नरनामी नप तंत ।
मेली रावळ मालनै, जवर वधाई जैत ॥ ५

नीसाणी

लगर लपु लार वैह दळ पार न पाई ।
मालवीयो बलगाव है जैचद वीजाई ॥
राज करै धूम रीतसो वध नीत सवाई ।
घर घर आणद है घणा थित मगल थाई ॥
मैहपत रावल मालरी प्रज फूला छाई ।
मडलीका ज्यु मालदे वका वरदाई ॥ ५

इण रीत रावल मालदेजी गुडै नगर राज करै जठा दिनां ममीपाणेसु रावल जैतमीजी इडर गुजरातनै चडीया । जाय गडघड उतरीया । जठै अपारै दोनु कोटडीया जाय राडरै पमारान आदमी सावनमु मारनै राडघरो लीनो तैरी रा सपूरण ।

मालदेजीरो ममो लिपतै

दूहा

भाया परधाना भडा, दळवळ अथग दुभाल ।
कीधो उद्दर कामती, मीण धर गवळ माल ॥ ६

रावल मालो राजवी, राज करै धुग रूप ।
वाग हरचदरा वहै, सागे मगर सरूप ॥ ७

वीरम भाई वाकडो, ज्यू वेटो जगमाल ।
रतन भाव न्यावा दुनी, साह उगरा माल ॥ ८

तबेलै मानह तणै पाणी पथा पमग ।
मारा रगरह सूरमा, वे अरावार उमग ॥ ९

हीरा दिरा मणीयर नीलो, दूजो नारी देस ।
घर घर व्यावे घोरीया, नदै नीठिग वेम ॥ १०

पड़ मांहि नाही पड़ै, घाट ईसै घोड़ांह ।
भड़ चढीया अत सोभ दै, ऐस आ घोड़ाह ॥ ११

नग धर मीणीय नीपजै, कोड़ीधर केकांण ।
मैहमंद लेवण मेलीयो, मरवण षान पठांण ॥ १२

सिणलागर सागर समै, भरीया नीर तळाव ।
किलमां आय डेरा किया, सोदागरां सुभाव ॥ १३

तीजणियां दिन तीजरै, सजे साज सिणगार ।
हीडे आई हीडवां, अपछररै उणियार ॥ १४

अरक तणो पण आथमण, मेह अंधारी रात ।
तीजणीयां लेगा तुरक, घोड़ां ऊपर घात ॥ १५

वोले बामण बाणियां, मालहुंत कह बात ।
तीज तणै मग रैंत दिन, सुत मम लेगा सात ॥ १६

जिण कारण मेले जगो, छाने हेरा च्यार ।
मांडळरी धर मेलीया, वालण वैर विचार ॥ १७

कंवरहुंत हेरु कहै, धुर सुण धणीयांह ।
माडळपुर मैहमंद घर, वैठी तीजणीयांह ॥ १८

मैहमॅदसारी डीकरी, गीदोलीरे साथ ।
मैह जीता आवै मुकर, जमैरातरी जात ॥ १९

कंवरजी जगमालजी मांडवैसु तीजणीयां लावण नै वा गींदोली लाया वो समो लिषंते

नीसांणी

कथ हेरुकी सुण कंवर कमरां कसवाणी ।
भड चंगा लीधा भला तग पैगां ताणी ॥

भुज पारथ ऋन भीम सा ऐहडा आपाणी ।
,पाव वाव पप राव सा अम पथा पाणी ॥
सुभटा वीसी सातमु चढीयो मालाणी ।
पूगा दिना दसमे प्रथम माडलगढ आणी ॥
कहियो मैं वदगी करा आगल उचराणी ।
डेरो कर वेरो दियो जगमाल मालाणी ॥
तीजणीया सव आवजो पूजण पीराणी ।
कल मैहमदरै इदरौ मेळो मडवाणी ॥
आय हुई सव एकठी कथ जेम कहाणी ।
वेलि वा पुकारिया जगमल मालाणी ॥
ऐ तीजणीया एकठी आई आपाणी ।
सजो सुभटा सूरमा किम जेज कराणी ॥
आ कहता भड ऊठीया वीरा दवी राणी ।
ज्यु मृग डार ज ऊपरै चीता मलफाणी ॥
तुरगा चाढी तीजण्या हुव कुक हुवाणी ।
सापूत वेटी साहरी जगमालै जाणी ॥
गीदोली करसु ग्रहे हय पीठी चढाणी ।
लेगो ज्युही लावीयो जगमाल मालाणी ॥
चावळ कमधा चाढीया जसडा कव जाणी ।
कूक गई मैहमदके जग सारै जाणी ।
डळ मीणीयर कर ऊजळो तीजणीया आणी ॥ ६

दूहा

दी छाने जगमालनै, मैंमदमा फरमाम ।
दीनी गींदोली देऊ, जूनागढरो वास ॥ २०

हु मैंमदसा वेगडो, गोरीसाह दुभाल ।
॥ २१

....।
राज गीदोली राषीयां, मरजासो माहाराज ॥ २२

जगो महा भड़ जोरवर, भीरड़ कोट कुळभांण।
महमद गोरी साहरी, कंमध न मानी कांण ॥ २३

बैर सताबी बालीयो, सत्रवां उर साल ।
जिणरै उछबरो जबर, मेळो रचियो माल ॥ २४

मैलै रावल मालरै, आया इसड़ा पीर ।
जांणक चौसठ जोगणी संग लै बावन वीर ॥ २५

आया कितायक अवलिया, बड़ा बड़ा दरवेस ।
पाचांही पडवां जिसा, उमियां सेत महेस ॥ २६

जैसळ नै तोली जिसा, सबै आवीया साथ ।
आइ तषत बैठाविया, निकलंक हुआ सुनाथ ॥ २७

दरसण आया देवता, सिध साधक ले साथ ।
चौरासी पीरा सहत, नवही आया नाथ ॥ २८

राणी रूपादे जिसि, सापूत जिका सकत ।
धारु जिसडा उण घरे, भव भव तणा भगत ॥ २९

मेलै रावळ मालरै, रचीयौ सतजुग राह ।
वेरो देवण भीरड़ गढ, चढ़ आया पतसाह ॥ ३०

नीसांणी

दिलीसु चढी आया दुझल गोरी सुलताणा ।
माडलगढ मैहमद चढ, षांमद षुरसाणा ॥
सांतु लोपी सायरा मिलपा जजलांणा ।
इण विध मैहमंद आवीयो सझ दल घमसाणा ॥

हजरत वेहु भेळा हुआ पूरव पिछमाणा।
हे वेहु घर मोटा वोहत छोटा रहमाणा ॥
पोज गमावण पूनीया जोडै जमराणा।
रीम करै ज्या रोळवै वोळै महराणा ॥
कवण पून जारो करै हीदु तुरकाणा।
जलल करी जगमाल दे करडी कमराणा ॥
ओरत आणी एकरी एकण धी आणा।
सझ वेहु आया पातसा घुरता नीसाणा ॥
पेड तणा वला पोसणा पलटै लक पाणा।
आरभ कीधा ऐहडा सज वेहु सुरताणा ॥
पचिया दोळा पेडरै तवू तूरकाणा।
घेरो लागो भीरडगढ डेरा दरसाणा ॥ ७

रावजी मालदेजीरो पैलो झगडो लिपते

दूहा

घेरो लागो भीरडगढ, उडण लागो सोर।
छूटण लागी नाळीया, बोलण लागा मोर ॥ ३१

सतगुरसु कहियो वचन, विदा हुवता वाण।
भिलै नही गढ भीरडरो, मलीनाथरो माण ॥ ३२

निसाणी

इण घडा असुराणरी चित रोस चढाया।
जागवीया अह रावकै जमराव पिजाया ॥
धोम झलाहळ धेपमैं उठ वाहर आया।
मुछ वरै कर मालदे सझ कवर सवाया ॥
जरद कमै भड जोरवर अग गेस न माया।
कमधज उठियो धूप कर कैकाण चमाया ॥

असुर दिली दल ऊपरां अस एम उठाया ।
पाग चमंकी वीज ज्यू घण घाव लगाया ।।
केता रुंड मुड काट कर रिण जंग मचाया ।
असुर गया रिण ओसके माले डकराया ।।
कीलम अगावा त्यार कर दूजै दिन आया ।। ८

रावलजी मालदेजीरो दूजो झगड़ो

भुरजां भुरजा भीरड़ गढ वड़ नाळ गड़की ।
सोर धुंवारिण घोरसु धर अवर ढकी ।।
आयर वीज अचीतकी असमान कड़की ।
भुप तुराटां भेळीया जुध कारण जकी ।।
आलम आलम अपीयो धज नेज फरकी ।
रजवट वंका राठवड़ जुटा पळ जकी ।।
म्लेछ तड़फड़ मारका गीधाण गहकी ।
पत्र भरे रत पूरिया वीराणव भकी ।।
जैं जैं जपै जोगणी आसीस अछकी ।
अपछर आय उतावळी हूरां वर तकी ।।
आसुर दळगा ओसके यण घावां छकी ।
सुणियां वायक पातसा सेना वेहुं सकी ।। ९

दूहा

दळ मेले गोरी दुभल, तीजै झगड़ै तैड़ ।
मारां रावळ मालनै, पोस लेवां गढ पेड़ ।। ३३

साहां वायक एम सुण, दे डाढी पर हत्थ ।
अला अला उचारकै, दळ मेले समरत्थ ।। ३४

रावल मालदेजीरो तीजो झगडो

नीसाणी

चढ दळ आया पेड पर हैदळ पुरसाणी ।
काली दामण कुजरा पाहाड प्रमाणी ॥
हीस हुवै ऐराकीया पोह कीध पलाणी ।
चढीया धुमै वाजता जग भिडीया जाणी ॥
रावळ माला माहा वळी आगळ हिंदवाणी ।
सादुलो किम सासवै सिरगाळ सहाणी ॥
असमर ले कर ऊठीया जम रुठा जाणी ।
आप दरगह आवीया आयस फुरमाणी ॥
वीडगा चढीया वीरवर सुण रावल वाणी ।
मीर छडाला मारीया पग वाढ पीगाणी ॥
केता अरीयण काटीया धर मोण वपाणी ।
तेरे तुगा भाजीया माले सलपाणी ॥
दीन धोळे दळ दाटीया चाढे उर वाणी ।
मीर गजा घड मागीया केता मुगलाणी ॥
माले मिणीयर देसमै पप चाढचो पाणी ।
मालन भागा मुगळा सावत मलपाणी ॥ १०

दूहा

साह दोऊ मन मकीया, फोज विदा की फेर ।
भिळे नही गढ भीन्डरो, माल तणो गिरमेर ॥ ३५

गाघै वाघै गाडग, भुज भेना भुरभार ।
चोथे जुध जुडवा चमु, लगर नीधा लार ॥ ३६

गाघो वागो वीरवर, उवा वेह अवीह ।
जुध जुटा उण विघ जवर, नाहर छुटा नीह ॥ ३७

राती वामो दैण रच, मन जुध चोथे मान्न ।
वीरम घड़सी वरजीया, माधैनें जगमाल ॥　　३८

वीरम घड़सी वीरवर, पाल माल परभात ।
अव या अरीया उपरा, रचमां जुध अधरात ॥　　३६

रावळजी वीरमदेजी कँवरजी जगमालजी रावळजी घड़सीजी भाटी जवाई जेसलमेरीया नैं सोलपी माधोसिंघजी प्रधान वीरमदेजीरा झगड़ा लिपते ।

नीसांणी

अजवै ऊपर ऊरीयां घड़सी रिण घोड़ा ।
एकण घाव उतारीया जगम वड जोड़ा ॥
पाहड़पान पछाडियो विजड़ां दुजोड़ा ।
तेजलपां जुध तीसरै चिमनो चोथोड़ा ॥
पीरपान रिण पंचमै सारंग छटोडा ।
इकां पट ही पूटगा घर ढहगा घोड़ा ॥
जद आयो जैतकर जस पाट भलोड़ा ।
माल वधांवां मोतीयां भर थाळ वडोड़ा ॥　　११

घड़सी वाई गरजके वागेपां ऊपर ।
गुरज वमोडी वागड़े घड़सीके धु पर ॥
घोड़ा सहतो गुड़ गयो लुटीयो धरती पर ।
जांण कवूतर छुट गयो हातांवाजीगर ॥　　१२

जितै पाग जगमालदे पछटी वागे पर ।
वगतर सहतो वोटकै निरलंग कियो नर ॥
कीरमिर वाही करगसुं दुजै इका पर ।
जाण चमंकी वीजळी करकाळै डंवर ॥　　१३

राघै फिर पग रोपीया इकै अड पाई ।
रावै ऊपर रुंक रस वीरमदे वाई ॥

घिरतै फिरतै कूदतै ठठर तै ठाई ।
ठाई ठठर ठोर भुज राघेपा वाई ॥
वाई जीतरै वीरमै कर जोर कलाई ।
वीडग तणा दोय टूक हुय राघा भागाई ॥
रचियो भारथ माधडै समसेर चलाई ।
जाण मिरगा डार पर चिता मलफाई ॥
राघो वाघो कट पडै रिण माझ सिपाई ।
वीरम घडसी माधडै जगै वरदाई ॥
पतसाहारै सामनै समसैर चलाई ।
उरस छिवता आवीया भाटी अरु भाई ।
माला वधाया मोतीया कर कोड किनाई ॥ ३९

दूहा

राळा वोळै रातरा, पैले वपत पवार ।
इका घडसी मारीया, वैया आगळ च्यार ॥ ४०

भाटी आगळ भैचकै, नाठा जवन निराठ ।
घडसीरै जुध जोरमै, जवरी वागी झाट ॥ ४१

मैंमदसा नै मालरा, भिडीया वेहु भीच ।
घडसी डोळी घालीयो, वागो पाडा वीच ॥ ४२

चढीया डोळी च्यार मैं, घडसी साथे घाय ।
उतै जवन कट आठसै, पापा दिया पपाय ॥ ४३

रावळजी मालदेजीरै पातसारै इणागी लडाई थयी । भाटी घडसीजी इका छव मारीया । पछै राघो और वागो दोनुं ही ईका आपरी फोजमु लडाई करी । भाटी घडसीजी कवरजी जगमालजी रावळजी वीरमदेजी मोरपी । माधोसिंघजी प्रधान वीरमदेजीरा आ च्यारा ही राघे वाघेरी फोजसुं लडाई करी और वाघो जगमालजी हाथसु मारीजीयो । इण रीत जुध हुवो ।

दूहा

राघो वागो रिण रैयो, मक्या साह मन सोय ।
धीरज दीनी उठ घर, दूजा ईका दोय ॥ ४४

मंडीया नंड़ा मोरचा, तुरक लगावै ताय ।
मालै इम कहियो मुपां, ए काइ दियै उठाय ॥ ४५

जगै अरज कीधी जरां, अभंग मालनै आय ।
कुंपो है अस कवलीयो, अव दू फोज उठाय ॥ ४६

मालै इम कहियो मुपां, मुघड़ वात दिल सौज ।
इण अस चढ तू एकलो, फेरे किण विध फोज ॥ ४७

नीसांणी

आलण कुंपो अथ वहै जाता जैसांणै ।
रिण मायां भूतां रची, तंवर तेजल आंणै ॥
आलणकुं तेजल कयो मासी सुत जांणै ।
मै रिणमै अवगत गया वि भोजन पांणै ॥
आलण वेटी आपरी तू रिणमै आंणै ।
कंवर प्रणावो कुंपकुं जग सारो जाणै ॥
वि चंवरी लागां धुंवों सुरलोक पयांणै ।
कुंपैकुं आलणी कही अगल मुप आणै ॥
कमधज परणी कूपसीं आलण धि आंणै ।
दीदो भूतां दायजो कवलो केकांणै ॥
फतेजीत वाजो दियो पांडो पुरमांणे ।
अकथ कुंपैरी इसी जग मालो जांणै ।
वीरांरै वचनां तणो आयो अवसांणै ॥ १५

दूहा

अभंग नगारो आपीयो, अरि गंज पाग उचेट ।
कुंपानै अस कवलीयो, भूतां कीदो भेट ॥ ४८

वीरां जद दीनो वचन, हतलेवो छुटवार ।
याद करो जद आपरै, हाजर वीस हजार ॥ ४९

कुप कवर विदा कियो, पाण जोड कर प्रीत ।
दीनो भूता दायजो, कुळमे ग्पण रीत ॥ ५०

भीरड कोट दळ भेळसी, हणसी हाता हुत ।
आडा किण दिन आवसी, भीडज कवलीयो भूत ॥ ५१

कुपादै अस कवलीयो, मुपसु कहियो माल ।
आलण वचना याद कर, जुडसी रिण जगमाल ॥ ५२

कुपे दीनो कवलीयो, जद लीनो जगमाल ।
रातीवासो रातरा, देवण सज्यो दुभाल ॥ ५३

अभग नगारै वव पड, अरिगज पाग उठाय ।
कवलै आगळ धूप कर, दीयो पागडै पाय ॥ ५४

कमधज चढीयो कवलीये, वध्यो गेस मन माय ।
दळ फिरिया दरीयाव ज्यू, ओळा दोळा आय ॥ ५५

मुजरो कर जगमालसु, भाप्यो इण विध भूत ।
कहो जको कारज करा, राज तणा रजपूत ॥ ५६

जगै हुकुम दे झोकी [या], किलमा पर कैकाण ।
वीस सहस लगि वहण, भूतारी केवाण ॥ ५७

मीराग माथ उडै, मुप वक मारो मार ।
मालावत जगमालगी, वहन लगी तरवार ॥ ५८

वग्ण साहा घड वीनणी, मझ आई सिणगार ।
जिणनै परणी जण जगो, कसीयो राजकँवार ॥ ५६

जवर भूत लै जाणीया, दुलही फोज दुभाल ।
जुध हथलेवो जोडियो, मालावत जगमाल ॥ ६०

निसांणी

भातीजो वीरम तणो मालारो बेटो ।
जुध चढीयो जगमाल दे कर टोप लपेटो ॥
वगतर कुंठा वीडीया धुब पोरस धेटो ।
सिरपर वाध्यो सेहरो जस विरदा जेटो ॥
चवरी रिण कामण चमु फेरे दे फेटो ।
भुळलीयां संग जानीया हतलेवे पेटो ॥
सावो अध रत साजीया भारतमें भेटो ।
भापां भर कवलीयो रुकां वळ रेटो ।
जिण विध भेटे चालै जो समै भूतावळ भेटो ॥
कुण जाणै वावै कवण पावे नह पेटो ॥
पाडे दळ पतसाहरा पीमे कुण पेटो ॥ १६

वटका उडगा वगतरां भटका कर भाड़ै ।
पतसाहां दळ पाधरै राठौड़ रमाडै ॥
घोड़ा आगळ गैवका बाजा बजवाड़ै ।
तेग बहै भूतां तणी राठौड़ अगाड़ै ॥
मारै दळ मुगलांणका भाटां षग भाड़ै ।
धड़ लुटता दीसै धरा मसतक भमाड़ै ॥
पग पग नैजा पाडीया पग पग ढल पाड़ै ।
अबकै ओ मोटो परब महमंद लीलाड़ै ॥
गीदोली बांधी गळै जगमाल अनाड़ै ।
जकौ न देवै जीवतो कुण मार ले राड़ै ॥ १७

मैहमंद मांडळ पातसा गुजरात धरांरा ।
एलै फौजां अवीया लपु अठलारा ॥
दीदो घेरो दोळीया वीरम पुरारा ।
मैवै रावळ मालदे ओपण अवतारा ॥

परतक पीर पचीस मो चोवीस सिरारा ।
कया विगडै उसका कहो काम तकरारा ।।
केस वळे मुप केसरी कुण लेवणहारा ।
मिण लेवण वासप मुपा कर कोण पसारा ।।
गीदोली जगमाल घर नह देवणहारा ।
मैमद गोगी घर गया कर कुच मवारा ।।
माल वधाया मोतीया भर थाळ सोनारा ।। १८

दूहा

तीन लाप जुध मैत दिन, घोरा जवन चलाय ।
जुध जीत्यो जगमालदे, लीधो माल वधाय ।। ६१
पग पग नेजा पाडीया, पग पग पाटी ढाल ।
वीवी वुजै पानने जोध किता जगमाल ।। ६२

गीदोलीरी लडाईमें झगडा तीन तो रावळ मालदेजी आपरै लोरसु एकला किया । झगडो चोथो भाटी घडसी रावळजी वीरमदेजी कवर जगमालजी सोलपी माधोसिघजी । पाचमो झगडो कवर जगमालसिघजी एकला भूतारे जोरसें कीइया । पाचा झगडामें तीन लाप आदमी पत पडीया । अठी राठोडारा आदमी लाप छा जामासुं आदमी हजार पचीस पेत पडीया । माहा-गाई चक्र जुध हुवो । जोईया राठोडा कनै आया जिणमुं वरस पाच पैला ओ झगडो हुवो छो । हू वादर ढाढी जोयारो ही । सो मैं पूछनै मुणी जिसी हगीगतसुं वणावट करी । मारी उक्त प्रमाण रावळजी जगमालजी वा कवरजी रिड-मलजीर कैणसु जस वणाय नै सुणायो । ओ झगडो हुवा पछै वरस वीससूं ओ ग्रथ वणाया । जोया वरस पाच अठ राठोडा कनै रया । जितै हु जोया साथै हो सो वात सारीसु वाकब हुवो और वीरमदेजी मधुरे आपसमे फूट पडी । झगडो हुयनै मारीजिया । धीरदेजो गोगादे की ताई जिती वात सारीसु मारै आपीया आगे हुई । मैं जोइयारै नगारै माथै हो । हेत वैर सागे निजरा देप्यो । पछै धीरदेजी काम आया । जा पछै तेजमाल जोय मनै कैयो कै वादर सिरदार मारीजिया जिण तरै हुई थे देवी जिसी सारी हगीगत वरण करो । जरा जोइया राठोडा कन आया । धीरदेजो मारीजिया जिता दिना मैं जो जो वात

चा झगड़ो हुवो जिसो वरणो। तिणरी हाजरी जोयांनै साही वाण मैं तेजलरे आगै दीनी। राठोडांनै सेतरावै मंडोरनेंतुमै चुडेजी देवराजजीनै हाजरी दीनी। पछै चुडेजी मडोवर लीवी जिणरी हगीगत मनै कही। जिण रीत जस वणाय हाजरी दीवी। जा पछै नगर जाय जगमालजीनै वा कवर रिडमलजीनै हाजरी दीनी। जद पैला झगड़ा हुवा जकांसुं हु वाकब हो। फेर कितीक हगीगत वाँ कही जिण मुजब पछे वणाय ग्रन्थरै आदमै वरण दीनी छै। हु तै झगड़ै मधु वीरमजीरै वात हुई जकण ठोड मै कै दीनो छे नला सला नीवडै सो जाणें। अलामै निजारां देखी वा कांना गुणी जिण मुजब सची-सची वरणन करी छे। सो मारे ग्रन्थमें भूल चूक हुवे तो कवी लोक सुधार लेसी।

दूहा

उकत समापो इसरी, माता सुण महमाय।
गाऊं हुं लुणीयाणीयां, सांचो सुजस वणाय॥ ६३

दलो मधू देपाळ जसू, जैत देवति जमाल।
सुत सातू लुणरावरा, पतसाहां उर साल॥ ६४

जकां दिनों ए जोइया, लावे दस दिस लूट।
पगधारां ऊपर पिमैं, तारां जिम ही तूट॥ ६५

कोड च्यार रोकड कीमक, असरपीयांरां ऊंट।
साप्रत मैमंदसाहरा, लायो मादव लूट॥ ६६

दलो मधू देपाळ दे, सिध गया सब जाण।
तुटी मैमदसु त दिन, छूटी धर साहि वाण॥ ६७

मैमंद धरि सारो समन, जद यु लिष्या जवाव।
सिधां लेसुं सात ही, द्रवरैं वदलै दाव॥ ६८

सिध धणी कद संकीया, मैमदरा सुण वोल।
दो मोहरां पाछी दला, तिण दिन रहसी तोल॥ ६९

जोइयां वदळै जावसी, सहर समेती संध।
दलै समझायो दुझल, मानि न मदू मदंध॥ ७०

तुटि सिवमु ईण तरै, जोइया गहियो जोर ।
सिव तणी धर सोवनी, मधु उडाया मोर ॥ ७१

नीसाणी

जद झडपी सिव जोइया सातू चढ सारी ।
रयत सारी सिंधरी दरबार पुकारी ॥
जग मचायो जोइया मुणीयो जग सारी ।
जिण पर जीवणपानने तद कीध तयारी ।
मद्दु जीवण मारका भिडिया रिण भारी ॥ १६

सार भला भल साझीया भाला भळकाया ।
सिर तुटा फुटा सुघट रत पाल चलाया ॥
माद्दु वाहादर मारकै पळ रिण केपाया ।
घट पडीया घट घायला रिण जग रचाया ॥
जीवण मारै जैतका नमक वजाया ।
लुटै सिव जग जीत कर इळ मीणीयर आया ॥ २०

दूहा

मैमद नै जगमालरै, जबर वैर ओ जाण ।
आया सरणै जोइया, सिव छोडे साहिवाण ॥ ७२

मलीनाथ वदु मुदै, वीरम करै सु वात ।
अतहपुर वीरम ओया, मागळीयाणी हात ॥ ७३

नीसाणी

माल तणै घर वार मझ वीरम वरदाई ।
सारो वीरमरो सरव थित मगळ थाई ॥
मिलिया वीरम जोया भेळप दरसाई ।
आया डोढी ऊपरै सामल साराई ॥

मांगलियाणीसु दलो भलहो धूम भाई।
सात पोंमापा सातसो मोहरा गुजराई ॥
वेस किसुंमां सुवणै भूपा सिपवाई।
आया सरणै आपरै ओडी उतराई ॥
दलै कयो इण देसमै बैसां मै वाई।
वीरमरा मै सांपरत सह कोय सिपाई ॥
अरज करो थे आपसु मो जाणं भाई।
रावल सरणै रापसी वंको वरदाई ॥ २१

दूहा

मांगलीयाणी मोढ मन, पायो जोयो पीर।
दलों, मदु, देपालदे, सांतु वीर सधीर ॥ ७४

राणीजीरी अरज

मारो काको जैतमल, आप तणी की आस।
मांनै तो जगमालरो, मुळ नही वैसास ॥ ७५

दस हजार जोया दुभल, परची घररी पाय।
आडा आसी आपरै, अवपी विरीयां माय ॥ ७६

मांगलीयाणी महलरी, धीर म मानी वात।
जरां ढवाया जोइया, सुप पायो सव साथ ॥ ७७

मुजरो रावल मालसुं, वीरम दियो कराय।
माल कैयो इण मुलकमै, बसो षान थे आय ॥ ७८

दलो रहै दरवारमै, जोयो आठूं जाम।
जंगा मभ भिडीयां जवन, काढै मोटा कांम ॥ ७९

तलवाडै थाणौ तठै, पमंग रहै सो पांच।
माल धणी घर मायनै, आवण दिये न आंच ॥ ८०

वदडै वारा झूपडा, कर पेती विणपार ।
वीर[म]देरै हुकुमसु, हालै दसु हजार ॥ ८१

नीसाणी

सिंध दिली सुरताणरी फोजा चढ आई ।
सापो दलो जाइयो भड सातो भाई ॥
वीरम वोल्यो वीरवर वको वरदाई ।
दू माथो नह दू दलो वर घर मिर जाई ॥
एण जवानी ऊपरा कमरा कसवाई ।
वीडगा चढीया वीरवर समसेर समाई ॥
केता दुसमण काट कर फोजाँ फिरवाई ।
मीर केइ रिण मारीया वीरम वरदाई ॥
आइ न जोया ऊपरै तिल एक तवाई ॥ २२

दूहा

वीरम मालै वीरवर, अरिअण दिया उठाय ।
सरव फोज पतसाहरी, पाछी गी पिछताय ॥ ८२

वरस किताईक वीतिया, जोइया रहिया जाय ।
कीयो ठाण अस काळमी, वेटी भई वलाय ॥ ८३

जोइया अस लाया जकी, जिणरो नाम जवाद ।
प्रगटी उणरा पेटरी, साकुर नाम समाद ॥ ८४

तिका हुई व्रस तीनमै, वसुधा हुवा वपाण ।
मुडा आगळ मालरै, किणीयक कीधी आण ॥ ८५

मुडा आगळ मालरै, सो आणी वरहास ।
कै पावुरै कालमी कै, सुरज रै सपतास ॥ ८६

मलीनाथ मागी मुपा, साकुर मोल समाध ।
जका न दीधी जोइया उणसु वधी उपाध ॥ ८७

दस हजार रिपीया देऊ, पैग देऊ दस पोल ।
आध देऊ सिणली अपी, मदु उरी दे मोल ।। ८८

दले घणोही दापीयो, मदु परी दे मोल ।
मदु न जांणै मोट मन, राजवीयारा तोल ।। ८९

जका वात जगमालरै, कीधी कीणीयक कांन ।
आग वलंती ऊपरां, दियो मुराड़ो दान ।। ९०

ए वीरमरा आवगा, जौया रहे जरूर ।
आंपांनै न गिणै अवे, मन छाया मगरूर ।। ९१

सोरठो

मारै लैसुं माल, साकुर पण लेसु सरव ।
जोयां पर जगमाल, रचै चूक उण रातरो ।। ९२

दूहा

मालणनै नितरी मोहर, दलो दिरातो दान ।
चूक तणी चरचा चली, आई मालण कांन ।। ९३

जद उण मालण जाणीयो, दले दियो वहु दान ।
सीलूं उंणरो सीलणो, कथ आ घालू कान ।। ९४

डिगती डिगती डोकरी, पूगी दलै पास ।
दला चूक तो पर दुझल, नास सके तो नास ।। ९५

तलवाडै थाणो तठै, सोवै वंदव सात ।
वीरा थां पर बाजसी, रुंक झड़ी अध रात ।। ९६

नीसांणी

कोट महेवा छंडीया सुध ले साही वांणा ।
दलै पान समाध चढ झांकी उपरांणा ।।
जांण लंका गढ उपरां हनुमान कुदांणा ।
सूता वंधव सातकुं जो सैल जगाणां ।। २३

दूहा

दलै कबीला देसनै, बहिर ज कीया वेग ।
साथे बदव सात ही, तिके उरसरी तेग ।। ९७

पेड मिलणनै आवीयो, वीरमसु अवरात ।
चौडे पोली चूकरी, वीरम आगळ बात ।। ९८

मदू न दीनी मोलमैं, उणसु वधी उपाध ।
वीरमनै दीवी वीडग, सागे जका समाध ।। ९९

वीरमरै उणहीज वपत, पमग हुवा पलाण ।
दलै साथ चढीयो दुभल, जोवण धर साहिवाण ।। १००

कुसले पेमे काढीया, जोइयाने वण जाण ।
जोइया पर वीरम जबर, रोकीया अवमाण ।। १०१

दलो पेड पूगो दुभल, हमैं न आवैं हात ।
जद धिकीयो जगमालदे, भिडवा कज भारात ।। १०२

नीसाणी

राप्या सरणै राव वड जग साप जपतै ।
माझी वैदळ भारका मन भार भारमतै ।।
जगड पिजाया जोइया जमराज विरतै ।
सामा वीरम साळल्या असमान छिवतै ।। २४

वरदायी वीरम कमध जुडीया जुध जगा ।
सभ दोऊ दळ साफला कर तेगा नगा ।।
वीरम मुडै न वीरवर जावै नह जगा ।
एकणजोया वास तै हुय सेन विरगा ।
माल विछोटै माझीया कीधा मन चगा ।। २५

जद धिकीयो जगमाल मन रोस न मावै ।
वीरम काज विगाडियो, मो नाहि सुहावै ।।

ओ अवपांणो याद कर किरणाळ कहावै ।
परत कहै कण पर दलो दोय तेग न मावै ।।
एकण घर दोय राजवी वकवाद वधावै ।
इण घर रहणो आपरो थिर नांही थावै ।। २६

वीरम मालो विछड़े भड़ दोनुं भाई ।
वीर भरत ज्यूं राम विन वसीयो वन मांई ।।
जुध कर लीनो जोइयां इहां आंच न आई ।
साज मंडाया साकुरा वीरम वरदाई ।।
पण लीनो जल पीणरो माला घर मांई ।
नर चढ़ीयो पाटण नवी की जैज न काई ।। २७

दूहा

माळे कियो मनावणो, मांगलीयांणी तेड़ ।
आ धर वीरम आपरी पित वापोती पेड़ ।। १०३

मालक यो सुप सातमों, पोह वीरम परताप ।
जोया पोहचावै ज दिनां आजे वेगा आप ।। १०४

नीसाणी

वीरम धीरप मालनै चढ पुर चलाया ।
साथ लिया दळ सांवठा थळवटी आया ।।
कमधज भूपा केहरी अत क्रोध अघाया ।
गहलोतां ऊपर गरज रचित रोस चढाया ।।
पडिया पैगां षेडसुं अण चित्या आया ।
भड असायच भोमीयां सज सुर सवाया ।।
पळ भप पाया पळचरां अछरां वर पाया ।
सूरा कट पड़ीयां समर गुण जोगण गाया ।।

कूट असायच काढीया पग वाड पीराया ।
कमध वतीमु गावसै सेत्रावा पाया ।
सेवै वीरम सधू बड थिर थानक थाया ॥ २८

दूहा

देवराज जैसिघदे, विजै सहत वरवीर ।
सैत्रावै रापै सधर, कवर तीर कठीर ॥ १०५

नीमाणी

जोइया पोहचावण ज दिन उमग मन आणी ।
देपण भाडगनेर दिस पोह कीध पलाणी ॥
कुडल वीरमदे कमध परणे भठीयाणी ।
नर गोगादे नेमीयो जग साप जपाणी ॥ २९

रचे हगामा राग रग रिण तुर रूडाया ।
दान हजारा दरब दै वध रीत सवाया ॥
इम जोईया घर आवीया भूपत मन भाया ।
उरड मोतीया थाळ भर वीरम वधवाया ।
कर उछब घर घर किता गुण मगळ गाया ॥ ३०

दूहा

पाना फूनामे प्रकट, दलो पुगावै देस ।
आयो वीरम आपरै, नाहर थाहर नेस ॥ १०६

नीमाणी

वीरम कुरगा वळवै कंकाण कुदावै ।
जका पटक जगमालरे मनमें नही मावै ॥
वीरम भारत वाटो आगमणी न आवै ।
दलै गीज नमाद दी नमार नगावै ॥

वीरमसुं जुध वाजकै कुण कुसळै जावै ।
दळ वळसुं जगमालदे पोह वाज न पावै ॥
डेरा समीयांएै दीया वीरम चेतावै ।
मेळ दिलीसु मेलीयो तुरकां तेडावै ॥
चेतवीयोड़ो सिह थळ हात न आवै ।
वीरम जिसड़ा वीरवर ठहके मठ गावै ॥ ३१

नगर धणी लिप नीतसुं पठ अपर पांनै ।
माल कहै वैमारका मुझ वात न मानै ॥
जोथ करै जगमालदे छळ घातां छानै ।
मेळ दिलीसु मेलीयो तेड़ै कां तुरकांनै ॥
वीरम तोसु वाजसो करसी धर कानै ।
काढ कवीला छांन है चढ़ वीरम छानै ॥
जाय कवीला जांगळु घोड़ा घोडाने ।
रेवंत मांण करावरी कर लीधी कानै ॥
जांण सीचांणे झड़फीया हद ठाळ हुलानै ॥ ३२

लीधा अस फिर लाडणु वीरम वीरथे ।
आय पोहता डांवरै सव मोयल सथे ॥
वीरमको डंड पकड़ीयो भल तरगस भथे ।
चाढ चिमंठी चौट दै असवार उलथे ॥
क्या निसांणी तीरदी मीरजादा कथे ।
जांण कबुतर छुट गया हुव लथो वथे ॥ ३३

ऊंटां तीसां ऊपरै असरपीयां आवै ।
सो मेली पतसाहके जोगणपुर जावै ॥
पैसकसी पतसाहरै पतसाह पुगावै ।
मिलीया वीरम मारगां अस लीधां आवै ॥
सव मोहरां पतसाहरी लुटे लीवरावै ।
सांमल हुय सारा सुभट मीया फरमावै ॥

ओ धन वीरम आपरै घरमै नह मावै ।
वीरम औ भप वाघरो पोह केम पडावै ॥ ३४

मडोवरगा नारका मिल मुगला मीया ।
वासै चाढी वाहरा ढोला पड ध्रीहा ॥
तीन सहस चढीया तरा अस लारै दीया ।
जाण न पावै जीवता असरपीया लीया ॥ ३५

मोकळ कला भारभल पुत्रे जिण जाया ।
वीरम वका वीरवर उदै घर व्याया ॥
इण कारण पडीया अठे जगलपुर आया ।
सामत सारा सापला अत वेढ अघाया ॥ ३६

दूहा

उदाउ सहर आवीया, कुतमदीन पतसाह ।
पत्रवट पेत वहारजे, रजवट हदा राह ॥ १०७

नीसाणी

उदलकु पतसाहजी ए हुकम अपदा ।
कमधज आद अनादसै पूनी मुझ हदा ॥
लीया पजाना साहदा तुझ नाहि जरदा ।
उदा गुनैगार तु पतसाहा हदा ॥ ३७

साह तणा दल मामठा जगलपुर आया ।
जुजाउ पतसाहरा नीसाण वजाया ॥
सहर भिल्यो जद सता मिल लूटी माया ।
वीरम पातर सापला सिर कीध पराया ॥
वहादर उदै कोध कर रिणताल रचाया ।
लड पतसाहा सापना भुजपाण दिपाया ॥ ३८

आ काढे ओठी कोटसु भीम जेहा भाई ।
सला दिराई सांषला जोइयां घर जाई ।।
ध्रीगे ध्रोगे ढोलको साहि वाण सुणाई ।
दस हजार चढीया दुझल मिल छव ही भाई ।। ३६

चढ घोडां भड़ चालीया रज गैण ढकाया ।
मिलीया भारत जांगळु अध रतरा आया ।।
मीर केइ रिण मारीया मदु मन चाया ।
काट कटकां काढ़ीया षळ षेग पपाया ।।
हुर अपछर हरष अत सूरां वर पाया ।
ग्रीधण साकण जोगणी पळ पूरा षाया ।।
वीरम छोडे जांगलु साहीयांण सिधाया ।
सज जुध जोया साषला वीरम वचवाया ।।
जद पीछा चढ पातसा धर अपणी धाया ।
दलजी कोसां दोय तक सामे ले आया ।।
सजे उमंग साहिवाणमैं वीरम वधवाया ।
दीध वधाई राइकां जद गोगा जाया ।।
एक महीनो आठ दिन थठ गोठा थाया ।
वैरो लप रहवास कुदलजी दरघाया ।।
बारा गाम ज बगसीया चित वीरम चाया ।
डांण वले उचका दिया आधा अपणाया ।
धाडै धन धुर माझीया मांझी षैमाया ।।
वीरमकु देवण वळे लष वेरै लाया ।। ४०

दूहा

लष वैरे पैदा सलष, सषरी आवै साष ।
सापांरा उपजै सदा, लेषे रिपीया लाष ।। १०८

पूजै हरीयल पीरकु. जोइया भड सब साथ ।
वीरमरो देषै वदन, जीवै जोया जात ।। १०९

जलम्या तीन जवादरै, जके जोड सपतास ।
पमगा सिरै पडाहीयो, हीरा लोही हुवास ।। ११०

हैसु चढे पडाहीये, मादु चढै जवाद ।
हीरा ले धीरो चढै, वीरम चढै समाध ।। १११

पैलै ठाण समाधरै, जलमी सीचाणीह ।
वीरम गोगेने दीवी, जग सारै जाणीह ।। ११२

मालावत जगमालरै, उरमै पठक अपार ।
जद केइ काढया आदमी, वीरम कनै विचार ।। ११३

ऐ आया वीरम कनै, रचै सला दिन रात ।
जोयासु जुध जुडणरी, वीरम आगळ वात ।। ११४

सो पग वगा सूरमा, वीरमरा जुधवार ।
मुडवै नह पाछा मरद, जुडीया रिण जोधार ।। ११५

पीड लीधा सुरापणो, विध इण वनो उजीर ।
जामै छल धणीया जिसा, आगे इसा उजीर ।। ११६

वीर चढै नित वीरमा, धर लेवण चित धाव ।
घण मोडण जोया घडा, वन रूठो वनराव ।। ११७

नीमाणी

दीठी वीरम हेक दिन पीनी सर पाणी ।
वीरमरै सव साढीया निजरा गुजराणी ।।
वीरम चित विटाळिया ऊधी मत आणी ।
सात हजारु साढीया दिन हेक दगाणी ।।
आयर जिणरी ओठीया कल कुकराणी ।।
दस हजार चढीया दुभ्रळ रज गैण ढकाणी ।
मारे वीरम मेटसा करसा तुरकाणी ।।

लप ग्रैरै वीरम लियै सांढचां ग्रांपांणी ।
दोय कोसां पूगो दलो लारै लुणीयांणी ॥
मानों मानो मारकां सचो सलपाणी ।
मलिनाथ जगमालसुं तिण किसड़ी तांणी ॥
ग्राप तणी धर छोड़के ग्रायो ग्रापांणी ।
ग्रांपां मारण उठीया लप कोट लगाणी ॥ ४१

लप वेरैंसु थट लीयां चढ कमंध चलाया ।
मोढलरै गढ पापती एकण दिन ग्राया ॥
सरवर भरीया नीरसु तरवर तट छाया ।
वीरम जेत विराजियां जाजम विछवाया ॥
मोटल ग्रावै मिलणकु जहुवार कैवाया ।
जिसकी वाटां जोवता ग्रो भी चढ ग्राया ॥
केइ पकवान कढाविया वाकर वटकाया ।
हरिया मन राजी हुई गीतां गवराया ॥
मोहले महले मंडली रंगराग रचाया ।
मुंगे ग्रतर गुलावका छिड़काव कराया ॥
पोळां तोरण वंधीया सामेल सभाया ।
ऊपर मोती वार वार भल थाळ भराया ॥
मोटल मिलीयां वीरमे ग्राफु गळवाया ।
ग्राफु हात उछाळके छळ चोट चलाया ।
मोटलकु भी मारीयो वेली वफनाया ॥
धन लुटे लीधी धरा गढकु अपणाया ॥
हरीया झाले हतसुं रथ पर चढ़वाया ।
हरीरा जेवर सुतन वीरम संभलाया ॥
प्रोयत संग पठायके साहिवाण पुगाया ।
सो ग्राया साहीवांणमै कूका कर लाया ॥
मदु ग्रपै मारको ग्रत वेढ ग्रघाया ।
जंगमां चढ़वा जोइयां वीर रस छाया ॥

मोटलका धन मागसा ले वैर सवाया ।
पाफर हिंदु काटकै करसा मन भाया ॥
पोडा धर धूज पडाहीवै दलजी चढ आया ।
वातासु विलमायकै ज्यानै जजमाया ॥
सीहै कहीया वचन सव नाही मन भाया ।
सुगन विचारो सुगनिया ए जाव कहाया ॥
पाच दिहाडा पाळीया मत वाहिर जाया ॥
सुगन भला ले साथ सव भरजो पग भाया । ४२

दूहा

दले चिगायो देसनै, इसडो बुध आवेज ।
भायानै भोळावता, जिणरै कासु जेज ॥ ११८

[सोरठो]

सरणाया साधार, दलै जिसो नह देपीयो ।
वीरमरा विनपार, जवर गुना जिण जारीया ॥ ११६

नीमाणी

दल भेज प्रधानकु ए जाव अपदे ।
वीरम तुम गुना करो हम जाय पिमदे ॥
ढावो ढावो ठाकरा धर पाय धरदे ।
मदु न मानै माहरी कल काहे करदे ॥
हेकण जगा न मावही दोय सेर वकदे ।
हेकण म्यान न मावही दोय पाग धकदे ॥
तुम हिंदु गुना करो मुप वोलो मदे ।
दोय घर डाकण परहरै गाम वणीया हदे ॥ ४३

आपै वीरम राठवड आगळ पलावै ।
डाकण किणनै परहरै जव भूपो थावै ॥
गुण भूलो मारा दलो परधान मेलावै ।
आय प्रधानसु अपीयो वीरम वट पावै ॥

सूर उगै साइयांणमैं नित ध्राह घलावै ।
जोयां हंदी जीवका पोसे ने पावै ॥
दले अरु देपालकुं नित ध्राह सुणावै ।
वीरम न्याय नह लही अन्याव सुहावै ॥
जोइया वडपण जाणनै कथ नीत कहावै ।
पोसैं फेरूं षाजरु सफरै राषावै ॥　४४

दूहा

जावे भागा जोइया, पाळे अगली प्रीत ।
धीर न वीरमदे धरै, निस दिन करै अनीत ॥　१२०

दस हजार जोइया दुझल, लाष लोकरी लाठ ।
ज्यां जोयां ऊपर जवर, वीरम घाली वाट ॥　१२१

दोनुं तरफांरों दलो, दुप भुगतै निस दीह ।
झलीया रहै न जोइया, लोपी वीरम लीह ॥　१२२

निसांणी

दिन उगै पसरा दियै उठ वीरम आया ।
उचका डांणी उथपै अपणा वैठाया ॥
माणस पनरै मारीया जोइयाणी जाया ।
झरतां हतां जोइया कुकाऊ आया ॥
सो सारा साहीयांणमैं थट भैळा थाया ।
अधी उच आपां दई वधी अपणाया ॥
आपां ऊभां आपणां माणस मरवाया ।
जमी गमावै जीवता जांनै किम जाया ॥
ज्यांरी जननी जनमता षारा नह षाया ।
दस हजार चढ़ीयां दुझल रज गेण ढकाया ॥
लप वैरे ऊपर लहर दरियाव हलाया ॥
दोय कोसां पुगो दलो वातां विलमाया ।

सो पाछा माहियाणमैं ओठा ले आया ।।
दाढे नित अवगुण दलो सलपाण सवाया । ४५

यु देपाले अपियो सुण दला लुणीयाणी ।।
वास चोवीस वसावीया वक भूठी वाणी ।
तो मारे धर लेवसी वीरम सलपाणी ।।
तडछै जासी जोडया आयो आपाणी । ४६

दूहा

मुदै जवाइ मारीयो, लीधो सारो डाण ।
मसनक टोपी मेलनैं, मुप परी साहीयाण ।। १२३

दलो कहै देपालदे, माभी वस मरोड ।
भाया गुण भूलो मती, ओ वीरम राठौड ।। १२४

दुसह वचन कहीया दलै, जोइयानै जजमाय ।
तिण समीयै पुगल तणो, भाटी बूकण आय ।। १२५

नीसाणी

वुकणरैं दोय वेटीया गत एक नीहालै ।
नाम वडी कसमीरदे परणो देपालै ।।
रानल कवरी राजवण अभ अछरा गालै ।
सो मागी देवराज यु कर जोड हतालै ।।
रानल मुभकु राजवण भाभी परणालै ।
भावज गुण भूला नही भ्रम पोट विचालै ।।
कहीयो जद कसमीर दे चढ क्रोध अचालै ।
हु परणामु हिदवा तुरका हरटालै ।।
सो कुण हिदु हम मुणा जिसकु परणालै ।
परणामु मगपण करै वीरम विगतालै ।।
जद पाछो कहीयो जसु आगम अपतालै ।

मानै भाभी माहरो वायक सिर मालै ॥
बैठी रोसै बापनै कर मुंडे कालै ॥ ४७

दूहा

झडपे बुकण लेवसी, दोलत दामो दाम ।
आसी वा भी आपनै, तो सिर भुंड तमाम ॥ १२६

वीरमनै वर माळतां, मिटी अकल कसमीर ।
बुकणरो घर बूडसी, नदो बहंते नीर ॥ १२७

गोडेमै जांरै गया, धारा जकै धणीह ।
वेहीज मारण उठीया, तेवर चूक तणीह ॥ १२८

सीहांनै सलषांणीयां, त्यांरी एक तरेह ।
आ दुअ पतीओ धरो, कुण विसवास करेह ॥ १२९

तिरिया हठ झाले तिको, मैलै नांहि परत ।
गम विन वाजै बेगमां, ज्यांरो नाम जगत ॥ १३०

मेले जादम मोदसु, बीरमनै नालेर ।
आप परणवा आवजो, विचै म करजो वेर ॥ १३१

सार छतीसु संकै, मसतक बांध्यो मोड़ ।
वीरमदे चढीयो बिडंग, रचे चूक राठोड़ ॥ १३२

नीसांणी

बुकणदे घर व्यावदां रंग राग रचांणा ।
चारण भाटा चोहटां गरटा दिवरांणा ॥
मन कुता बहु मालरा लेषां लिवरांणा ।
बेहु मुदाइ वादसी बे त्याग करांणा ॥
सोनारां घर सापरत संचगर दिवरांणा ।
कंठीया कड़ा मुदड़ा घण घाट घडांणा ॥ ४८

कोड करै कसमीरदे भर मोतिन थाळा ।
वीरम सग वधावसा मेले वरमाळा ॥
जादुम चूक न जाणीयो विय्याह विचाळा ।
कपटरं कसमीरदे पयसु रच चाळा ॥ ४९

सावैसु इक दिन अवल अध रतरा आया ।
भाटी पागा भाजीया रिण चूक रचाया ॥
व्याव न किधो वीरमै लालच मन लाया ।
वुकण वेटा वेलीया पागा पलकाया ॥ ५०

चारण चारण कुकता आरण जगाणा ।
वामण भुरी वासता सिर आप दिराणा ॥
भागा मुडा भाठदा पुल दात पिराणा ।
डोफा भागा डुमडा झाटक झेराणा ॥
कटिया हात कमीणदा दत्त नेग दिराणा ।
गहणा गायणीया तणा लुटे लिवराणा ॥
केता पावज कटी हातॉ हेराणा ।
जावै गुणीयण जीव ले कर पाचा ताणा ॥
ठावा पथ विच एकठा मिल ठाक घताणा ।
फिर कोइ इमडा ज्यागमै मत पाव दिराणा ॥
सलपाणी जिसडा सुपह वनडा वरवाणा ।
वुकणका घर पोदकै धन सोध लिराणा ॥
वुकण सहता वेलीया इक पाड दिराणा ।
भटीयाणीदै भागका क्या चक्र फिराणा ॥
कह भाटी कसमीरकु क्या फाग पिलाणा ॥ ५१

दूहा

सअवा पागा साभीया, घणो उतारे धाणा ।
व्याव न कीनो वीरमै, अण भग रच आराणा ॥ १३३

आयो पुगलसुं अठै, वादै पडीयां ऊंट ।
कसीद कैयो कसमीरदे, लेगा धन सब लूट ।। १३४

निसांणी

देपालक ने कसमीरदे बड़ एक तरोई ।
वीरम साहंस तोलीया सलपांणी सोई ।।
छुट पड़ी किरबांणीयां विमांह न होई ।
अवलज सुजो आषीयो सो सची होई ।।
बुकणका घर बोटिया साला सातुई ।
बोतल हातल बटीयां विमाह न होई ।। ५२

आ सुण जोइया आवीया दलेषां आगै ।
देपाळो मुष दाषबे लाणत लष लागै ।।
मुझ गनायत मारीया जुध छ्टी जागै ।
वीरमसुं जुध वाजसां अवगुण लष लागै ।।
ऐबल धारे उठीया षळ मारण षागै ।
आज वालां धर आपणी सलषांणी भागै ।। ५३

लष वेरै पैदा सलष वीरम सुष बोळे ।
हैवर दोय हजारीयां सोहडां थट दोळै ।।
सहंस दसुं ही सांडीया टोळायत टोलै ।
लाष पचासा लूटीया रोकड़ धन रोळै ।।
मोटल सिरषा मारीया गढकी धग बोलै ।
जोइयांसु जुध जुटवा चित चेत न चौळै ।।
मावै नह छाती मधु इणसु रह ओलै ।
झलीया रहै न जोइया तैगां बळ तोलै ।।
दोउं दिसरा दुष दलो भुगतै मन भोळै ।
दिल फाटा दोउ ए दिसा घातां मन घोळै ।।
दिन उगै भायां दलो परचाय पंचोळै ।

आयो वीरम आपणो पित छोडर पोलै ।
लज साकळ तोडै लिया मदपुर मचोळै ॥ ५४

दूहा

कठा लगा कथ कुड, दाठै भड भाया दलो ।
धमता धमता धूड, सोनो ही होवै सदा ॥ १३५

नीसाणी

दलैपान विचार कर परधान पठाया ।
लप वरै वीरम कनै ए जाव कैवाया ॥
जगड तणी पग भाट सैभग वीरम आया ।
आयाकु आदर दिया हम लीध वधाया ॥
लप वेरो रहवासकु दळजी दरवाया ।
धरती चोवी गामडा मव राज समाया ॥
उस मामु वीरम तनै आधा वगसाया ।
टाण वलै उचका दिया आदा अपणाया ॥
चोवी गाम चवुनरा किह काज वैठाया ।
पोमे इकमठ पाजक सफरै रापाया ॥
जोइया पग माडे जिनी धरनीही रहाया ।
हाती रहै न जुटिया केहर उकराया ॥
मीलीया चिटीया महलै अहि जाणव आया ।
जाणक टोवर पोनडै विच वाघ वमाया ॥
वया तेग अवगुण विया हम लीध नीभाया ।
पायरहि दुगुण रिया सव जाय भुलाया ॥ ५५

हमहा भाट गात है भुज आ भठ भाई ।
मधु मीरीपा मारा थोटा जग माहि ॥
सावुर भटभी नातग दम महगा गोई ।
तो भी वीरमते वडे टनटी हम माई ॥ ५६

सब वेठां सीहांणमैं जोइये कुल जाया ।
सठ लेवण सीहांणकुं हैरा लगवाया ॥
जावो जावो कह जोइयां एथी मत आया ।
पटकी जोयां पागड़ी सिर टोपी छाया ॥
जोरु छोरु छोड़ कर वनवास वसाया ।
देपे सब निजरां दलो समझै मन माया ॥
दिन कितरा टाळै दलो अंत विरम आया ।
मेंतो मांरा आज लग स वचन निभाया ॥
कांमेती कह कर इसी आतुर उठ आया ।
मांगलीयांणी मोट मन भीतर बुलवाया ॥
भोजायां भाया कनै मुजरा मैलाया ।
दलै अरु देपाळकुं ऐ जाव कैवाया ॥
पालो रुंप न काटवै जो छांह अछांह्या ।
मोरो पीहर थां घरे थे सांतु भाया ॥
मे घर छाडे मांहरा घर थारै आया ॥ ५७

दूहा

कथन दलाहुं ता कया, पाछे आय प्रधान ।
बाइ समझायो बोहत, कमंद न दीनो कान ॥ १३६

नीसाणी

मांगलीयांणी सांषली परचावै पीवै ।
जोइया तो जळ वारता तो दीठां जीवै ॥
धर आधी दी धरपती क्युं कांकल कीवै ।
हक राठोहड हलणा थट चंगा थीवै ॥
सुष छोड़े दुष सापरत अपजस किम लीवै ॥ ५८

वीरम चढ़ीया वीरवर कीधा घमसांणा ।
तुरंगां वोम धड़क धर मेले डमरांणा ॥

देप दरगह पीरदी आया सलपाणा।
वीरम न्याव नह लही अनीयाव सुहाणा॥
इम मुजावर बोलीया चढीया मत आणा।
पतसाही पाळा चले क्या रावल राणा॥
है वे हिंदु समझ मन फरहास पीराणा॥ ५६

दरपत हरीयल पीरदा विच दरगह सोवै।
जोड्या देस वीदेसमैं जिण सामो जोवै॥
पीर प्रचाइळ प्रगट दुप दालद पौवै।
राम रहिम जु एक है कवु दोय न होवै॥
वीर फरासा बाढ बाढ बपाती ढोवै।
के मुला तागा करै हुव हाका होवै॥ ६०

बाढ फरासा वीरमैं घड ढोल मडाया।
गुणपत ढोली गेरका चढ कोट वजाया॥
बारै कोसा वैव देवो ढोल सुणाया।
सो सुणीया सीहाणमैं डर इचरज आया॥
ऐसा जोगी उमदा एथी कुण लाया।
सिंध दिली सुलतान दळ वीरम पर आया॥
दसु सहसा हुता दलो चित सेस चढाया।
जावा वीरम जीवता तो जाणे आया॥
इम दलो गल उचरै भल सजो भाया।
बगतर कुठा वीडता मुजावर आया॥ ६१

दूहा

दरगामु मुजावरा, कयो दलानै आय।
वो फरहास ज पीररो, वीरम लीयो वडाय॥ १३७

फरहासारा फाचरा, सवदा घुरै स तोल।
वैरै लप वजाडीया धींगै धींगै ढोल॥ १३८

लप वेरोरो वाणीयो, डरे पण मिलियो आय ।
वागा ढोलारी विगत, सारी कही सुणाय ॥ १३९

मदु सुण पग मांडीया, हणीया छाती हात ।
जद सजीया भड जोया, नहंस दसुं इक साथ ॥ १४०

सझता भड मदु कयो, करै मुंजावर कूक ।
पीणी देप र पीवता, जको कटायो रूंप ॥ १४१

दे टोपी हाते दला, वणां फकीरी वेस ।
मांगे पासां मुलकमे, नहँ आसां इण देस ॥ १४२

नीसांणी

पीरा करवा पट कीया, आय आगळ दलै ।
जीण करै मदु जवन मुछां वळ घलै ॥
हीरा लै पंथ थाळै अस आय अललै ।
कर पुररो लगांम दे जर पापर घलै ॥
आ जोका जोया इसा धरती उथलै ।
दलो हकालै दाटवै भड़ ओगण भूलै ॥
वीरमसु जुध वाजवा चित चेत न चलै ॥ ६२

मालै अरु जगमाल मिल क्या गोठ रचाई ।
जांरो सरणो ताकीयो धणिया पधराई ॥
वे हीज मारण ऊठीया सो हीज सीहाई ।
मांगळीयाणी मोटको गुण कीनो वाई ॥
आपां कुसळे काढीया वीरम वरदाई ।
सिध दिली दोऊं फोज सज आंपा पर आई ॥
वीरम वदलै आपणै समसेर चलाई ।
आंपा धरती आंपणी पाछी जद पाई ॥
मदु वै दिन मारका भूलो मत भाई ॥ ६३

कुछ वीरमकु नह कैया उचभी अपणाई ।
वारै गाव ज वगसीया भेले हुय भाई ।।
सात हजारा साढीया दिन हेकण दगाई ।
मोटल सिरपा मारीया जीण मकड जवाई ।।
पावा पोसे पाजरु मक लोप सवाई ।
आपा ऊभा आपणी घर लाज गमाई ।।
मघु अपै मारको सच ।। ६४

गुना अनेका जारीया दलै लुणीयाणी ।
कर दरसण फरहासको पीता मे पाणी ।।
सो फरहास कटावीया अम मान गिराणी ।
पाफर मान कुराणकु लप वेर लगाणी ।।
दुभ्मल मदु देपालदे भापै आ वाणी ।
आज परा जो आलसा जोइया मन जाणी ।।
अपणा वावर आपणीके देदा पाणी ।
जावे घरमु जोइया वै खुटै मनपाणी ।। ६५

आज वगछ करी समै अणचित्या जासा ।
जाण हली घण कठली वरसाल मचासा ।।
हरपत मन सुरा हुवा वधते गावासा ।
जुडसा वीरम माजरा वटका उडवासा ।। ६६

दूहा

कहीया भड भाया दलै, वडपण कथन विचार ।
वीरमसु जासो विडण, है जीता ही हार ।। १८३

वाई की मन जाणसी, भाई आया भाय ।
नप वेरै जाजो मती, घेरो जायर गाय ।। १८८

नीसांणी

साकुर अर पांडवनै पुररा करवाया ।
वाप वाप विरदाव दे मुप वाग चढ़ाया ।।
मदु सेर जवाद पर पापर पटकाया ।
सापत कर सव सोवनी अव वाहिर लाया ।।
वगतर कुंठा वीडीया सिर टोप सुहाया ।
सार छतीसुं साभ सव इम मदु आया ।।
पांडव लाय जवाद पर असवार कराया ।
जैतलसु देपालदे सभ सुभट सुहाया ।।
मिलीया अव सारा मरद अस पीठां आया । ६७

चढीया सामत सुरमा मुछां वल घलै ।।
तरगस भीडै तेजमै हाथां पग भलै ।
धनमै घेरा धांडमै कर पवरां किलै ।।
चढतां हैमु धीरनै घर राप्या दलै ।। ६८

दूहा

जेज न कीधी जोइयां, घेरी जायर गाय ।
सुण वीरम ग्वालां सवद, लागी उरमै लाय ।। १४५

दस हजार जोया दुभल, कठठ साररा कोट ।
ढाळां जंगा चालणा, ठाला करै न ठोट ।। १४६

नीसांणी

आप गवालां आपीयो गायां घेरांणी ।
अण भंग कोपे ऊठीयो पप चाढण पांणी ।।
ढोल वधाई वाजीया वीरां रसवांणी ।
आया सज भड एकठा नह जेज करांणी ।। ६९

मागलीयाणी सापली धण उभी पलै ।
रहजा नार वरजीयो सुण मेरी गलै ॥
आज पड पण आपरै धन लीधो दलै ।
जो फरहामन वाडतो कलकी थुहलै ॥ ७०

फीर वीरमकु आपीयो कही मागलीयाणी ।
जे तु ठाकर सलपीयाण ए भी लुणीयाणी ॥
दलो अवगुण दाटवै गुण आदु जाणी ।
दुप पायो धायो दलो तद इतरी ताणी ॥
कहीयो कमधज रीम कर रहजा अब राणी ।
पण नेम जब दीयो पीवण मुप पाणी ॥
रावत सारा रीसमै जम रूठा जाणी ।
धन नह जासी घाडमै ऊभा सलपाणी ॥ ७१

उम वीरम उठ कर होकार दराई ।
साज मडाया साकुरा कमरा वदवाई ॥
कमधज ससतर भीड कर सममेर सभाई ।
साणीकु कहीयो सरम है बरस झवाई ॥
आ फुले उमदा अगा अडपाई ।
वोह तब थींटे वेलीया मनवार वराई ॥
विध विध कर मन वेठीयो पिम पुन किताई ।
भारतमै रहजो भगा कय रपा काई ॥
मागलीयाणी पालवा इतरै फिर आई ।
गुना अनेका जागीया दलै सिपवाई ॥
एक गुनो दिन आजरो वगमो वरदाई ।
मुझ तणी वय मानकै ठहगे ठुकराई ॥
ए मब गाया आपरी विगडै नह काई ।
दलो मवारे देवमी लप वेरै लाई ॥
हु पण वागद मोगलु है महारो भाई ॥ ७२

मांगलीयांणी माहरी गायां भिड़कावै ।
लषवैरैरी सींवमै कुसलै फिर जावै ।।
जीइया मनमै जाणसी वीरम संक पावै ।
हु आलस बैठसुं हमै थित इतरा थावै ।।
फणधर छांडै फणदसु न भार संभावै ।
अरक पिछम दिस उगवै विधि वेद विलावै ।।
विग घटै वीहगेसको सिव ध्यान भुलावै ।
गोरष भूलै ग्यांनकुं जत लिछमण जावै ।।
सत छाडै सीता सती हणमंत घबरावै ।
धणीयां धाडेता तणीकी ,षबरां पावै ।।
हुं सुंक कर बेठु घरे जग उलटो जावै ।। ७३

ऐ राठोहड आजरा उठीया अवतारी ।
हड हड नारद हसीयो भैरव ब्रद भारी ।।
मांगलीयाणी स्यामनै पालै घण प्यारी ।
घुड बलोइण ढोलरै लष धो बालारी ।।
उंधी किण दीधी अकल विणतै इधकारी ।
बाढण वात फरहासकी मुष केण उचारी ।।
मेटण राज समांहरी देवण दुष भारी ।
रांणी पांणी रालीयो आंषां अणपारी ।।
वरजे चढतां वीरमो ग्रहचार पलारी ।
रह रह ठाकुर समझ मन सुणीये गल मारी ।।
जो फरहास न वाढाता टल जाती सारी ।
सांणी करी समांधकुं तद वैग तयारी ।।
पाव रकेबां पर ठकै कीधी असवारी ।। ७४

दोय सहंस चढीया दुझल पमंगा पषराळा ।
वीरम समाध कुदाडवै झल सावल झाळा ।।
आज न छोडां एक ही विच पेत वडाळा ।

आये आये आवीया मोयल मतवाळा ॥
मागलीया अरु सापला सज साथे साळा ॥ ७५

माणक हरीयो दोलीयो वड थाट वरवाणी ।
सीहू हजूरी तेण दिन आया अगवाणी ॥
लेवण भाक लगुर ज्यु मुमकण केकाणी ।
ठहरो ठहरो ठाकरा आयो सलपाणी ॥
मधु ऊपर वीरमं भोकी केवाणी ॥ ७६

दस सहसु चटीया दुभल धारे मन धकी ।
दल पागा दाठ दे पुरे भप पपी ॥
अछरा आय उतावली हु ऐवर तकी ।
जोगण चोसठ पेतमै वोले वकवकी ॥ ७७

सामत तेग सभायके डम भारथ मडे ।
वीत न छोडा वीरमा पड पाधर पीडे ॥
सीह सपेखै कुजग वन घेर वीहडे ।
मदु भोकी कालमो कर पोरस जडे ॥
देव विनायक क्या करै ऊनळीये गडै ॥ ७८

वर वासुग सावता अपछर उतराणी ।
गीधण आमप गीलणकु पापा वजवाणी ॥
पेचर भूचर पलकीया केइ कोड कराणी ।
जुध सुण चोसठ जोगणी उछन मन आणी ॥
जोडयो पडै जवादकु पप चाढण पाणी ।
भाफी सेर जवादकु अग आतम आणी ॥
मिलर भालै साजीया मदु लुणीयाणी ॥ ७९

वाट गणा मिर वैग्यिा ग्णि गाटा ग्हणा ।
नाघु एण जवादकु वेता रग वणा ॥
मुजा ग्ग धारा मदु ग्ज वठदा गहणा ।

बोह्त तब कारैं है बेलीयां रिण गाढा रह्णा ।।
जाता उण मारग बुहा आता उण वैह्णा ।। ८०

वीरम बाग संभायकै तोषार झपटी ।
छुप मियानां नीसरी षुरसांण चोहटी ।।
पैसट जोइया पाडीया जंग वीरम जुटी ।
वीरम मदु वाजीया षल षैगां षुटी ।। ८१

वीरम मदु बाजीया रिण मांझ समथै ।
आगल रहसी आंपणी इल भारत इथै ।।
षाग भड फड षेलिया रिण फाग रमंथै ।
लल भष साबल लेवतां हुय लथो बथै ।।
साजै हात कटारीयां नर वाहै षथै ।। ८२

वीरम मदु बकबकै घण घावां घाया ।
अस षड जोयां ऊपरै डाचक डकराया ।।
जद मिल सारा जोइया मदुपै आया ।
अस वीरमकी उचकै घण दल घबराया ।।
घट कुसलै जावा घरै लष धाड़ो लाया ।। ८३

दूहा

इत जवाद समाद उत, दाषै दोउ दल देष ।
वीरम मदु थां बिना, अस भड बचै न एक ।। १४७

नीसांणी

बलबंत मदु बोलीया विध चुक बताया ।
ढम ढम बाजी ढोलकी षोगीर बजाया ।।
ताली तास कतोवरा सफरा षडकाया ।
धिरी धिरी धीरपै भाषै मुष भाया ।।
जोवै चोसठ जोगणी अछुरां रथ आया ।
वापा वापा बोल दे वीरम विरदाया ।।

सुसती करण समाधकु वाजा वजवाया ।
ऊँची ऊँची ऊछलै तग पापै आया ॥
नाचण लागी नाच पर रभ नाच रचाया ।
ताजण मटकी तोप सालपतान लगाया ॥
वीरम वदली वीडग लय जद चावक वाया ।
भाण तमासो भालवा रथ ढाब रपाया ॥
धीव पडै तरवारीया कै भागै काया ॥
भाला भलकै सीस पर सिर ग्रीधा छाया ।
वीरम हाकै वीडककु पलटै नह पाया ॥
जद वीरम मन जाणीया अव मरणा आया ।
जद वीरमरै जोड्या चहु फेर फिराया ॥ ८४

अला अला उचारकै चढ पँगा चला ।
जुडिया तेगा जोड्या हुय वीरा हला ॥
वीरम मन्ना वीटीया वाजी गलवला ।
भड वीरम मदु भिडे जाएँ जम टीला ॥
वीरमदे जोया विचै भासै रिण भला ।
सिंह अचानक साकडै घड कुजर घला ॥
केहर जाणक कोप कर उठीया गीर टीला ।
मधु वीरमकु कहा सुण साची मला ॥
पन्ना विछाता पालता दिन करता दला ।
सो दला अनगा रहा करता रिवमना ॥
मिलीया दलमै दानमै माफी कर मला ।
सामा वीरम सारका वण वैठा वला ॥
कहा कवीला कुटम घर यहा भाई भला ।
वादुर टाढी बोलीया नीगाणी गला ॥
मला गला नीवगै नो जाणी अना ॥ ८५

मदु अषै वीरमा धीरज नह धारी ।
लाप गुना मै जारीया जोय जरणा मारी ॥
वात कही मुष वीरमै सुण मदु मारी ।
थे नह गुना जारीया जरणा दलारी ॥
दला विना तु जारतो थिर जरणा थारी ।
मदु आषै वीरमा क्या मरजी थारी ॥
वीरम कहीया बादमै आषर उपगारी ।
वाण बंदूक कबांणकी तद चोट पलारी ॥
भड सारा मांसु भिडो तोले तरवारी ।
जद मदु हुं जाणसु थिर जरणा थारी ॥
कहीयो मदु कटककुं सुणजो भड सारी ।
वीरमसु जुध जुटजो तो ले तरवारी ॥
वॉण बंदुक कबांणकुं दुरी कर डार्रा ॥ ८६

दूहा

दाषे मुप देपालदे, सांभल मदु सोय ।
वीरमसु जुध बाजवा, कदम न धरसी कोय ॥ १४८

इतरी वातां आगमै, मानव कुण जग मांय ।
वकारै कुण वीरमो, सांमी षाग संभाय ॥ १४९

नीसांणी

लोप भवर गिर लंकरो कुण जावै बारै ।
आभ भुजा कुण ओढमै कुण सायर जारै ॥
मिणधर दे मुष अंगुली मिण कवण लिवारै ।
सिंह पटा भर साप हो कुंण मैड पधारै ॥
तेरु कुण सायर तिरै जमकुं कुण मारै ।
वाद करै रिण वीरमो नर कोण वकारै ॥

मदु तो विन मारको कुण आमग धारै ।
ऐ राठोहड आजग पोरम विन पारै ॥
दमा हजाग दोठमी हय दोय हजारै ।
मत धडको रापै मदु है माहिब मारै ॥
गठोडा रिण गीठमा दे पीठ अकारै ।
जरा चाढा कुल जोडयाँ कथ रपा धारै ॥
वाथ घला अममाणमु लज हान अनारै ॥ ८७

मजै दोऊ दल मामटा विच घूमर वगी ।
गठोडा अरु जोडया अममाण मिलगी ॥
वाहे पग देपालदे फिर पीछी दगी ।
जाणक नाचत अपछरा घुमावण लगी ॥
जैतल वाही जोर कर विच मुठा लगी ।
पोड चहु जब कपडा पग होय अपगी ॥
पपर गणी चीर जिम घोमाटण वगी ॥ ८८

उतरीया वीरम कमध ममाध नटाई ।
भाई भाई भापीयो पुर होन वधाई ॥
ढाल लिया हन वाहमें गममेर गभाई ।
पैसठ अम चढ पाडीया वीरम वरदाई ॥
वीरम पाला पेन विच ऊभा अड पाई ॥ ८९

गठोडा अर जोडया भेग धमाणा ।
वाजी हाथ नहारग हुय वर गेराणा ॥
भन भन घाट भनाीया पुरमाण दुगाना ।
भमान गेना धाग भट ठ पट अगान ॥
पडीया पमाफट पागनी ठ नाना गागन ।
जागर धाप नोगारमें डरीया दिनमान ॥
पारै पारै पाडीया मत्र गीरम नाना ।
ठन पुत्र नीर ल्लि विना पग नैं पाग ॥

मांगलीया अरु सांपला भिडिया जुध भारा ।
सोलंपी चायल सरव वांनै तव रारा ॥
नायक विदर नगारची कर समर करारा ।
वीरमरा जुध वीचमैं तुटा जिम तारा ॥ ६०

वीरम वाही वीजळा मदु अर मथैं ।
सामी मदु साजर्दी पग झाटक पथैं ॥
फेर ठंठारा फाचरा घण जाण घडथैं ।
जांण रमैं रिणु गेरीया डंडे हुड हुथैं ॥ ६१

मदु वीरम माचीया सझ आंमा सांमा ।
हाथी जाणक हुचकै मदुपुर अमांमा ॥
साकल छुटासा परत नर नाहर नामा ।
मदु वीरम मारका हदपुरै हांमा ॥
परठै पात्रस मेरसा उण वेर अमांमा ।
रीमा पंड वीहंड कर किदा हद कांमा ॥
मोटा दुसमण मारीया नर मदु नामा ॥ ६२

मदु ऊपर माधडै वल मुछा वाळी ।
एकण घाव उतारीया त्रजडां त्रह ताळी ॥
मदु पोढे मारको रिण पेत विचाळी ।
जेतल जसु मोठीया भड कुलवट भाळी ॥
अण भंग लूण उजालीयो चाल कल चाळी ।
परधांमैरी पागनै इण विध उजवाळी ॥ ६३

वीरम अंग विहंडीया मुंछां बल घलै ।
देष इतै देपाल दिस कर क्रोध अचलै ॥
भीलपनै कु भाषीयो झट तरगस झलै ।
पाव हात सब कट पडे किधा चष ललै ॥
धानप सामा पाव सर दांता झलै ।

छुटा तीर अचितका घड फुटा ढलै ॥
चुका वैग पिलाणतै उलटा कर चलै ॥ ९४

धनप चढाया पुनीयै पुरसाण चौहटी ।
तन फोडे तरगस गया ज्यू बीज झपटी ॥
ढह पडीयो देपालदे धग्लणी चोटी ।
परगट कीधी पनीये रजपूता रोटी ॥ ९५

राठोडा अरु जोइया कलमा चकरारी ।
वीरम मद्दु पोढीया सभ पाग दुधारी ॥
च्यार सहस पड सुरमा भुज चिरदा भारी ।
सापा सारी सोह चढ सापो धर सारी ॥ ९६

दूहा

अग वीरमरै ओपीया, घाव एक सो दोय ।
अग मदुरै उपरा, गिणती चढै न कोय ॥ १४६

नीमाणी

जोइया दोडा देसरा जुटा मो वारे ।
ऐ मालक नवकोटदा लापा दळ लारै ॥
वीरमनु जुध वाजनै मानव कुण मारै ।
वीरम दाहक आयगा सो साहिब मारै ॥ ९७

दूहा

विढ रहीया रिण पेत विच, सहस दोय समराय ।
रहे उजागर चूड रज, नव कोटी ॥ १४७

नीमाणी

पडीया वीरम पापती सग उलग सुग ।
सोलपी माधो सुभट पडपेन सनुग ॥

पड़ीयो चायल सेंसमल पळ कर भप भूरा ।
भीम पडै रिण सांपलो तन कर चक चूरा ॥ ९८

दोळो पड़ मोयल दुभळ पत्रवट वट पाटे ।
हजूरी वनी पड़े दोयण दळ दाटे ॥
पडीयो आहेड़ी पनो झड़ीयो पग झाटे ।
सांणी पड़ पांणक सुभट कीर मर तन काटे ॥ ९९

मांगलीयो मंगलौ पडै जग सारौ जाणै ।
सहंस दोय पड सूरमा पापर हय पांणै ॥
वीरम संग वीठीया विहद तद ऊंची ताणै ।
अछरां वर पोहता इता अग वैठ विमांणै ॥ १००

दूहा

सोडा हाड़ा सिसोदा, पड़झाळा अरु गोड़ ।
चावड़ा तुर चवांण पड़, रिण पड़ीया राठोड़ १४८

नीसांणी

जसु रिणमें जूझीयो कर जोस हमला ।
मदु जैत रिण रहे झड तेगा झला ॥
घट फूटा देपालदा घुड़ले वर घला ।
दोय सहंस जोया दुभल हुरां संग हला ॥
चढ़ीया डोली च्यारसैं गिरणे गलवला ।
सब आया साही वांणमैं कर अला अला ॥ १०१

दलो कहै मै वरजीया मानी नह काई ।
वीरमसुं जुध वाजनै सब सेन कटाई ॥
मारे वीरम रिण मुवा भड़ च्यारूं भाई ।
धूड़ वलोइण धाड़नै जो कीधी सो पाई ॥

दलै विगडी देखने की जेज न काई ।
तेजल सग दे मेलीया चुडो अरु वाई ॥
दोय दीहाडा पथ वुही थळवटी आई ।
काका लाउ घर आलरै तेजल पोहचाई ॥ १०२

टावर चारै टोगडा जा साथे जावै ।
वाला वादै वाछडा तक घोडा लावे ॥
बाळक तोही न वीसरै घर रीत जणावै ।
वारट आलो वाछडा जोवण कज जावै ॥ १०३

दूहा

सूतो चूडो नीद सुप, सिर अहि कीधो छत्र ।
जद आले मन जाणीयौ, है कोई छत्रपत ॥ १४६

अही फण कीवो उपरा, भुपत तप भारीह ।
आलै मन जद जाणीयो, ओ कोई अवतारीह ॥ १५०

निसाणी

आलो चूडो ओळपै, मन हरप न मावै ।
चढीया आलो चूडरज, मिलवा कज जावै ॥
मालासु चूडो मिलै केई कोड करावै ।
मुरधर चूडो महपती मालो फरमावै ॥
तोर वधसी ताहरो चडी वर पावै ।
अस तो चडो आपसी मन चिन्ता मिटावै । १०४

दूहा

उगमसी नै आपीयो, मुपा ज लावण माल ।
चूडानै सग ले चढो, ढावो ये हुय ढाल ॥ १५१

वीरमदेरा वेठरी, घडे जगो मन घात ।
नाहर भेना रै नही, वमुधा जाहर वात ॥ १५२

नीसांणी

वर ले चूडो माल सै उगम संग आवै ।
मिणधर सूतां नीदमैं चामंड फरमावै ॥
वाड़ो करवट जेवड़ा घर घोड़ा आवै ।
उगमसी इंदोतनं पोती परणावै ।
मंडोवरमै दी कर महर माता फरमावै ॥ १०५

सूतां उठ चूडेसधर वाड़ा छपवाया ।
उण दिन सगपण वासतै उगम फरमाया ॥
चांमंडरै वरसु करै अस ओभक आया ।
अस रंग वदल्यो ईसरी दूजा दरसाया ॥
तद चूडे चामंडका परचा सच पाया ।
चंडी वर हुय चुडकुं सामांन सजाया ॥
उगम घास मंगावणा मुगलां फरमाया ।
सज भड उगम पांचसैं संग चुंडा लाया ॥
छळ कीधा वळ दापीया धर कारण धाया ।
हर वळ इदा रांण हुय गाड़ा गरणाया ॥
ऐम तळेठी आवीया चूडे मन भाया ।
ऊभां सोवायत अटा निजरा गुजराया ॥
सो गाडा उगम सर वगड़ भितर लाया ।
चामंड चामंड मुष चवे जैकार जपाया ॥
उसरा थाणा उथपे थिर थांनक थाया ।
मुगला दोय हजारकुं घोरां घलवाया ॥
राज मंडोवर चूडकुं चामंड वगसाया ॥ १०६

दूहा

आसुर काटे अंवका, कियो कमध सिध काज ।
चांमंड दीधो चूडनै, रिधु मंडोवर राज ॥ १५३

नीसांणी

उगम चूडे आगला रजवाट वणाई ।
मुरधर लीधी महेपती धर फेर दवाई ॥
कीलमा थाणा काटीया पाछी धर पाई ।
राणै पोती रावनै पेपे परणाई ॥
दीव मडोवर दायजे मिल सारा भाई ।
हरपस मन राजी हुये ऊगम फरमाई ॥
दुगर चौरासी गाव दे थिर राजस थाई ।
राव कहे सुण राणनै कर चित न काई ॥
सापी सूरज चद हे आपा विच आई ।
राण न वदलै राठवड जुग च्यार ताई ॥ १०७

दूहा

इदाजी म करजो अवर, पाधर मुगल पछाड ।
दीवी मडोवर दायजे, चुडो चवरी चाड ॥ १५४

सेत्रावैसु आत सव, मिनण चढे माहाराज ।
मडोवर आया मरद, जमो गोगदेव राज ॥ १५५

कायलाएै राजस करै, धरै कनकी मन धीर ।
मडोवररो भोमीयो, वल मागै वरवीर ॥ १५६

अगला भोम्या आपएै, मागै की माहाराज ।
वळ देवणनै वीरवर, सजीयो गोग सकाज ॥ १५७

नीसाणी

रमै सिकारा गोगरज कायलाणे टूगर ।
उठीयो दैतज कालीयो एही गल उचर ॥
दुथणी जायो को नही मसु जोडै कर ।
कर पकडै पाडचो कमद भेळो कीनो घर ॥

अबकै छोड़ै गोग रज मेळुं जाळ घर ।
वह नह मांगू फेर वळ ऐ सच्चा आपर ।।
वीर मिलायो गोगरज निजनाथ जलंधर ।।
महर हुई सीर कर मया सिपराळ तणी धर ।
वप गोगै वळ वादीयो उणवेर उवंवर ।।
रीजै सम पीरळ तळी सिधराव जोगेसर ।
पीठ फुरे नह ताहरी जपीयो जाळंधर ।। १०८

दूहा

व्याव थपे जद धीररो, दलजी करै उछाह ।
एक धमळ गध एकरी, तो सापा नै चाह ।। १५८

नीसांणी

वळ हाली कळ जाटसु वे नीत वधारी ।
जट कह वायक जोररा नह वात विचारी ।।
घघले धमळा जाटदा तद कीध तयारी ।
जांन चढंतां जोड्यां कर उछव भारी ।।
सुगन पलाऊ हुय सबै वळ वात विचारी ।
उठ दलो घर आवीयो हुवे होवणहारी ।।
उदल धीरै जांन संग पुगळ पाघारी ।। १०६

ओ जाट धीरीयो वीरदेजीरो छो सो सीहाणमै परणीयो छो । पछै सिरदार तो मारीज गेया नै ओ उठै ही वस रेयो । धीररी जांनमै इणरा उंठ १, वळद १, विनां दीनां जवरीसु ले लीना । जद जाट मडोर सेत्रावे जाय नै राठोडांनै हेरो दियो ।

जाट कटावण थाट सव सुध मारग धायो ।
मुरधर पट पोहरां मधे ओ हेरो आयो ।।
चवै मिलतां चूंडनै सव भेद सुणायो ।
दलो अकेलो घर रयो हूं देषर आयो ।।
पाग़ संभावो ठाकरां लो वैर सवायो ।। ११०

दूहा

चूडो हेरु सुचवै, पाछौ वचन प्रीयोग ।
हु मामो मारु नही, तु सग लेजा गोग ॥ १५९

धर चित जा तु धीरीया, गोगे कने चलाय ।
वाटा जोवै वीरवर, करसी जेज न काय ॥ १६०

धीरप दे मिल धीरसु, समपे विडग सधीर ।
सुगन लेर चढीयो सरस, वेर लेवण वरवीर ॥ १६१

नीमाणी

तद सीचाणी त्यार कर सापत सजवाया ।
सज भड गोगै पाचसै चढ पुर चलाया ॥
गड गड अवक गाजीया असमान गिराया ।
अस पडीया उवा वरै रज गैण ढकाया ॥
वैंटा उजड वाटतै गिर भगर छाया ।
जेण समे मिळ जोगणी वळ डाक वजाया ॥
भाला आभ ठहकीया सिर ग्रीधा छाया ।
उरस तणै मग उत्तरे इम गोगा आया ॥
काळा करहग्र कर भर नीर चलाया ।
सीहो सुगन न सभवै करमा मन चाया ॥
सुता फोही सवद सुण दलजी उठ आया ।
सुगन भयानक समजकै मन थाह न थाया ॥
उठे पान अचीतका मीह्ग जव लाया ।
अरदल दीमै आवता अत रोस अघाया ॥
अव गळ सीहो उचरै है नीर पगाया ॥ १११

अळगामु अस पेडीया अर भीम अमगै ।
उठ वेदला जोईया नूतो कन जगे ॥
ऊभा गोगा राठवड पिन वैर ज मगै ॥ ११२

दूहा

निस आधी पल नेमीयो, वाजी हाक विकट ।
रोस न मावै रावतां, घण सिर फुटै घट ॥ १६२

पांणां किरमर पकडे, रिदे जालंधर रट ।
रिण तती वारल तळी, लेवण वीजळ वट ॥ १६३

गोगै वीरम वैर कज, पुंरा ही वल हट ।
ओध विगाडो वरत कट, ईसां पिलंग घरट ॥ १६४

दुझल धन तो पित दलो, नव गढपत नरेस ।
उण अगे तू उपनी, देउ धिम उदेस ॥ १६५

नीसांणी

देउ सपीयां साथ ले सज वारै आया ।
वधावे गोगे कमध गीतां गवराया ॥
वैर पितारो वालीयो भल कीधी भाया ।
तिलक कीयो इण कारणै लैसुं मन चाया ॥ ११३

कहीयो जद गोगे कमध मांगो मुप वाई ।
सिर दु मारो काट कर विच थाल धराई ॥
ओ सिर धड रहजो अपी आसीस दराई ।
हैसु पमंग पड़ाहीयो माने दे भाई ॥
पवरां मेलुं धीरपै पुगल पोहोचाई ।
पूगां धड सिर वांटजो भिड वेंनु भाई ॥ ११४

दूहा

देऊ दलारी डीकरी, वेठां हुत सवाय ।
तिलक करे गोगा तणे, हैसु लियो वचाय ॥ १६६

नीसाणी

हैंसु रोवण हक नही मज होय मधीग ।
तु जाया दल राजदा नापै चप नीग ।।
पमग चढै पडाहीये पुगल जा वीरा ।
गोगा कुसल न जावमी घट ऊभा धीरा ।। ११५

दूहा

कर पुररो लगाम दे, पिठ ज मडे पलाण ।
पुगल जाइये पडाईया, एकण पोहर उडाण ।। १६७

गोगै दलो मारीयो, जीतो मुरधर जाय ।
धाजे बाहर धीर दे, कीजै जेज न काय ।। १६८

राग मिटाणा रगरली, सुणे अचीती आह ।
विध कह हैंमु वेढगी, दापै धीर दुवाह ।। १६९

काहळीयो केहरकळी, कटका उकट वाट ।
धीर चढै अर धूमरा, वीटे गाउ जट बाट ।। १७०

नीसाणी

काह कटका श्राह सुण सजीया भड सारा ।
धीर चढै अगि धूमरा सग गोगा लारा ।।
उडे रज असमानमें ऊळ होय अथाग ।
सेल चमकै बिच अणी जिम तारी ताग ।।
वेढगी पटीया बींटग पथ आगर पाग ।। ११६

हेर मना हुय हालीया गज सेरा गाजी ।
अणी धोर अपाडीया [illegible] ।।
वणीया दुनरा [illegible] ।
[illegible] ।।

गोग लछु सिर उतरै मुझ बकरा मारी ।
धीर सुणै अरि धुधड़ै लंग सषड़ लारी ॥ ११७

जलम्या पेट जवादरै अस दोय आपांणी ।
चढ़ीया उदल धीर दे धरती धुजांणी ॥
हीराळो न पड़ाहीयो जंगम जग जाणी ।
ऊजो आयो धीर दे कर तेग उबांणी ॥ ११८

आय लछुसर उतरा गहमें भरीयोड़ा ।
उरस तणै मग उतरै दल बाटल दोड़ा ॥
दूर अचाणक देषीया चंचळ चर तोड़ा ।
अस पकड़े कर आपरा रिण बजे रोड़ा ॥
भुषा तिरसा आपरा वांधीजे सोड़ा ।
ढलीया हात न आवसी गोगादे घोड़ा ॥ ११९

अस सह हांतां उतरे थहीया दळ पाळा ।
काळ ज्यूं ही करवा कलह उठे अळसाळा ॥
भूषा सिह जिम भूटकै रोसै लरढाळा ।
कंपै छाती कायरां धुब झाळो झाळा ॥
सुरा सिघण थेह ज्यू धुबिया पंषाळा ॥ १२०

सांवत तेग संभायके सज सायर साया ।
लड़तां कानो धीर ले तद होय तिसाया ॥
कुड़ा रांण कसुंस कर जादम जल पाया ।
अभंग लुणाणी उठिया वल दाष सवाया ॥ १२१

दूहा

पाणी पीधां जोइयां, पोह धर मुछां पांण ।
दिस गोगारे मलफीया, डाकी भरता डांण ॥ १७१

केता वगतर तन कटा जुझा भड़ वंका ।
जोड्या कमधज जुटीया अब जीत असंका ॥

झिलमां वीजळ वाड भड पग वाज पणंका ।
ऐसा गोगा वीरदे भिडीया भड़ वंका ॥　　　१२४

गोग वहटा पेत विच रजवाट उजाळी ।
आयां जाढम गनलै भूपत पग भाळी ॥

सगा रुक ममाप दै कर गीभ वडाळी ।
रांणक वळतां गोगरज ममसेर संभाळी ॥

वैग वुही कर वीजळा जगा दोय डाळी ।
कहीयो गोगै हास कर दे सगा ताळी ॥　　　१२५

घण तोड़ण जोड्या घड़ा जिते कर समर ।
कठीये पग गोगे कियो निज साद नरेसुर ॥

दरसण सिध आपै दियो माथै कर मैहर ।
पाव उलटा सांधीया ओलपाण तणीयर ॥

इळ अंबर गोगादतै तो काया अमर ।
हुय सिध दसमो हालीयो संग नाथ जलंधर ॥　　　१२६

गीत चितइलोळ

ऐ वीरळ तळी आराण उनी पळां तंडळ पाय ।
वीजला ज्युं वहै वाढै घड़ा एकण घाय ॥
तो घण घाय जी घण घाय धापी रळ तळी घण घाय ।　　　१

वैर वीरम तणै वाही निसप जोध ।
नीडा रहात गोगादेव हुंता धपाई इत धार ॥
रत धार जी रतधार धापी रळ तळी रत धार ।　　　२

कटे उदल दलो कटियो धीर हसु वैर वैर ।
वीरम तणो वाले वालजे इम वैर ॥
इम वैर जी इम वैर गोगे वालीयो इम वैर । ३
कट धर रहे सुता सला कर उभै वटका इस ।
छुटती घर जाय छुटी कोसे सवालै सिस ॥
धर मीम जी धर मीम जाती वाजवी धर मीम । ४
वीजड गमीयै अरावाळ जोडया जडमूल ।
वाप कज वैरीया वेटो घडच भेला धूल ।
ए धूल जी ये धूलजी अरीया काटीया काटिया ऐ धूल । ५
भाज राणक देव भाटी सवलटो अर साथ ।
कमध गोगो अमर कीधो नमो जलधर नाथ ॥
नवनाथजी नवनाथ नाथा ऊपरा नवनाथ । ६

दूहा

सात वीस नीसाणीया, ऊपर पान सवाय ।
एक गीत इतरा दूहा, भणीया गुण सुभ भाय ॥ १७२

नवगुण पूणा तीन मैं, वीरवाण जसवार ।
सुध वाचीजो सकवीया, वाधर कही विचार ॥ १७३

सवासे नीसाणीया, दुहा पुण सत दोय ।
गीत एक इण ग्रथमै, समजहु वाचक सोय ॥ १७४

इण पोथीमे वीरमाण ग्रथरा दुहा पुणी दोयसे है । गीत एक चित-इलाल छ और नीमाणीया एकसो पचीस तो आका में छै और एक नीमाणीरा नम्बर आक नही दरीजीयो[1] । और बादररै कंणम नीमाणीया एक सौ पतालीस छ । सो उगणीस नीसाणीया मिली नही । जतमालजी मारीजीया जको समो ठणम नही छ । दुरजणसालजी डाभी और देवेरा धायभाई मारीजीया जका वारता नहीं । इण मुदरी नीसाणीया मिल नही । इसो जुध आरारोठ महाभारत

[1] नागरी प्र० सभा ११७ दफर भाग मी प्र० सभाका म सुधार कर दिया गया है ।
—सम्पादिका

माल सलखाणी, वीरम सलखाणी, जगमाल मालाणी, माधोसिंघ सोलंखी, वा घड़सी भाटी, वा मदु, जसु, जैतल, देपाल, ए च्यारूं भाई लुणियाणी। जोया तथा गोगो वीरमाणी राठोड़ धीर मधु वाणी ऊदल हेमुदलाणी। जोयाएं अथवा इयारा भाई रजपूत आदमी होज करै। सुणीयांसुं सूरमारी भुजा असमान अडै। कायरारा होया पडै। दीठा तो सापरत बावन वीर चोसठ जोगणी ताळी दे हंस हस पड़ै। सापर तहूर अफछरा रथ पाथा पड़ै। दलै जोयेरो भरपीमापणो भेळप अवसांणीरी जाणतो केणहारो कठा तक कैवै। वे इदै उगमसीरो दायजो ही लाप सावासी लेवै।

इति

परिशिष्ट १

आढा पाड़पांनजीरो कीयोड़ो

रूपग गोगादेजीरो

॥ श्री गणेशाय नम । श्री सरस्वतीजी नम

अथ रूपग गोगादेजीगे

आढा पाड़पानजीरो कीयोड़ो लिपते ।

गाथा चोसर

अत मत कायब सुबल ऊकत्ती, सुप्रसन हुय दीजै सुरसत्ती ।
पोह राठोड अचल छत्रपत्ती, कहू इम गोगो कीरत्ती ॥ १

इल अजरामर वात उबारण, चाय छाडा तीडा जल चाढण ।
वैर वैराह पितारो वालण, दापू इम गोगादे डारण ॥ २

दूहा

सुत छाडो सलपो सकज, धुहड जगत साधार ।
घण जाणग सलपा घरे, वीरमदे वडवार ॥ ३

छद मोतीदाम

वडवार उदार ससार वपाण, जोधार जुझार दातार सुजाण ।
दला थभ वीरम तेज दराज, साजै दिन राजै ऐ सूर समाज ॥

भड़ां दरगाह हलोहल, भाल, तवैलै ऐ वाज वड़ा तेजाल।
सत्रां जड़ काढण सूर सधीर, नरेसुर चाढण वै पप नीर॥
सखूवड़ वीरमदे सुभियांण, तणो सलपेस तपै तुड़ तांण।
गाहे धर हैमर पेड़ गिरंद, नड़े भड़ अन्नड़ पाग नरींद॥
दीयै लष सांसण कुंजर दान, सुपत्रिय चित सो ईन्द्र समान।
करे थह बैठोय सूर सकाज, गोढो गुर सिंह ज्युही अग्राज॥
षेडे चांऐ वंस उपावण पार, जोइयाऐ आयाय भीच जैंवार।
दलै धर गूजर लोड़ दुंगांम, महैवैय कीधोय आंण मुकांम॥
दगो कर छोडेय साह इवार, चोरे लष कोड़ जमोर चियार।
अमोलष ऊजल गात असाध, सालोतर घोड़ीऐ एक समाध॥
इती मैहमंद तणी लेय आथ, रोदां सिर नीसरियो अधरात।
प्रथीपत सांभल तांम पुकार, मनंछिय तेड़व राज मंझार॥
दिसा जगमाल पत्री दइवांण, मंडे मिसलत लिषे फरमांण।
वेगावैग मेलिय दोय वजीर, वेगड़ैह कोप कियो नरवीर॥
दलारोय मेलैह सीस दुझाल, जांणू जद मूझ हितू जगमाल।
सुणै गल हाल जगा सुभियांण, जोइलारै डेरैय जोध जवांण॥
विचत्रियै आदर दाष नमेष, आपे दोय तेग अने अस एक।
इषै अस सुद्रब तेग अपाल, मालावत लोभ धरे जगमाल॥
वड़ा परधांनांय बूजिय वात, घड़ी देयपाल दला सिर घात।
प्रमेसुर अंक तणै परमांण, मंडे धर छाड़ांय वेध मंडांण॥
वेसासैय दापैय कोल वचन्न, मारु राव ध्रोह धरै विच मन्न।
जगै द्रब लोड़ण जैत जियार, ताता षग वावाय कीध तयार॥
आई नह आव तणै उपगार, जोंइयांय लाधोय चूक जैवार।
इषै मन सोच अरोड़ अपार, हुवो लषवेरो ए कोस हजार॥
आई तोय गत अलष अदेस, दोषी नजदीक दुरंतर देस।
पुणै इम षान सबै परवार, हमैय कुण आंहै रषणहार॥

विच त्रिय दापै सोच वराम, तठै इक रावत बोलियो ताम ।
उवारण रूक्ताए चित उदार, वसै ओय वीरम जूह विडार ।।
मारु सलखावत भायाय मोड, ठावो ओय बैठोय ठाविय ठोड ।
रिमा पडगोह पत्री रठ राण, तपै भड वीरम ऊ चीय ताण ।।
उठै था मेलुय जेथ अपाल, जठै नह गज सकै जगमाल ।
विचत्रियमाभल वैण विचार, त्यारी करजीण पडे तोवपार ।।
जोइयाय कूच किलो विण जाण, उतारोय कीध दरगह आण ।
दलो मिल वीरम हूत दुबाह, आपे कर जोड समाध अथाह ।।
हुवो जद धूहड जूह विडार, धजाय वध सरणाया साधार ।
पुणै इम वीरमदेव पुचाल, अठै था पान करै कुण आल ।।
जिते मो सीस पवा पर जाण, इतै कुण गज सकै तो आण ।
प्रथीपत तेड वडा परधान, सोलपिय मोवोय पाथ समान ।।
दुसासण डाभी दुरजणसाल, काना जगमाल सुणी किरणाल ।
धुणे पग धूहड लाग धीलाग, उडै पड जाण पडी वन आग ।।
त्रह त्रह वाहर वाज त्रमाल, पमगा ए पीठ मडे पखराल ।
ओपे सिव जेहा ए गात अथाह, सूरा भड भीडैय टोप सनाह ।।
भुजा डड सावल तोलेये भूप, रुकेवाय पाव दिया जम रूप ।
दला कर आरभ भीच दुझाल, मालावतसाल लियो जगमाल ।।
पेडेचो ए छात पडे कर पीज, भिडेवाय काकाय हूत भतीज ।
मिले पथ सालल पैंग मरद्द, गमागम उमट घोर गरद्द ।।
निहसेय राग सिधू नीयसाण, वलोवल छायाय रभ विवाण ।
पुगा अस पेडेय भिच वेभीत, जगाथह वीरमरी जग जीत ।। ४

दूहो वडो

कोपे कवर करूर, जलामल मेले जगो ।
आयो वीरम ऊपरै, जोइया वेध जरूर ।। ५

पोह मेले परधांन, काकेसुं दापै कतन ।
दो काढे वारै दलो, साहो जुध सांमांन ।। ६

वीरमदे जिण वार, परधांनां हूंता पुणै ।
दूं माथो नह दूं दलो, साहीं जावो सार ।। ७

सलषा तणो सवाल, कमंधां गुर वीरम कहै ।
जोड़े पग थारे जोडै, जुड़ी ज्यूं जगमाल ।। ८

काको जैंत सकाज, तै आगल सजियो तई ।
मालावत भूले मती, जिण भोले जगराज ।। ९

काकै तणो कंठीर, सवल भतीजेसू सुवद ।
हुवे मोहर हलकारिया, सक्ज भिड़ै सधीर ।। १०

अहके तूरअमाट, गीधण जोगण गहगहे ।
काको भात्रीजो कलह, मिलिया लोह मुराट ।। ११

छंद मोतीदाम

मिले जुध वेहुंये लोह मुराठ, प्रथीपत वेहुंये ओपम पाठ ।
कमंधज वेहुंय जोम कठोर, वीरारस साललिया नर वीर ।।

जुड़े माय माहिय माह जोधार, अड़ीलय विहुंये चित्त उदार ।
अड़ीलाय वेहुंय लाग ध्रियाग, रुड़ै दल दोउव सीधव राग ।।

बैहु भड़ कंदल मांड दुगांम, मिटे सनमन्न सगप्पण मांम ।
जरु अषड़ैत वैहुं जगजीत, सिधां हिदवांण वेहुसुं प्रवीत ।।

षेड़े चोयठात वैहु चित षोध, जुड़े रठ रांवण वेहुंय जोध ।
वेहु जरदैत वेहु वीरदैत, वीठे धन वेध बैहु बषलेत ।।

घटै रोवसैल बैहु घर थभ, षेड़ेचाए षार बंधा गज षंभ ।
वहै वेयधार उरावांयवार, धजां सिर ग्रीव सरां धुवकार ।।

सजै रुडमाल सिंभू सिरताज, विचै दल सूर हीलोलैह वाज ।
तई झड झूल सत्रा तरवार, भडा घड डाडर घाव वभार ॥
लडै रस लीधाय ग्रीध लकाल, कमधज काहलिया किरणाल ।
वरघल घाव थडा गज वाह, छुटै गुण धानप तीर छछाह ॥
कढ़ा पग पोगर धूण करुर, पटाझर आहडिया मद पूर ।
हुवै जुध सूर भतीजोयै हद्द, मुडै नह काकोय हेक मरद्द ॥
घडा मच धोम छकै रिण धाम, जुझाउऐ वाज नगारऐ जाम ।
तडफफड हीजर साकुर तुंड, रडव्वड कुंड गडा जिम रुंड ॥
हडव्वड जोगण पेतल होय, सडव्वड कायर पथ सजोय ।
तडव्वड सायक आत्र सताड, वल वल काला जायाव वबाल ॥
चडवड जोगणि रुद्र जोचोस, जुडे भड वूहड वावेस जोस ।
भिडे असताईऐ लोह भिडाल, गीलै रस ग्रीधण गुद गीडाल ॥
पाछा जगमाल धरै नह पाव, दीयै नह वोरम हीणोय दाव ।
नरा भायत्रीज मुडै वायनेम, काको जुध भाजैऐ दापुय केम ॥
तडोवड तोल पत्री तप तेज, मिलै सिरदार दोउ मुह मेज ।
इतै विच वालाऐ सूर अपाल, मीणधर आयोय रावल माल ॥
सपेवैय वाता वागाएसाय, जुदा दल वेहुए कीधाय जाय ।
पुलारेय वालीए राड प्रवीत, जगानैय कुंजर ज्यू जगजीत ॥
राठोडाऐ स्याम चडैय कुरंग, उभा सलपावत माल अभंग ।
सपेपेय साव वले सिरदार, धरो जोवधार करो पग धार ॥ १२

दुहा

दाढे माल दुझाल, राड वीरमनै रापी ।
उठी वात उवावरे, मेटी नह जगमाल ॥ १३

ते वाजे रिण ताल, धड पड ग्रीधणियाँ धपे ।
वहिदुइ उवा हा वरा, वाहडिया वाहाल ॥ १४

अण भग कर आरांण, कारज अणचींता कवर ।
जंगम चड़ पुगो जगो, तलवाडै तुड़तांण ॥ १५

आयो थह उजवाल, कंवरां गुर मिसलत करी ।
जद लिषियो कागद जगै, वीरम दिस वेधाल ॥ १६

सज ओ न्याव ससार, वीरमदे सांभल वचन ।
पड़ै न एकण पड़दली, तोपी होय तरवार ॥ १७

ओ ओषांणो याद, जाणै छै सारी जगत ।
नविणै दाव निदांनरै, वीरम वासर वाद ॥ १८

कागद सुणे सकाज, दाषे वीरमदे दुझल ।
पण पाणी न पीणरो, मालारी धर मांझ ॥ १९

साझे भडां सधीर, धर जूनी हूँता धमल ।
नर चढियो षाटण नवी, वीरमदे नर वीर ॥ २०

डारघ षडे दराज, सलषावत जोयां सहत ।
मारु थभा मांडिया, सेत्रावे सिरताज ॥ २१

दल़ बल़ हल़ दइवाण, केकांणां हूकल़ कल़ल़ ।
राजै वीरम राठवड़, इन्द्र तणै अहनांण ॥ २२

वीरम सेत्रा वास, सीमाड़ां मेल़े सरद ।
सुत सुपसां जांयां सहत, मारु रहे छ मास ॥ २३

उण समीयै उदार, कर जोडै लागो कदम ।
डारण भड मांगी दलै, जोइयां सीष जैवार ॥ २४

कर मिसलत किरणाल, सेत्रावै राषै सथर ।
देवराज जैसिघदे, उदभे कवर उजवाल ॥ २५

वीरमदे तिण वार, कहिया निरभावण कथन ।
पीहचावण चढियो पहव, जोइया जैत जुहार ॥ २६

सलपावत सुप्रपाल, सुत सुपहा मेला सहत ।
हिंदू देपण हालीयो, लपवेरै लकाल ॥ २७

उडै रज असमाण, आधो फर छायो अरक ।
पडिया अस वीरम पत्नी, दिस उतर दइ वाण ॥ २८

पथ वहता प्रवीत, कुंडल वीरमदे कमध ।
, परणीया चदण पहव ॥ २९

, • ।
निजगोगादे नेमियो, वरदाइ जिणवार ॥ ३०•

कुंडल सू कुल भाण, पथ आतुर पडै पमग ।
पप एकण आयो पहव, जोइसा उतन जवाग ॥ ३१

उछ रग राग अपार, आणै घर घर आरती ।
कमध जोइयारै कुटम, वाधावै जिण वार ॥ ३२

दलो अनै देपाल, भापै इम मिपर भपर ।
आ वीरम थारी इला, सलपावत सु प्रपान ॥ ३३

उण दिनरो उपगार, देपै अनै दाणै दलो ।
धर लपवेरै तु धणी वीरमदे वडवार ॥ ३४

रिमा देयण पगरेम, सूरा भड लीया सकज ।
वीरम तलडाणा वहै, दूार जपु परदेस ॥ ३५

आहेडे उजवाल, सलपावत रमता सराज ।
जद गोगादे जनमियो, सुण वीरमसु प्रधान ॥ ३६

• नं० २९ और ३० पूरे मूल पुस्तक में पाठ अस्पष्ट होने से नहीं बने ।

घुरै नंगारां घाव, हुय उछव घर घर हरप।
कुल दीपक जनमे कवर, गालण ग्रदवा ग्राव ॥ ३७

ऊच नपत उजवाल, वैर मनाहां वालवा।
जद गोगादे जनमियो, कुल जोड़यां पैगाल ॥ ३८

संकै नही संधीर, दिन उगै पसरा दियै।
वेढी गारो राठवड, वहै ग्ररोडां वीर ॥ ३९

जोइयां हूंत जीवाण, वीरमदे वीजै वरस।
मारु पेटा मांडिया, पोह ग्रंक वेह प्रमांण ॥ ४०

सक भड चढे सिकार, सभे छलासंवुर सुवर।
कमधज पीरांरी कवर, ध्रम पैरु दूधार ॥ ४१

तागा करै तिवार, हीक धीक लेता हीयो।
ग्राया फिरियादू ग्रसुर, दला तणै दरवार ॥ ४२

सक पग पान संभाय, मकै हाल छोड़ा मुलक।
वीरम सूर वीहड़िया, मैहजीतांरै माय ॥ ४३

सूण फरियाद सकाज, उससिया जोइया ग्रवर।
डारण चेह न दापियो, दलियै जोम दराज ॥ ४४

दूजै दिन दइवांण, दला पुत्रिचो वरदयो।
लपवेरै वीरम लियो, डारण ग्राधो डांण ॥ ४५

सारो कुटम स धीर, दापै तो लागत दला।
सकुज वाही साहियो, वले ग्रग्राजै वीर ॥ ४६

दलो चवै दइवाण, साच वाच भायां सुणो।
वीरम सूं चूकूं वचन, भो यण उगै न भांण ॥ ४७

जग तप तेज जुहार, तलवाड़ तूटो तरा।
उण दिन वीरम उवारिया, वम जोया जिण वार ॥ ४८

पिम्या करै जिम पान, वीरम तिम अत्रलो वहै।
जुडसी पेत जवान मैं, माभी दिन दोय च्यार ॥ ४९

छंद जात बे अपरी

दलै पिमती जिम जिम अत दापै, राव कमध जिम जिम अत रापै।
परजा भाड गनेर पजावै, ऊगै दिन फरियादा आवै ॥
अरि घर गजै पाग उवाणी, ममहर रो भूपो सलपाणी।
नाप भिच तिल मातर लागै, एकण जोर आपरा आगै ॥
पर घर मत्रु दुछर जिम पालै, हीद् आपम देणो हालै।
धूहड एक समै छत्रधारी, आहेडे चढियो अवतारी ॥
सज पीरा दरगाह सवायो, इक फरहाम निजर तद आयो।
आप रहण रिण बात उवारग, उदर उपनी बात अकारण ॥
काट फरहाम ढोल करीजै, मोलै कोमा सबद सुणीजै।
पूछै ताम भडा पूचाला, डारण आप जिमा दूठाला ॥
कैहे सुपह फरहास कटावो, घणी मगोढो ढोल घडावो।
पित ऐ वचन मुणै अत पारा, पाण जोड बोले पूजारा ॥
है फरवाम पुदाय हमारे, थान राम जिम धूहड थारे।
मुणै वचन धिक वीर सिघाल, जाणक जेठ सालली ज्वाल ॥
वाढ फराम वीर दरदाई, आप तणै मिरयात उपाई।
जड पिण ठाहे वृद्ध जग जाहर, मारियो एक वले मु जावर ॥
तेथी नफर करै केइ तागा, भय पड केइ जीव ले भागा।
करता कूक रुदर तन कायां, दलै तणी दरगा दरमाया ॥
मारा पाग वचन मुणाया, वीरमदे फरहाम वडाया।
सज देपान करै पग माहे, महजो दना जोइया माहे ॥५०

दूहा

करता कूक कुराल, आया फरियादू असुर ।
वीर फरास वडाविया, सुणजो दला सिघाल ॥ ५१

जोइयां मिले जै वार, कथन दला हूंतां कहै ।
वेडीगारो राठवड़, मारै सै काय मार ॥ ५२

मुड़ियां हीं नह मोस, मोस न वीरम मारियां ।
काम दलो कह मै कियां, दीजै किण नै दोस ॥ ५३

वै परधांन बुलाय, दिस वीरम दाबै दलो ।
अमां रीस न उपजै, षित अंत वैर षुदाय ॥ ५४

नाकी छिले निराट, दापै कुल नायक दलो ।
नर तो नेंइ नियापरी, वीरम सू जीवाट ॥ ५५

दलै कथन मुख दीन, कमधज हात कहाड़िया ।
आप वंट चोथां अमां, तूं लै वाटा तीन ॥ ५६

जोइयां रुप जिवार, दाषै कुल नायक दलो ।
वीरम तांसूं वाजियां, है जीतां ही हार ॥ ५७

वीरम सूं तिण वार, कहिया परधांनां कथन ।
आधी वांटे लेइ इल, नर वकवाद निवार ॥ ५८

सूरो कथन सुणेह, काहलियो केहर कली ।
आयर जांण अग्राजियो, मयद तणो सिर मेह ॥ ५९

मन धारे अभमांण, आपे सांमो ओलभा ।
दीसै तू भूलो दला, उण दिन रो अवसांण ॥ ६०

जगपत जोम जिहाज, कुल जोइयां कतलत करत ।
देषत नह मेलत दला, ए विसटाला आज ॥ ६१

ऐ तोले औराक, बोलण घड उवावरो।
मेल वचन नह मानियो, वीरमदे वैंडाक॥ ६२

पाछा आय प्रधान, कथन दला हूता कहे।
मरसी का तोय मारसी, जालण हरो जवान॥ ६३

कर भाले केवाण, नर वीरम सहजे नही।
देपे नह जुडसी दला, इण भव ओ अवसाण॥ ६४

कीधा पुन अनेक, ध्रूहड लपवेरै धणी।
डारण मड पिमिया दलै, अन नर पिमे न एक॥ ६५

कवित छपै

पोह जिह हीज प्रभात, पहल मिकार पधारे।
हुडवड भड हैवरा, निहस वाजते नगारै॥

डारण वीरम देहु, दुरग वहता तद दीठे।
पेप सुरग पिंजरो, उरहि परजले ग गीठो॥

पड आतुर तोपार, प्रगट नजदीक पधारे।
गटपत कुण इण गाम, चितहि राठोट उचारे॥

पूछ नकीव प्रमीव, स्याम सू अरज सुणाई।
दला तणो ददवाण, धर्म धावड वरदाई॥

तण मलपेम तिवार, ओह वीरम मम धारे।
वसुधा रागण वात, वे हद वोलियो वकारै॥

जयचद हरो जयचद जिम, हिंदू कमर वजग हियो।
नातहूँ पुन धावड हणे, कमधज विनो कायम कियो॥ ६६

दूहा

वीरम पाग वजाय, कल़ चाल़ै लीधो किलो।
दोड़ी भाड़ंगनेर दिस, धाहां देती धाय॥ ६७

ओइ नीयाव अचात, सोह भाई भड़ सांभलो।
वीरम पाग विहंडिया, सक धावड़ सुत सात॥ ६८

कूकी तणो कथन्न, दांणव सुणी देपालदे।
जोइयो पण लीधो जरू, इण भव पाणो अन्न॥ ६९

हिंदू देपे हेत, पांच दिनां मै पामणा।
सक धावड़ पंच साजिया, पल़ कीया रिण पेत॥ ७०

दुजड़ां हत देपाल़, दाखै वल़ देपाल दे।
दीसै तूं जायो दला, कुल जोयां पैगाल॥ ७१

सीस न वाधै सूत, वाध दला तै वीटियो।
अवही रीस न उपजै, कायर फोट कपूत॥ ७२

वोल कोल अरु वाप, दोय न जै देपाल दे।
जावां मै वेगा जुड़ां, वै वीरम वै आप॥ ७३

सूरै कथन सुणेह, दलै तणा देपाल दे।
अंबर छिवंतो ऊठियो, केहर ज्यूं कणणेह॥ ७४

पमंगा हुवा पिलांण, हूंकल दल तह मह हुऐ।
अंग भिड़े उवांवरो, जरदां कड़ी जैवांण॥ ७५

रुड़ै दमांमा राग, हूर अपछर मन हरपिया।
जंग मै चड़िया जोइया, धरे सीस धीयाग॥ ७६

छंद मोतीदास

धरे जद रावत सीस त्रियाग, विढे काहि ढोल वथोडे वाग ।
पिमै पल सावल ऊपड पेह, छछोहाए पार लहै कुण छेह ।।
अडीसल वीरम हतहा आज, सव्याजाए लेसिय पून सकाज ।
वुडवय पेहाय काठ त्रियाग, नागा अस धूज रमातल नाग ।।
विढवाय हाल दलो धरवद, उलटाय जाण असाढ्य इद ।
नरा मुप वाधेय सूरायनूर, हले दल साथेय जोगण हूर ।।
उमगेय साभल राड अगाम, तमासोये देपेत नारद ताम ।
आया चढ साड उमापत ईस, सजे वाय माल सूरा भड सीस ।।
उडे रज डमर व्योम अथाह, मिले निस जाणक भादव माह ।
दलँ कर वीरम हूताय दाय, उगता सुर वितलीयोय आय ।।
वुवे पड रोस अरराका धाक, हुवोहुव होय चहू बल हाक ।
ढमकैय वाहर वाहर ढोल, पैगा जड जीण दुवागाय पोल ।।
कोपे अड अ वर जोस करूर, सुणा वित लीधाय वीरम सूर ।
मजे वट सूथण जामियसार, जडे छकडाल कडी जोय धार ।।
ओपे सिर गूघर टोप अथाह, विणै दस-तानाय हाथ जवाह ।
जोड्याय साजण जैत जुहार, सुरा भट भीड छतीसु यसार ।।
दुवाहाय भीचक तेड दुभल्ल, अमरोगेय गालेय नेस अमल्ल ।
अमलाय वाधेय जोम उगम्म, हुवो भड साराये जीण हुकम्म ।।
अमोलग उजल गात असाध, मजे हव मापत वैग समाध ।
अल वलन लेतिय झप अपार, ताणे तग हाजर कीध तयार ।।
चढताय वीरम देवड चित, पला गुह आप राणी सुप्रवीत ।
तरेगल मागलियाणिए नाम, उभै कर जोड करी अरदास ।।
रचो कोई दाव पत्री रुढ राग, दलँ वित आज लियो रइवाण ।
जिज नर आज चढे किरणाल, सना चाय चीतविय सुप्रपान ।।

इसा थेय पून कियाय अनेक, आवे जद पून कियो इण एक।
मैकुबिय आज करो महाराज, सवारैय यलीजोय वैर सकाज॥

तवैगल रांणिल पहूंताय तांम, दलां थंभ वीरम कोप दुगांम।
जावै वित उभांय मूझ जरूर, सनंसेय सेस न उगैय सूर॥

गजां षल आज नदं पल ग्रास, दषै मुष हूंत अला दरवास।
ओजो हुंय आज चुकूं अवसांण, वकै नह वेद मुषां ब्रहमांण॥

जावैं वित मूझ उभां जैय वार, धरा नह छोल दियै इदूधार।
खला सिर आज न वाउंय षाग, जलो जल सायर लाग जलाग॥

तइ हवता कुंये ओलोयतन्न, करै दत देवण उत्तर क्रन।
तोड़ूं नह सिग सत्रां तरवार, सूरां कुण साष भरै संनसार॥

आंणूं तिल मातर जीव अंदेस, सनंसय मूझ पिता सल षेस।
आउं नह आज नवंनांय ईस, दिवाकर उगैय पिछम दिस॥

ढहूं नह आज गयंदांय ढाल, महेवैय लाजैय वंदव माल।
राषुं नह आज षत्री ध्रम रीत, सतो सत छोडेये कुंताय सीत॥

वदोवद धूहड़ दाष वचन्न, मेले नह चाल राणी वड़ मन्न।
दाषै तद वीरम कोप दपट, हमै सुण राणिय छोडोय हट॥

उछटैय चाल छत्री उजवाल, चवै गल पंडव सूंकल चाल।
ओपै तन साज झलाहल आव, सजो तंम आंण समाध सताब॥

अलोवल लेतिय झंफ अडोल, मुणै चितरांम समझ्झ अमोल।
रकेवांये पाव दिया रढ रांण, हुवो असवार सिधा हिदवाण॥

ताली मिल षेचर भूचर तांम, अपच्छर हूर धरै आयराम।
क्रहकेय वीर वैताल करूर, त्रहकेय राग सिधू रिणतूर॥
वभकैय सार धधकेय वाय, गैहकेय ग्रीध चहकैय माय।
ठहकेय ध्रीह त्रमागल ठोर, अपच्छर रथ्थ हकै चहू ओर॥

पल कैय पाग हल केय पाय, उचकेए छकेय माकर आप ।
डहकेय डायण वाय वैडाक, वहकेय रक हुवा हक वाक ॥
चहकेय चील पपी कल चाल, कहकेय रभ गलै चप माल ।
ग्वैताय वाजेय पोड रडक्क, धरा पुड धूजय गोम थडक्क ॥
वणे मनु दामण दीह वीचाल, मिले निम भाद्रव मेघाय माल ।
घमकेय गूघर पापर घोर, डला विच भग पडै चहु ओर ॥
मत्रा दिम वीरमदे मुभियाण, कमधज ढीलविया केयकाण ।
धाडायत वाहरवा रिण ठाण, दला मुह मेज हुवो दड वाण ॥
अडे मिर व्योम मजोम अरोड, रिमासु य आपडियो रायठोड ।
माडो पग धीर धरो मन माय, जोइयाय आज मको नह जाय ॥
पिमै फल मात्रल नागिय पाग, रुडै दल कावल मिधव राग ।
चवै हक ग्रीध वीरावाचेल, मिले दल दोय डग्गी मुहमेल ॥
गमागम आवट रुक गरीठ, रिमा पड सावल सेलाय रीठ ।
मत्रा दिम वीरम वाहेय मार, आजुणोय काल तणो उणियार ॥
थको कोइ माज मकै नही धीग, तइ मुप दाखेय दाद नसीग ।
चोटै पल धुहड लापइ चाक, वीरोलैय लाप पला वैयडाक ॥
पत्री गुर वीरम धुणैए पाग, विछुटोय जाणक साकल वाघ ।
चापे नर कोण वियो जुग चाल, करै कुण देपत टालोय काल ॥
टाडाहर जाहर वायैय टोह, लापा मुऐ आवग जायोय लोह ।
कटै केइ मूराय आवैय काम, नके केड कायर ओलाय ताम ॥
पड ताय देपेय भीचपचार, जोटयाय दान कीयो जिगवार ।
तानी मुप दान होतारिय ताम, धुने जद कावल गेह धाम ॥
गुणे जद गोहर टोल ममाव, आड जद माथेर पुन अनाव ।
अमन्निय नाजग गोन उठाग, जची छिव नाच अपच्छर जाग ॥
राणा वड नारिय धुहड नाम, घने जद वीरम नावर धाव ।
भनतिय उभिय पाधोर भाड तरी पग नेप विचार र गाड ॥

छाडाहर साभरण हिदुय छात, धरणा दल. नीठ दरसिय घात ।
संभाइये पांणव नागाय सार, हुवा हुव दोलाय आठ हजार ॥

वागा जम रूपी षत्री वैवाह, दलो भड़ वीरम. हूंत दुवाह ।
जारेय सैतीस सत्रां जम जाल., पाड़े रिण वीरमदेव पुंचाल. ॥

जीते जुध जाहर पारथ जेम, उभो देयपाल अग्राजैय एम ।
प्रफुलत देष पड़ो देयपाल., लोहां छक वीरम बोल लंकाल. ॥

षडो कोही मूझ तणो रिण षेत, साजे ओय आसुर पुत्र समेत ।
धणी राय सांभल. वैण सधीर, आली कोय वोलेय तांम अधीर ॥

भषू देयपाल. देऊं पल. भंष, धणी कुण आपैय मूज धनंक ।
सोलंषिय माधोय ओपम साष, पना दिस नांष दीसंन्यो पैयदाक ॥

सांमा पग धाणष रोप सधीर, तणै दंत हूंत हिलोलैय तोर ।
घात देयपाल. तणै तन घात, आहैड़ीय कीध प्रथी अषियात ॥

पनीयैय कीध पराक्रभ पात, हुवो निरलंग ऊभै कर हाथ ।
उजाले.य लूण धणी रोय आप, आहेड़िय पुगोय थांन उद्याप ॥
मारे रिण ताल. देपाल. अमीर, वरे रंभ सुग्ग पोहतोय वीर ॥ ७७

दूहा

साजे षला सधीर, पाटो घर वीरम पड़े ।
रहे उजागर चूंडरज, निज वंस चाढण नीर ॥ ७८

सूग पितु गेयो सकाज, वरस वीस काढे विषो ।
लोहा छैल. चूंडे लियो, रिधु मंडोवर राज ॥ ७९

धजवड़ हता सधीर, देवराज जैसीगदे ।
सेत्रावै राजेस सधर, विजै सहत नर वीर ॥ ८०

छाडा तीडा छात, वेपप सुध उवावरा।
वरदाई दिन दिन वधै, गोगादेवड गात ॥ ८१

जाहर पारथ जोम, वाळ धमळ छिलसै वरै।
भड गोगो थोगै भुजा, वडहत्त डिगतो व्योम ॥ ८२

अस भड भूळ असप, सलपाहर मेळे सकज।
वीरमदे रै वैररी, धरी गोगादे धप ॥ ८३

अन जळ पान अहोड, लीधो अग लागै नही।
वाप वैर किम वीसरै, गोगादे राठोड ॥ ८४

परणतै परजाव, इळ सिर पाटण अमर पद।
दरसण गोगा नै दियो, अगठ जळधर पाव ॥ ८५

पूरी दापे प्रीत, दणव रचावणनै दलो।
रीझ समापी रळाळी, निव मोटे सुप्रवोन ॥ ८६

अग वळ धरे अरोड, साच वाच मागे सकज।
अवर छिनता आवियो, गोगादे राठोड ॥ ८७

गोगादे गज गाह, नर नाहर चित नेमियो।
भड उण समै भनीजरो, माडे दले विवाह ॥ ८८

जदम चोक जेवाण, समपण विस पाटण सुजस।
जोया ओपम जानरा, साजे दलं सैमान ॥ ८९

मोह जानी मिरदार, इद ज्यु दो सजिया अलल।
पटी गज्ज इक पुरणरी, तोगापाने त्यार ॥ ९०

विध नित दापरमेप, आय मेरग कीनी अरज।
दीठो मैटयरै दला, एक धमळ गध एक ॥ ९१

श्रीमुष दलै सतोल, कहिया जद हूंता कथैन ।
आप धमळ थारो अमां, मुष मांग्यो लै मोल ॥ ९२

वचन सुणे तिण वार, ते धोरी मांगण तणो ।
झाटक कांधो जाटड़ै, नर कीधो नाकार ॥ ९३

आय रहण आरांण, केवियां रा चीत्या करण ।
दुझल धमळ लीधो दलै, जोरीवारै जवांण ॥ ९४

त्रहके तूर त्रमाळ, धोरा सिंधुरा धुवै ।
जांन दलो चढियो जरां, पौह छावण पूंचाळ ॥ ९५

वहतां पंथ विचाळ, सज तीतर दीधा सवद ।
जड़ काढण पिण जोइयां, गोगादे अरगाल ॥ ९६

तीतर तणा तिवार, दाणव सुण वायक दलै ।
सीष करे सोह जानसै, वळियो जूह विडार ॥ ९७

दलो समज दइवांण, घण जांणग आयो घरे ।
चूंडा दिस झट चालियो, आंटै धमळ उडांण ॥ ९८

मरद वेपारां माय, असी कोस काटे इला ।
आयो जाट उवांवरो, चूंडै पास चलाय ॥ ९९

दलो सकज दइवांण, पिता वैर मारै पहुत्र ।
वेर म करमो ळार वौ, कस चूंडा केकांण ॥ १००

सुत वीरम समराथ, उत्तर चूंडे आखियो ।
दीठा वायक दाखिया, हेरू पटके हात ॥ १०१

रे चूंडा सुण राव, कर सांजत चढ काछियां ।
जीवसी ज्यां जुड़सी नहीं, पोह इसड़ो परजाव ॥ १०२

अग कर रोस अघात, चूडे सु हेरु चवै ।
वप मो घमळ न वीसरै, नू किम भूलो तात ॥ १०३

नर कमधा चो नाथ, चूंडो हेरु सूचवै ।
दाणव सघारे दळो, पोहो गोगो पाराथ ॥ १०४

साभळ वचन सधीर, सारा राव चूडै तणा ।
क्रमियो गोणादे कनै, विपतै पार सवीर ॥ १०५

पथ काटे अण पार, मिलताहो दापै मरद ।
दाणव सघारे दली, साहे गोगा सार ॥ १०६

साभळ वचन सवोर, हेरु सू राजी हुवो ।
करै मैहर समपै कडा, वीरम रै नर वोर ॥ १०७

पोह घर मूछा पाण, पूतारे परगह पहव ।
सक गोगो मागे समण, जाळण पळा जवाण ॥ १०८

करण कमध सिव काज, जड काढण पिण जोइया ।
दिल चित मीया सोदिया, समणै वैणस काज ॥ १०९

मूरा कथन सुणेह, मामण रा साचा सवद ।
केवा काढण कोपियो, डारण गोगा देह ॥ ११०

छद त्रोटक

भट केवाय काटण अद भलै, दइवाण जुभाउऐ मेळ दळै ।
घण वोल धैनाहर जोस घणो, तैंहूय हगामोय कूच तणो ॥
हण होय हिमारप नाद हुवै, धूसा छक कावळ वैर धूवै ।
वर मिनह गोगाय वैर कजै, मिन जाण मिचानर भेप सजै ॥
जमजाळ पटी जन्दाळ जडै, उतनग भुजा जाम वोम ग्रटै ।
दसतान सरजत वद दिया, ओयणे दोय मोजाय भ्रोपविया ॥

जमदड्ढ बांमै अंग भीड़ जड़ी, सज पेटिय ऊपर सांवरड़ी ।
घण वज्जर काळ लुहार घड़ी, गुण भार अठार कवांण गहै ॥

नर नाहर साज तंडी वन है, अत वाढ अणी छड़ ओपवियो ।
लंयंकाळ कर.ळ सेलाळ लियो, तति अत्तिय जेरव होंय त्तिसी ॥

करवतिय ततिय जांण कसी, लड़वा सुत वीरम भेद लहै ।
दीय रूक अचूक रकेव डहै, तेयथेट असलिय पेत तणी ॥

वपवाह अली बंध ढाल विणी, मोहरां दस तीन उभै मुररो ।
तैय ऊपर सीस तठै तुररी, भड़ताळ चपां सैयचोळ भड़ै ॥

जमरूपिय सार छतीस जड़ै, वोला जड़ काढण उववरो ।
कैकोणीय पंडव जीण करो, सुज वायक पंडव संभळिया ॥

वप वाधेय जोस विलकुलिया, कध थापल रपत दूर कियो ।
दाषे मुष व्रद लगांम दियो, पेह भटक पीठ कियो षुररो ॥

सक गात कियो सुध साकुर रो, ध्रत गूगळ अग्गर षेव घजो ।
तन भीड़ियो साज जड़ाव तणो, पेसूज वणिय हद गात परी ॥

केयकांणि सिचाणि नैप त्यार करी, षोयले जद पंडव लेरषली ।
करती इम तंडव मोर कली, चत्रसाल अचप्पळ तेज चषां ॥

रस लैण लगाण उडांण रुपां, वध तेज समांण विमांण वहै ।
गुण वांण कवांण जीवाण ग्रहै, अंगराग वीणीयोये गात इसौ ॥

तथथये करंतीय रंभ त्तिसी, गहपूर अमाळ सिंधू गडड्डे ।
चक्रवत्त सिचणिय पीठ चड़ै, अस पेड़ेय ध्रूहड़ उंतवळो ॥

ते कोय चणै चौळ चाढे त्रसळो, चक्र च्यारुंय देस चळ चलिया ।
सोय पांच इसा भड़ सालळिया, सुत वीरम गोग प्रवीत सहां ॥

दिपैय मुष सूरज चंद दहां, जोइयां जड़ काढण काळ जिसा ।
दळ हलेय भाड़ंणनेर दिसा, गैग ढाळ जटाळ वैताळ गजै ॥

विकराळ वत्राळ ग्रमाळ वजै, दुवठाळ पडै धमचाळ दलै ।
मुजवा सिर घोर ग्रथार मिलै, ग्रोपेय ग्रसवार लोपार इसा ॥

जुग जेठिय वुडैय पाल जिसा, कळ चाळ पळा मिर चूक कीयो ।
उरसा हुंत जाणक उतरियो, घण ध्राह् दिरावण मत्र घरे ॥

कमधज्ज पडे ग्रस वैग करे, माझिय दळ दोउ कटे मरसी ।
हद ग्राज चकावोय राड हुसी, धुप ऊढ धरम तु रा धमसा ॥

दुपताय दहूलाय देश दसा, मिल सालळ गोगोय सूध मुणा ।
तेय काढण ग्राटोय वाप तणा, धजराज नगा धरती धममै ॥

भालाय सिर ग्रीवण भूळ भमै, सकवै रपु ग्राहण मालळियो ।
ग्रव घोर पेह् रिव ग्रवरियो, डहके पथवा सिर डवरियू ॥

कर कोड वैताळ कह कहिया, रुद्र जोगण भूत छके रहिया ।
केइ पेचर भूचर सग किये दोलिय फिर साद चुडेल दिये ॥

पटेय गीर भार ग्रठार पडे पुसियाल हुई रथ रभ पडै ।
डाकिय भड व्रहड वोम डहै, वैडाय ग्रस उजड वाढ वहै ॥

रिव धू धळ मडळ पूर रजी, वसरी जिम नास ग्रहास वजी ।
पथ सालळ जुथ दला फबळै, मिट तेज भासकर धार मिळे ॥

जड ग्रावध जोस मैं पाय जिसा, दळ पेड पत्री उनराद दिसा ।
ग्रह पर ग्रमाळ सिधु गडडै, पड ताळ तुरै ग्रह भार पडै ॥

डमर घण डाकण डाक डहै, तेतालिय ताळिय वैताळ ग्रहै ।
लागोय सिर ग्रवर रीस वधै, पडिया ग्रस गोगेय पार पधे ॥

डम साथ मवै भड ग्रोपवियो, देपैय छित्र ठाळोय काळ दियै ।
हद सुर माझी सतखेस हरो, ग्रायोय ग्रस पेडैय उववरा ॥

समणी तद सालऐ मीत्र विया, करहा भर नीर ग्रग्रय किया ।
कमधज पडे ग्रलगार किया, लपवेरे रो साह वमिद लिया ॥

दोय साद फोहो विपरीत दिया, सुतैय सुन लूणक सांभळिया ।
सुण साद भयंकर सांवगारो, जाग्यो दळ नायक जांमणरो ॥

दइवांण जुभाउय ढोल दियो, सुगनो अव्र तेड़ हुं वेग सियो ।
दापै इम सीआय हूंत दलो, भण आज मुनग्ग भूंडो क भलो ॥

लड़ काढण वैर परत लियो, कमधज घरां मूंय कुच कीयो ।
कर जोड़ सीयो अरदास करै, पण गोग अजु तीहै नीर परै ॥

सुगनीराय वैण दलै सभळै, किरणाळ सुतो सुप नोद करै ।
अस षेड़ कमंध जराइ इतै, आयोय भड़ काळजे उकळते ॥

वैरीय जड़ काढ पत्री विषमो, सुप्रवीत धुवे अधरात समे ।
सुंपै अस जेळय भड़ां सघरां, केवांणिय पापांय छेक करां ॥

रिम सीस आसो चित धार रळी, कमधापत भूपेय वाच कळी ।
चित देस दिसा नह चेतवियो, कमधज दळै सिर लोहकियो ॥

कट ओध अरि त्रीय इस कढी, घणहै सुप थाळ कटी घरटी ।
प्रिसणां घर धाह देवाड़ पड़े, चक्रवत महेवय नीर चड़ै ॥

कर जैत सवैर कढै कलियों, वेह सात्रव गोग घरां वलियो ।

दूहा

रिण गेगि कर रीस, दल्ला सिर झोकी दुझल ।
घरटी एकण घाव सुं, वड हुय वटका वीस ॥ ११२

तैं गोगा रिण ताळ, रिम सिर झाड़ी रळ तली ।
कट ओघण अरि त्रिय इ सकट, साठ सोना रा थाळ ॥ ११३

जें दिन दोयण जीत, वळियो काढण वैर नै ।
दाणव चढियोजेण दिस, पाय इयो सुप्रवीत ॥ ११४

दुभन पिता धिन वेस नव गढ हा, छात नरेस ।
दुभन पित धिन दलो उण, देस तिनो उदेस ॥ 	११५

कर पुररो नगामदे, पीठज माड पिलाण ।
पुगळ जाइ पहाइया, एकज पोहर उडाण ॥ 	११६

ममनक बावो मोट, फेर दियलेत्ता फजर ।
दाणव मुणिया धोरदे, पनरा कोसा पोड ॥ 	११७

अण भग वाह उभोय, मदु तणो दापे मरद ।
अस पोटा धुजे धरा, काकै कुमळन कोय ॥ 	११८

पोहर पुल पैतीस, कुकाउ जोयाँ कनै ।
पोहनो चडे पडाहियै, हैगु कोस छत्रीस ॥ 	११९

विधहै नुवहवात, मोह जानी माठी गुणी ।
दुजटा मुह पामो दनो, घात रिमा अरघात ॥ 	१२०

रिण रारो अणरेह, वहियो मुण चवरी विचा ।
धीर धरके उठियो, छोडे दुनहण छेह ॥ 	१२१

दापे धोर दुनाह, राहळियो गेहर गळी ।
चलचत नुगरो बोलियो, गणादे रिम राह ॥ 	१२२

नोरवा रग जैवार, पुग ने फेरा पहर ।
नरवा गोगेसू गरह, जग मिळ माटा नार ॥ 	१२३

परगो भड पुनाळ, तुरने तिरत नगार नो ।
नागार चढियो धीरदे, धेग गरका देगार ॥ 	१२४

[illegible] ।
[illegible] ॥ 	१२५

ऊपड़ रज अणपार, गिधिण जोगण गह गहै ।
हळ हले गो गादिसी, सजे छतीसु मार ॥ १२६

छंद त्रोटक

वप तेज हळाहळ वाद वहै, सक सूर छतीसुंये सार सहै ।
पैलां पत लैण वळी समथ, हूव होयक हूकळ वीर हथा ॥

ते वेठक भूपाय वाघ तिसा, डाढाळ कठठय गोग दिसा ।
वोहाळ पड़ैय अस मोड़ वंधो, कवली भड़ धीरोए नाह कंधो ॥

वप वाहर नाहर, जोम धके, जुध मांहि भिड़े नर जोध जके ।
दल पायल थाठ हलै दुभलै, हुव जाणक सांमद सात हले ॥

डाकिय भुज अंवर धीर डहै, वह पूर विमाण कदां ग्रहै ।
भुरा मण तीन पुलाव वपै, चढिया पल पावण चोल चपै ॥

प्रथमी दस देसांय भंग पड़ै, ते भार दलां अहिधुह अतड़ै ।
घण घोर आडमर पेह घणी, ओपेय जिम नपत्र सेल कणी ॥

काको जुध मांगण गोग कना, मिलाय हुय मारग हेक मना ।
षिध लागेय वाज वग्ग पड़िया, अरजीत गेया नही आपड़िया ॥

वप सोच वले तज मांण वहै, रायठोड़ अगे अध कोस रहै ।
दल नाथ हलै पंथ देस दिसी, असधीर अफालिया कोस असी ॥

वकवाव वधारण वेद भळे, वह पंथ विचारियांम मिलै ।
पुछैय मिल जैनुय वात यहां, सिघ गोग तणो सक साद सहां ॥

सुंणतांय मराइके गलही, कर जोड़ हकीकत साच कही ।
भड़ पोस छला मद गैभरियों, ओ गोगल छुसिर उतरियो ॥

सूत्रणे अर नेड़ोय संभलियो, गल चाळण धीर विळकुळियो ।
भुज पोरस मूंछ भुंहार भिड़ौ, षेधे चड़ आतुर वाज षड़े ॥

सज राग सिंधुय नीसाण सहा, अवली तद तूर अवाळ तहा।
घण वेढक गोग दिसी भिधि रिया, पिंड सामत पूण्य पाखरिया॥

किरवाण विमाण ग्रह ग्रहिया, रिवा ढाण मसाण छके रहिया।
गत घोर अरगज है गहरै, अग पग अमूजैय माय मरै॥

अळगासुय देपेय थाट अरी, तैयघीर हियै विच धकधरी।
पैय काढण वैर पत्री प्रगटा, घण सालळ सावण मेघ घटा॥

पड वाज नजीक आया पडता, तीपाय भड काळजै ऊकळता।
लकाळ आयोय धमचाळ लिया, छळ चाळ वीरो जमरूप किया॥

सुताय दळ गोग तणा सधरा, अस आण अचाणक लीधै डरा।
सुण देप पळा भट गोग सही, जागे रिण सुताय काळ जुही॥

विपडी रिण चामड तेम विणी, तिण वारसो वीभड गोग तणी।
विटवा कजवीरम ओपम वीरम रो, जोइया दळ सोस जाणै जमरो॥

पळ फोज कमधज देप पडी, चवळापत जाणक पप चढी।
वळ नाहर गोगाये देव वरै, कव पान किमुय वापान करै॥

कस आवध साज वधे कडियू, धुव सालळ सामोय ध्रहडियू।
केविया मिर गोगे कोप कियो, डळ मायण वावन उमसियो॥

चप्प चोळ मुछा नु यहार भिटै, ऊनरग भुजा ब्रहमंड अडै।
ट्रव रोन पडो मोह गाऊ हुणो, तेय नीर मजे दरियाव तणो॥

विध तीर गुणांय धुंकार वजै, ग्रह जाण ग्रपा रुत मेघ घुरंजै ।
संक कुरम सेस सळंसळिया, ग्रत वेध दहूं दळ ग्राफळिया ॥

उवलां भुज यूं पग व्योम ग्रड़ै पंयलां सिर मार ग्रपार पड़ै ।
जोड़्यां जद भारथ वाज जुवो, हक होय ग्रपावंत साथ हुवो ॥

झिलियां मुंह घावांय हुंत झरै, पिड वेदल व्याकुल नीर पवै ।
लड़तां जद कानोय धीर लियो, कूड़ जद रांणक दात्र कियो ॥

उर दादर घायक ग्रोळवियो, कल़ मेल़ण गोग कनै क्रमियो ।
भड़ रांणक गोगाय हूंत भणी, तैयवात हळाहळ मेळ तणी ॥

वध वीरम पाग दलो वहियो, सोइ भिच दलो तैइ संग्रहियो ।
घर दोय मिलो कर हेत वणो, तिल सोच रंयो नही वैर तणो ॥

कर जोड़ उभै कुरनस करे, धुववा फिर धीरदे हूंस धरै ।
हक होयकदादर फूट हियो, पोह नीर जीते जोड़्यों जुपियो ॥

सोषेय जळ सायर रो सधरो, वळ दाप विरोवर उवंत्ररो ।
क्रमियो जद रांणक कूड़ करै, धुववा फिर धीरोय हूंस धरै ॥

जपियो जद रोदांय घात जुवो, हुवा सुर गोगो हुसियार हुवो ।
हुसियार संसार साधार जुवो, दायतार जूझार सलष हुवो ॥

सत्रु चुर करुरह गोग सही, गह पुर करां समसेर सही ।
सह जीत पूवींत दळां सवळां, दोउं वेध दरसिय दोय दळां ॥

रिप नारद जोगण रभ गळै, वैयवार अडी मल नोह मिळै ।
गज सार अपार तोपार गुडै, रणकार अपार नगार रुडै ॥

वैयवार उरा तरवार वहै, कोयवार चडी जैयकार कहै ।
भय आयर कायर पेत भजै, सजहार गळै जटधार सजै ॥

वैयवार जुझार गजा मुरडै, जिण वार गोगोय जोयार जुडै ।
भुज धार वभार दुरार भडा, छणकार पगा रणकार छडा ॥

रिण रार सुरा अयगार रुडै, भुंय भार उतारण काज भिडै ।
पग धार गजा असवार पपै, जैकार जट धार जैकार जपै ॥

घुव ताळ धुवाळ कराळ धुवै, वैताळ धु वाळ पपाळ वजै ।
सेयलाळ धडाळ भडाळ सिलै, हद पाळ नदी लोहाळ हलै ॥

जरदाळ घटाळ दंताळ जई, भुरजाळ घडी विकराळ भई ।
वैयमाळ कराळ धराळ वहै, पंगाळ दटाळ भोपाळ पैहै ॥

प्रळै काळ सेलाळ धडाळ पडै, कडियाळ चुनाळ तइ कडडै ।
ववाळ वियो रायपाळ वरै, पिमनाळ पुराळ है नाळ पुरी ॥

थम चाळ अचाळ नमाळ घुरी, घ्रवहाळ मराळ दताळ धुपै ।
भोयपाळ पम्राय गूदाळ भपै, चोटीयाळ लिया अत वोम चडै ॥

पग्नाळ घडा लोहाळ पडै, घडियाळ वजै किरमाळ घटी ।
पेतपाळ रजै वैयताळ पडो, घर व्योम पताळ घडहडिया ॥

उर दोनुंय माजिय आहडिया, जोड़या अरु धूहड़राव जुवो ।
हर हूर रथां उदमाद हुवी, भूखीय थट ग्रीधरण मांस भपै ॥

पड़ सूर धधकैय सीस पपै, गज थट्ट गरट्ट ऊछट्ट गूहां ।
अरण थट्ट भिड़े उमंगे असहां, पगभट विकट्ट कुवट्ट पिरै ॥

चट पट्ट आंमंपये ग्रीध चरै, तद रत विकट्ट उपट्ट तरै ।
घरण मट्ट फुटै पर रिट्ट धिरै, घम चक्क भभक्क थर थरक्क धुंवो ॥

हुव ठक्क अरक्क थरक्क हुवो, कंधड़क्क वड़क्क वड़क्क कड़ी ।
सजड़क्क जड़क्क वैहै सजड़ी, सबड़क्क वड़क्क भपै संवळा ॥

गुडळक्क गळक्क गीघांरण गाळ, रही ढक्क विठक्क धधक्कर जी ।
विरहक्क कटक्क ललक्क वजी, फिफरक्क फरक्क फरक्क फुरै ॥

घरण डक्क त्रबंक्क त्रबंक्क घुरै, वप श्रोरण धधक्क धधक्क वहै ।
रथ रंभ अरक्क थरक्क रहै, जग टोप कड़ी जडळक्क जड़ै ॥

पिड लोथ दड़क्क दड़क्क पडै, हुय हक्क अछक्क कढ़क्क हुवै ।
ग्रिधरणक्क गहकां चंडीं गुरवे, घड़ दोय अकारण होय ॥

घड़ी षित सूर वरै रंभ हूरषड़ी, इम जोस दोउं दळ आफलियूं ।
तटीय इळ अंत रळतळियुं, षित सूरज राह निवाज षड़े ॥

लषवेरो अनै नवकोट लड़ै, बेयभीठ अरीठ गरीठ भिड़ै ।
पांडीसांय रोठ नीत्रीठ पड़ै, काळ कीठ वळिट्ठ सदीट्ठ कियै ॥

दोउ वाम भकोयन पीठ दियै, झिलमा सिर वीजळ वाढ जडै ।
घण जाण कासी ठठियार घडै, पडै'य छक लोहाये सीस पपै ॥

थुडबै विटीया रिणताळ धकै, धारै सिर अवर धुहडियू ।
अरिया सु ए गोगोय आहडियू, रिण जग तुरग सुरंग रुळै ॥

पड कायर भग विभग पुळै, पुल डाडर चग सु चग षगा ।
उतवग बरग बरग अगा, धजरग पतग निढग घडा ॥

भुज लाग उमग निहग भडा, गुण बाण कवाण जुवाण ग्रहौ ।
वप ढाण वेधाण सधाण वहै, अत साण वापाण आराण अपै ॥

पड सुर धधकैय सेस सपै, धुव घाण मथाण मसाण वरा ।
गिर वाण विमाण पडै गैहरा, किरवाण जिवाण केकाण कटै ॥

जमराण गोगो अवसाण जुटै, असमाण सु आण विमाण अडै ।
जमराण जु आण आराण जुडै, केयवाण वहै तनत्राण कटै ॥

जमराण दोहुँ अवसाण जुटै, धुपवेध दळा निय साण धुवै ।
हिंदवाण अनै तुरकाण हुवै, पैय जोगण सुराय श्रोण पियै ॥

दंदैय छिव लुहर रभ दियै, विडता सुत वीरम देव वकै ।
शत्रु कोय धको नह साज सकै, भड धीर सधीरह व्र द भळै ॥

मुह मेज कमधज हूँत मिळै, गज ढल्ल अचल्ल हमल्ल ग्रहा ।
नहवल्ल सिंधू नवरै मल नहा, वरघल्ल कगल्ल कडी वडडै ॥

तन वाधेय दोलत तास तणौं, भव मत्त सारू कवि षांन भणौ ।
तेय कीरत गोगैय राय तणी, घण सज्जन मात पित्र भ्रात घरै ।।

करड़ै दुष आप सिहाय करै ।।

संपूरण रूपग गोगादेजी रो ।
आठा पाड़ पानजी रो वणायोड़ो ।।

———

घरोरो बुरो मांन्यौ । तिण समीयारी साष —

नीसांणी

पत्रर हुई है वीरमै मन धीर दंधाई ॥
जायै सब ही लूणीयांण रापे सरणाई ।
कुसली वर नो डाईयां संग जाय सिपाई ॥
समाधि आंण सलपीयांण तै असमाधि उपाई ॥१

वार्त्ता

अत्रै मालैजी नै वीरमजी सासती चित षाति पडती जाय । मलीनाथजी धरतीरा धणी तिको वीरमदेजीनै क्युं ही दे नही । वीरमदे दातार—झूझार । संसार उपर वहै सासता धाड़ा आणै । तिको इण भाति काम चलावै । गरीबरी प्रतपालणा करे । तिकौ स कोई चारण—भाट स कोई जस भेट ल्यावै । भला बोलै तिको मालाजीनै सुहावै नही । आपरा रजपूतानै वरजै । वीरमदे कनै मती जावौ । बैसो मती । धाडा साथे मति जावौ ।

सो एकरसुं वीरमदे सलपावत एक आप असवार नै एक साथे पालौ लेनै तठीनै मोहिलारा गाव वठै बीकानेर परानै तटी हेरो घोडीयारो कराय नै उठीनै चढीया । वरसालारा दिन था । सो उठै मोहिलारो देस वापरावटी कहीजै छै । तठै घोडीयां निपट घणी छै । अमोलक हुवै छै । तिके छूटी मोकला तालर माहे चरै छै । सो उठै माछर डास घणा छै । उठै वीरमदे जाय नै धूंई कीी । घोड़ीया सगली माछरारी संताई धूंई उपरि आई । तिको वीरमदे पाडवा नै मारिनै घोडीया ले नीसर्यौ । तद मेहिलारी वडी वार वहै छै । सो सात वीसी कवर पापती तलाव झूलता था । घोडा असवारीरा कायजै कीया उभा था । तठै किणहेक जाय नै वाहर घाली । तरै कह्यो साहण रावलो लीया जाय छै । तरै कवरां कह्यौ साथ पैलो कितरोयक छै । तरै उण कह्यो एक असवार नै एक पालौ लीयां जाय छै । तरै सगला मोहिलारा कवरा वात मानी नही । इसड़ो कुण छे ? इण ठोड़सुं एकल असवार एक पालो रावलो साहण ल्यै । युं कहनै वाहर चढीया । आगै घोड़ी लीया जाय छै । दिन घणो चढीयौ छै । वीरमदेजी अमल घणो षाधौ थौ । तिणरी गरमी घणी हुई छै । तितरै मारग विचै एक गूजरारो वाडो आयौ । तरै वीरमदेजी माहे गया । आगै गूजर वडो ब्रष आवर ? छै । आगै गूजरी गरढी पीढी माथै बैटी उन करै छै । केयक माटा दहीरा भरीया छै । केयक माटा दूधरा भरीया छै । केइक माटा चाछरा भरीया छै । तठै वीरमदेजी नैड़ा आय नै कह्यो माता डोकरी थोडी सी तो चाछ पाय । तरै डोकरी वीरमदेजीनै कह्यौ वेटा दूध दही तो परमेश्वरजी घणो ही दीयो छै । तोनै भावै जिक्युं हेठो उतरि नै पी । तरै

वीरमदेजी घोड़ासू हेठा उतरीया नै त्योरदान काढीयो। माटा उतरा आय नै मागे १ वो दहीरो पी गया। माटो १ दूध रो पी गया। उभा थका हीज हाथ पोयासु लुया। कुरला विण कीवा चढि नै आया हीज पडीया। नै लारासु सातवीसी कवर ताहर दोडीया छे। तिको ठण गूजरी रै वाडे पोजारा पोना आया। गूजरी नै कयो माता गोरस पाय। तरै डोकरी माता कह्यो ऐ माग दही दूधरा भरीया छै। मोकलो चाडू माटा भरीया छ। थ री दाय आवे सो पीवो। तरै कवरागे साथ घोडासू उतरि नै हाथ पग धोवण लागा। अ‍ऽपा छाटण लागा। चाकरानै कह्यो पाणी पीवणरा वाटका काढि ल्यावो। तरै पइसा ६ भगत ऊछ भरी छोटी वाल्की ल्याया। सो सातवीसी कवरा वाटक्या करि नै माटो १ दहीरो पीवो। तरै उण गुजरी कवरानै पूछीयो–बेटा थे किम जावो छो। तरै कवरा कह्यो माता डोकरी एक असवार नै एक पालो माहरी घोड़या लीया जाय छै। तिणरी वाहर आया छा। ते दीठो होय तो बताय। तरै गुजरी कह्यो मैं दीठो। अठै आयो थो। वीरमसू उतरिनै माटा २ दहीरा पी नै गयो छै। तिको वीरा थे अबे उण वागे मती जावो। तरै कवरा कयो माता डोकरी थू म्हानै किसै वासतै वरजै छै। तरै डोकरी कह्यो बेटा उणरी इसडी फुरत दीठी छे। थाहरी पिण दीठी छै। थे मत जावो। तरै कवरा कह्यो बाइ थू इण बातमें समझे नही। कांई हुवो किण ही घणो पाघो तो। पाया तो नन हुवै नही। तरै डोकरीरा तो वरजीया कवर लागा नही। कवरा घोड़ा आगा पडीया कोस ७ तथा ८ गया। वीरमदेजी नै कवरारै साथ निजर देटालो हुवा। तरै वीरमदेजी चाकर नै कया। थू घोडी लेनें हालतो होय। वीरमदेजी वाड्यारो साकड़ो सेरयो थो तठै उभा रह्या। सो उठै मोहिलारा कवर उतावला आया। तिको वीरमदेजी बडा तीरदाज छै। तिको कवाण झाली। सो कवाण दीनी। तिको कवर ६ तथा ७ तीरासु मारि लीया। जिणरै तीर लागे तिणरै दुवासु नीकल जाय। यु करता पाच सात सिरदार कातु मारीया। तरै मोहिलारो साथ भागो। तरे वीरमदेजी वानै घातीया। घोडानै पुरी कराय नै उपरे नाखै। पावतीसु तीरसु मारै। वीरमदेजी हाथरो तीर पांवडा ५०० पाच सै उपरै जातो पडे। तरै मोहिलारा कवरा दीठो। नाठाही छूटा नही। तर कवरा उतरिनै दाता तिणा लीया नै कह्यो माने जीवता जाण द्यो। तरै वीरमदेजी कयो हथीयार परा नाखो। तरै उणा हथीयार परा नाखीया। तरै वीरमदेजी सगलारा हथीयार भेला कराय नै भारा बधाया। भारा कवरारै माथै देनै मुँहडा आगै करि लीया। उणारा घोडा था तिणरी डोर उणारै हीज हाथे दीनी नै मुँहडा आगै करिनै माहिलारा कवरानै मंडोवै ले आया। सो इण वातरी मगन(?)हीनै इचरज हुवो नै वीरमदेजीरै अन्तर मागलीयाणीजी थी। सो निपट समझदार छै। तिण वीरमदेजानै कया आपनें इसडी वात कीनी न जाजै। एक तो आप इणरो जित लावो। पर इणा री गत गमाइ इजत गमाई। तिको इण भांति श्री परमेश्वरजी अति सराव न छै। तरै वीरमदेजी मागलीयाणीनै कयो। अबै मागलीयाणीजी थे कहो ज्यु करा। तरै मागलीयाणीजी कयो जिके गाव माहि च्यार सिरदार हुवा तिणारी वगी, भ इरे माइ बतारी देगी इनान परगना। इणा रा हाथ ये र परा लिया। इणा रा पोना मित ल्याया तिरा इन दायजा परो दियो। तरै वीरमदेजी माइ उवरी देगी इना उजूरी देगी परगाव दत दायजो मेला जाणा देने सीख दीवी। तिके आगै ठिकाणै गया। तठा पछै

कितरेक दिने वीरमदेजी थटारै पैडै पातिसाही घोड़ांरी सोवत आंवती थी तिका वीरमदेजी मारि लीधी। घोडा लेनै महेवै आया।

इतरामै घोड़ारी पुकार पातिसाहजीरी हजूरि गई। तरै मलीनाथजी वीरमदेजीनै तेड़िनै कह्यौ। वीरमदे मांहरी कितरेक ठकुराई छै। जे पातसाही सोव्त मारै तिणनै म्हे राषां। सवारै पातिसाही फोजां आवती तरै म्हा वतै थारो उपर कोई होसी नही। थे थाहरो मुल देषनै रहो। तरै वीरमदेजी रीसायनै कह्यौ। मांहरो फाड्यो म्हे हीज सीवसा। इतरामै वीरमदेजी उपरै पातिसाही फोजां विदा हुई। तिका महेवा नजीक आई। तरै पातिसाही फोजरा प्रधान मलीनाथजी कनै आया। कह्यो। थाहरै भाई वीरमदे पातिसाही सोवत मारी तिको किसै वासतै ? कैतो थे घोड़ारो मन मनावो। नही तर म्हे थाहरो देस षराब करसां। तरै मलीनाथजी उकील प्रधानाने कह्यौ। म्हे तो पातिसाहरा हुकमी छा। ओ वीरमदे नै ऐ थे। थाहरी दाय आवै ज्युं करो। इणरा गाव पिण जुदा छै। मांहरा कथनमै ओ न छै। थाहरी गता गम आवै ज्युं करो। तितरै पातिसाही फोजा महेवासुं निपट नजीक आई। मालैजी उतर दीयो तिणरी षवरि वीरमदेजीनै हुई। तरै आपरा साथरां रजपूतानै कह्यौ। आपे पातिसाही फोजासुं वेढि कीयां पड़प नावा। मालैजी नै जगमालजी तो पोत काढि दियाल्यो। आपरी वसीरो लोक हुतो तिणनै थलीनै विदा कीयो। वडो बेटो देवराज लोकरै साथे दीयो तिको वसी लोकनै लेनै थलवट माहे गयौ। आप असवार २०० साथे लेनै सेमवालो १ मागलीयाणीजीरो साथे लेनै टालो दे गया। तिको जांगलुनै षडीया। वासै पातिसाही फोजा हुई। आगै वीरमदे नै पाछै पातिसाही फोजा। अबै वीरमदे सलषावत नै बाहादर दाढी नीसाणी कहे।

नीसांणी

मोहर वीरम वांसै पंथार जांगिरु आया ॥
बीमल मोकल भारमल वड़ हठ रचाया ॥
जिगटै हथ कटार मल पुत्र मुंजै जाया।
वीरम कारण सांपलै सिर कीया पराया ॥२*

वार्ता

[illegible] वीरमदेजी पातिसाही फोजा लीयां जागलु आया। जठे उठै मूजावत [illegible] [illegible]। [illegible] जागलु कोस १ नेडा आया। तरै आदमी २ मातबर वीरमदेजी मेलनै

---

* [illegible] वीरमा[illegible] की नीसाणी नं० ३८ का परिवर्तित रूप है।

पाडिनै । वीरमदे तो उदारी घोपरीमैं छै । पगारी पाल माहे न छै । सो थे उदारी घोपरी पाडौ । ज्युं वीरमदे नीकलै । तरै तुरकां कह्यो आ कुण छै । तरै किण हेक कह्यौ आ डोकरी उदा मूजावतरी मा छै । तरै तुरकां डोकरीरो वचन सुणनै उदानै परो छोड़ीयो । तिको उदो जागलुरा कोटमैं आयो । वीरमदे तो सुहाणा नै गयो । आगै जोयारो मामलो करारो द.ठौ । तरै पातिसाही फोज अठासुं पाछी वली ।

वीरमदेजी जोईयारै देस देपाल कनै गया । आगै जोईयौ देपाल बीजाई जोईया सिरदार दाण उगरै थो तठै दांणी चोतरै आया था । तिण दिन वीरमदे सोहाणारै तलाव आंणि उतरीया था । सघरी छाह देषनै देपाल जोईयो दांणी चोतरै बैठो थो । वीरमदेजीरो साथ देपालरी निजर आयौ । तरै आपरा भाई बंधानै देपाल कह्यो । जिसड़ो राठोडांरो साथ हुवै जिसडा दीसै छै । तरै देपाल आपरा बेटा जैतसीनै कह्यौ तु षबरि ले आव । ओ साथ कठारो छै ? तरै जैतसी आपरै घोड़ै चढिनै षबरि करणनै आयौ ।

आगै वीरमदेजी बैठा था । उठै जैतसी आय जुहार कीयौ । वीरमदेजी पूछीयो आपो कुण ठाकुर छो । तरै जैतसी कह्यौ । हुं देपाल जोईयारो बेटो छु । तरै वीरमदेजी जैतसीनै आघो बुलायो । मिलीया । मिझमानी कीनी । आपरा माथारी पाघ जैतसीरै माथै मेली । जैतसीरी पाघ वीरमदेजी मेलीनै कह्यो । जैताजी देपालजीनै वीरमदे सलषावतरो जुहार कहज्यौ । वीरमदेजी पाघ जैतारै माथै मेली ।

तरै सांवणी कनै उभो थो नै ढाढी बहादर हजूरि उभो थो । तरै सांवणी माथ धुणीयो नै कह्यो । जे वीरमदेरो माथौ इण धरतीरै आटै जासी । इतरै जैतसी सीष करि देपालजी नै षबरि दीनी । जूहार कह्यो छै । वीरमदे सलषावत छै । महेवासुं आया छै ।

तरै देपालजी उण सायत आपरो साथ लेनै वीरमदेजी कनै आया । बाह पसाव करिनै मिलीया । वीरमदेजीरो घणो आदर भाव कीयौ नै सुहाणागढ माहे वीरमदेजांनै ले आया साथ सामान सूधा । वीरमदेजी रै प्रधान दोलो गहलोत छै । सघरी जायगा डेरो दिरायौ । घास पांणी घोडांनै दाणारो जाबतो करायो । भली भांति महमानी करि नै वल कराई । घणा जतन कीया ।

इतरामै वीरमदेजी दोला गहलोतनै देपालजी कनै मेलिनै बात कराई । मांहरो च्यार महीना पडपाव करो तो म्हे अठै रहा । तरै देपालजी मनमै विचार करिनै दोला गहलोतनै कह्यौ । म्हे महेवै आया जदि वीरमदेजी मासु बडो उपगार कीयो छै । अठै घोड़ा रजपूत

गाय गोठ छै सो वीरमदेजीरा छै। दस भाइ म्हे लूणा जोईयांरै डीकरा करेछे। त्यारा गढ सुहाणा माहे दस हैसा छै। त्यु इग्यारमो हैसौ वीरमदेजीरो छ। यसीरा लोकनै घर बताया इग्यारमो हैगो दाणमै करि दीयो। तिको रोजीना दाम ढाल भरीया आवै। आपरी रहवासनै वसीरां लोकनै गाव बडेरणो बतायौ। जठै वीरमदेजी जाय रहवास कीयौ।

वसीरा लोका पिण जाय वास कीयौ। वीरमदे वडो रजपूत हुवो। पाक्तीरा गावांरा रजपूत आय नै वीरमदेजीरै वासि गाव बडेरणै वसीया। दिन २ ठकुराई वधती जाय। दाणरा नईसा निपट घणा आवै। तिके रुपीया ढाला भरिनै वहचीजै। वीरमदेजीरी ठकुराई निपट जोरै चढी। तरै देपालजीनै वले कहाडीयौ। इतरामै तो पड पाव न हुवै। तरै देपालजी टालिमा बीस पचीस गाव दिराया। वीरमदेजीनै वीरमदे घणा रजपूतमै जडाणो सात सै असवारारी जमीत हुई। ठकुराई जोरै चढी। तिण समीयारी नीसाणी।

नीसाणी

ऐहज वीर मराठ वड सलपाणै जाया।
कढि कटक्कां लघीया देपाल ठमाया॥
नीर मनतु सारै आपणै घर माहि पराया।
झलर पपरीया वता वीरमदे आया॥
नेप धीयां अनिपाईया पेपि पावत्र नदे।
चीहल मो हला सापले नित्र कढन भदे॥
लऐ मरोटह पटणु नित धरम वहदे।
देस सम पेराणीया सहवीर वसदें॥
वडे दें पन धलीया परिहस पनदे।
नेहादर उचमि दाणीया नडे रायसल पहदे॥

वार्त्ता

वले वीरमदेजी दोला गहलोत साथे देपालजी नै कहाडीयौ। इणा रोजगारा उपरा इणा गावा उपरा म्हारो पड पाव नही। अठै परदेसरो मामलो। घोडा रजपूत राखीया जोईजै। चारण भाट आवै तिणनै च्यार टका विनारा दीया जोईजै। पटदरसण नै सेर आटो दीयो चाहीजै। आया गया रजपूतनै रोटी खवाडी जोईजै। सो थे क्यु दाण माहे इधको हैसो कराय द्यो।

तरै देपालजी सुणिनै आपरा भायानै कह्यो। वीरमदे वडो रजपूत छै। आपासु वडो उपगार कीयौ छै। आपा कनै वीरमदे कटा पिण वायरी मारी कोयल आवै ज्यु आयो छै। सो थे इणानु दाण माहे हैसो पाचमो कर द्यौ। तरै देपालजीरां भायां मतीरा कह्यो। आप

वडेरा छौ। आपरो कीयो कछू लायक छै। तरै वीरमदेजीनै हैसो पाचमौ कर दीयौ। तरै वीरमदेजी वड़ेरणै राजस्थान घणा रजपूतासु सुखै राज करै छै। वडेरणो गांव सुहांणासुं सातां कोसां उपरा छै।

अबै कितराइक दिन वितीत हुवा । तरै वीरमदेजीरा लोक रजपूत जोयांरी धरतीरो विगाड घणो करै। तरै देपाल नै सगला कहण लागा। आ थे किसी उपाधि पाटी। वीरमदेजीरा लोक दीठै दावधर। तीरो विगाड निपट घणो करै। तरै देपाल जोईयो गाडी जोतरि नै गाव वडेरणै वीरमदेजीनै ओलभो देणनै आया। आगै वीरमदेजी मांचै वैठा दाड़ी सवराता था। सो देपालजी आयनै जुहार कीयौ। सो वीरमदेजी माचै वैठां हीज जुहार कीयो। सामो माचो पडीयो थो। तठै देपालजीनै कह्यो थे वैसो। सो देपालजी मन माहि अटक लीयो। जे धरती माहरी माहि रहै नै मो आया उठि उभो न हुवै। तरै देपाल बोलीयो। वीरमदेजी म्हेतो थासु काई भुंडी न कीधी छै सो थे माहरी धरतीरो विगाड करावो। तिणरी साष।

नीसांणी

वीरम असी तो साझि कै किते गुनह जाय खवंदे।
मुणे सलप वनीडं कीया हुरतांण फुरंदे ॥
हैकण थेक न मावही दुय खग लोहंदे ।
हेकण झल न मावही दुहुँ सीह मुकंदे ॥
जोईयां भाल षहडीयै कांम चालै मदे ।
दुय घर डायण परहरै गांवै विढहदे ॥

वार्त्ता

देपाल वीरमदेजीनै कह्यौ। थे माहरी धरती माहे रहिनै मांहरा हीज देसरो विगाड करावौ छो। सो भली वात। एक घर तो डाकणि हुवै जिका ई परहरै छै। तरै वीरमदे कह्यो देपालजी थे कहो तिका वात साची। जो डाकणि भूषी हुवै वाहिरलो न मिलै तरै घररा नै षायक न षाय। तो बीजारी किसी वात। नीसाणी तिण समीयारी।

नीसांणी

वडा दलै देपालदे हर पाल सरोवै।
मदो लूणै हंदीयै सवल जोधोवै ॥
मुह अपै वीर मराठ वडए नलहन रोवै ।
डायण किण ही न परहरै जो भूषी होवै ॥*

---

* यह नीसाणी या वीरवाण में प्रकाशित नीसाणी सं० ४३ और ४४ परिवर्तित रूप हैं।

वार्त्ता

तरै वीरमदेजी देपाल नैं नाहर रो हवाल दीयो । जे थाहरा देसरो नाहर म्हारी बछीया ढाय सगला मारीया सो थे मरावाया । तरै देपाल वीरमदेजी नैं कह्यो । बड़ा ठाकुर इसड़ी वात अनाहरी काई करै । नाहर निरदोस मरावाया लागे । थ हुवै जो निण हा वात किसा उपाव करणो हुवै तो थ जाणो । तिण समायारी ।

नीसाणी

दला कु लाजै तमी लो भार जूवारा ।
चोहिल माजि अपणा वीर चडै मवारा ॥
तु लेपो लपिवाईयै रेनत मतारा ।
वीरम देम दिपावीया सिर देवण हारा ॥
वीरम न्याव न भाव ही अनीयाव पीयारा ।
सेई रोजे भिस्त जाय त्या न्याव पीयारा ॥

वार्त्ता

देपालजी वीरमदेजी नैं कह्यो थांहरै नैं म्हारै वात विगाड़ी छै । थांनैं जोइयांनैं घरनको विगाड़ करण देणो मतो । विगाड़ क यो तो आंपै जिमै धी । तिण समय रा ।

नीसाणी

राठोडा नैं जोईया रालयाई न रूपे ।
अजरूलह क आवमण पग नहि लेजपे ॥
नेंडो पेह न लम्मही वीरमा मन दपे ।
मरणागति तुम आवीया जल नारक नपे ॥
गैं नर वीरम छिटीया सिरगाला रपे ।
मोजा मिमिर छत्रानीया देवगा चपे ॥
सवा परिया वीर नाम निग पुत्र गलपे ।
वीरम आग अनाग छोड मैं देवग रापे ॥

वार्त्ता

[illegible]

कह्यौ । रावजी जोईया तो आगै ही चोवीस हजार घोड़ारा धणी छै । ठठा भखर रो पातीसाह मृगतमायची जिणरै परधान बूकण भाटी छै । तिणरै देपाल परणीयौ । अबै आपणै हाथ आंवणसु रह्या ।

तरै वीरमदेजी बूकण भाटीनै मारणरो उपाव माडीयौ । भाटी बूकणनै नालेर मेलीयौ । सात वेटी छै । तिको आपनै वलेथाहरा भाई भतीजानै परणावसा । नालेर झेलज्यो नै राज परणीजण पधारज्यो । सो उण वीरमदेजीरी वात साभली थी । सो भाटी बूकण नालेर झालै नही । भाटी बूकण कह्यौ पहला वीरमदेजी माहरै परणीजै तौ पछै म्हे थांहरै परणीजसा । तरै भाटीयारो नालेर वीरमदेजीनु ल्याया । सो वीरमदेजी नालेर झेलीयौ । मन माहे चूक तेवड़ नै । आ वात जसै लूणीयाण देपालजीरै भाई सामली । वीरमदेजी भाटीयांरो नालेर झालीयौ । तिको चूकरो मतो दीसै छै । तरै जसै लूणीयांण देपालजीनै कह्यौ । वीरमदेजी चूकरो नालेर झालीयो । तिको भाटीयानु मारसी । तरै देपालजी कह्यौ जसा भाई आ वात हुवा नही लाहोरसु सात कोस तलवडी छै । मारि सकै नही । धरती उभी छै । अबै वीरमदेजी नालेर झेलनै भाटीयानै कह्यौ म्हारै वैर घणी जायगा छै ! थे जाहर करो मती । असवार पचास साठिसु छु नो सिकाररै मिस आउं छु । थे कठै ही जणावजो मती ।

इतरो कहिनै भाटीयांरा आदमीयांनै सीख दीनी । पाछै वीरमदेजी सातसै पखरैत असवारासु चढीया सो मजलां मजलारा वीरमदेजी भाटीयारी तलवड़ी गया । जायनै एक आदमी वधाईदार तलवड़ी मेलीयौ । जाय नै गोरवै उतरीया । आदमी जाय नै वधाई दीनी । तरै सातेई कवर भाटीयारा सामा आया । आंगनै जुहार कीयौ नै ऊपरै तरवारि पडी । कंवरां नै मारि लीया नै वागां उपड़ी । आगै सामेलो आवतो थौ । सो बूकण भाटीनै सांमेला माहे मार लीयौ । गांव मारि लूटि रोस करि नै वीरमदेजी पाछा आया । लारै देपाल जोईया कनै भाटीयारी फिरयाद आई । तलवड़ी मारी । तरै जसै लूणीयाण देपालजी नै कह्यौ । थानै म्हे पहला हीज कह्यौ न थौ तिणरी सापरी ।

नीसांणी

देपालै कसमीर दे गल भणै न रोई ।
वीरम हइस तोलींया सलखांणै सोई ॥
कूटी पींटी तलवड़ी निवाह न होई ।
जसे जेही जाप दी तेवी ही होई ॥

वार्त्ता

वीरमदेजी पाछा आया तरै दोलै गहलोत कह्यौ । अबै अठै आपा नै रह्यां भलाई नही । सवारै आपा उपरै जोईया आवसी । तरै वीरमदेजी गाव वडेरणो छाडि नै रातो राति गाडां भार घालि कागासर नै कवलासरमै वासारी वाकी जायगा छै तठै आय नै

वीरमदेजी भाग पाटती समा गाडा छोडीया। तरै वीरमदेजी दोला गहलोतनै कह्यो। जोईयानै मारणरो उपाय करो। इसो विचार करि नै वीरमदेजी कागासरनै कनलासर रहै छै। इतरामै कासमीरदे भटीयाणी देपालजीनै कह्यो माहरा पीहररो वीरमदे नास कीयो। आ उपाधि थे क्यु राली थी तिणरो फल अै देवौ वलै देपसौ। कालदार सरपनै घर मै घाल्यौ तिको आप घणी दुष पावसी। तरै देपाल मनमै विचार्यो हु जाय नै मोहिलानै तेड ल्यावु छु। मोहिलारै नै वीरमदेरै आगै ही वेर छै। उणारी घोडी आणी थी। उणारा सात आठ बेटा मारीया छै तिको उठीसु तो मोहि आवे अठीसु म्हे जाना तो विचै भिरडामै देनै वीरमदे नै मारि लेसा। इसो विचार करि ने देपालजी वहल १ जोतराय नै माहे नैस नै आदमी पाच तथा साथे लेनै रातो राति मोहिलारा देसनै पडीया जाय छै। सो कागासरनै कनलासररै गोरवे आय नीकल्या। सो देपालजी न जाणै आगै वीरमदेजी रा गाडा छै सो अजाण थका आया।

आगै वीरमदे समाधि वछेरी कुदावै छै। होकारा करै छै। तिके देपालजी साथीयानु कह्यो थे मोनै कठी ल्याया। आगै तो वीरमदे होकार करै छै। साथरा कह्यो वडा ठाकुरा बीयो मती। अठै वीरमदे कठासु। तितरे वीरमदेजी नेडा आयनै होकार कीया। तरै देपालनी अडायरो ओढि मादरो मिस करि नै सुय रह्यो। तितरे वीरमदेजी घोडी दोडाय ने वहल कनै आया। तरै वीरमदेजी देपालनै दीठो। तरै कह्यौ आज यु सै कठीनै। तरै देपालजी सूता हीज राम राम कीयो ने कह्यो मौसु भाया चूक तेवडीयो यु कहै छै। देपालने वीरमदेजी एक हुवा सोहु आप कनै आयो छु। तै मोहिलानै तेडणनै जाउ छु सो आये भेला होय नै भाया नै मारसा। आपारै धरती आधो आध छै।

तरै वीरमदेजी देपालजीनै घरे ल्याया। कुमाररे घरे डेरो दिरायो। वीरमदेजी मागलीयाणीजीनै कह्यौ। म्हे आज एकलौ देपालजीनै तेड ल्याया छा नै दोला गहलोतनै बुलायो छै। तिको घर नैठा ही सिकार आइ छै। तरै मागलीयाणीजी वीरमदेजी नै कह्यौ। देपालजी तो थारा काई बुरी न कीधी। भला थोक जिके देपालजीरा कीया छै। थे इसी विचारो। तिण समीयारी

नीसाणी

मागलीयाणी वीरमा इक सीष सुणीयै।
हेकण हथै जोईया तो साम ठभीयै॥
कालें रुप न कटीयै जो छाह अजीयै।
मधी पधी ना मरै परमल काजीयै॥
जो मोहलाणी ताण होय तो अंग रोस जरीयै।

वार्त्ता

मागलीयाणीजी देपाल कनै आया। वीरमदेजी तो अमला मै चाक हुवा पोढ्या छै। दोलो गहलोत पिण आयो न छै। मागलीयाणीजी देपालजीनै कह्यौ। देपालजी इसडी

वेला पड़े तिण वेला थे पिण मां सु उपगार करज्यौ । औ वचन याद रावज्यो । थे परा उठो । वहल जोतरो । थे नीकलो । रावजी सुता छै । दोलो गहलोत आयां थां उपरै तरवारि वाजसी । तरै देपाल वहल जोति नै रातो राति नीकल्यौ । इतरै दोलो गहलोत आयो । वीरमदेजी कह्यो दोला वधाई देज्यौ । देपाल एकलो आंपारै हाथ आयो छै । तरै दोलै गहलोत कह्यो मारीयो कना नही । वीरमदेजी कह्यो अबै मारिल्यौ । तरै दोलो घावड्या साथे लेजाय कुमारनै घरे खबरि कीनी । आगे देखै तो देपाल नही । कुमारनै पूछीयो । देपाल कठी गयौ । तरै कुमार कह्यो अठासु तो पोहर १ रात रो वहल जोतिनै नीकल्यौ । तिको षबरि काई नही । कठी ही गयौ । कोस ५. तथा ७ दोड्या पिण देपाल तो जातो रह्यो । दोडनै पाछा उरा आया । देपाल तो कुसले घरे पुहतो ।

अठै वीरमदेजीनै दोलै गहलोत पिछतावो घणो कीयो जे देपाल घरे आयो कुसले जाय । तरै मागलीयाणीजी कह्यो रावजी देपाल आपां सु तो सदरी कीनी थी नै आप उणारो रजिक पायनै उणानै हीज मारण तेवडो छौ तिको नारायणजी सासवै न छै । पछै तो आप जाणौ । पिण वीरमदेजी रै मन मानै नही । मन मै मारणरो डाव घणो ही करै छै । हर भाति करिनै जोईया मारिनै धरती धावीजै । इसी वीरमदेजीरा मन मै वरतै छै ।

इतरै होली आई नै गेहर वाजण लागी । सुहाणै गढ गेहर वाजै तिको ढोल निपट सरवो वाजै छै । तरै वीरमदेजी कह्यो जो या ठाकुरांरो ढोल बोहत सरवो वाजै छै । तरै चाकरां कह्यो महाराज जोयारै ढोल आंबारो छै । आपणै ढोल लोहरो छै । तिको मधुरो वाजै छै । सोहाणै नै कागासर कोस १२ रो आतरो छै । ठंढी रातिरो ढोल निपट नैड़ो सुणीजै । तरै वीरमदेजी कह्यो आपणै पिण ढोल आंबारो करावा तो आछौ ।

तरै कारीगरानै बुलाय नै वीरमदेजी कह्यो कठैक आंबो वढाय नै ढोल करावो । तरै कारीगरा अरज कीवी महाराज थलवट मै आंब नै फरास कठकै लाभे । तरै दोलै गहलोत कह्यौ जोईयां नै मारणरो उपाय करो छो तौ आंपा हालिनै वीर धवल नामा फरास वाढा नै ढोल करावा नै फरास जोयारै पूजनीक छै । तिण उपरा जोईया आपांसु वेढ करसी तरै आंपे देपालनै मारि लेसा ।

तरै दोलो गतलोत फरास वाढण नै गयौ । तरै वीरमदेजीरै वहु मांगलीयाणीजी छै तिका निपट समझणी छै । तिकण सुणीयो दोला गहलोतनै वीरमदेजी जोयारो वीर धवल नामा फरास वाढणनै मेलीयो छै । तरै मांगलीयांणीजी वीरमदेजीनै कहै ।

नीसांणी

उहीज आवै रतडी सिर लापै लोवै ।
धोबी धोवै कपड़े मोटीयारां धोवे ॥
चिणेज चवै सार वेष वहंदी होवै ।
मांगलीयांणीनै सांपली एकायज रोवै ॥
जे फरासन वढीयै तो कलिकैथी होवै ।

वार्त्ता

वीर धवल नामा फरास वढाय नै ढोल करायो । तरै ढोलै गहलोत कह्या । अवे हुसीयार होज्यौ । सवारै आपा उपरि जोय्या आवसी । इतरै फरास वाढीयारी खबर गइ । तरै सारा ही जोईया मिल नै देपाल आगै पाघडी पटकी । कह्यो देपानजी घरमै पिसादि घालि नै जोयारो माथो भुमायो पागडीया मै धूल पडी । जोयारै पूजनीक फरास वाढयो तिको वीरमदे अनै पेट मै वयु कर समावे ।

तरै सगला जोइया भेला होय नै घोडो हजार २४ सु चढया । तिण माहे दलो देपालाणी मोहर कवीयो । आपरा साथ सु वधनै वीरमदेजीरी गाया लीधी नै गोहर आणिनै वाहर घाणी । तरै वीरमदेजी चढण लागा । तरै मागलीयाणी वरज्या । वडा रजपूत थे इणारा इतरा खून कीया छै तो एक खून इणानै ही बगसौ । पिण वीरमदेजी तो मानै नही । तिण समीयारी ।

नीसाणी

जो फारस न वढही तो कलिकेथी चलै ।
मागलीयाणी वीरमा धाय लगी पलै ॥
किणहेक पड पण आपणै धण लीया दलै ।
हाका सुणि वीरम ची जोईया दहलै ॥
अठ वीस पुडअ कपीया तिके उथल पथलै ।
गह भरि वीरम गरजीया अरि तिही सलै ॥
कलि अकथ कीवी सलप सुत जोईया मिल किलै ।
छाडागत छिल तेम छग केहरि गज पिलै ॥
नरी अपछर वीर वर माणिग महलै ।
कविता ढाढी वीर कहि जोईया पर जलै ॥

वार्त्ता

मांगलीयाणीजी तो घणा ही पाल्या पिण वीरमदेजी न मानी । साथसै साव पधरैन असवारासु चढीया । तिण समैरी ।

नीसाणी

वीरमदे पीडाईयाता जिण पचमाणी ।
समाधि नचं पिड पपरी चगा केकाणी ॥

वीरम पहरै कपड़े धोए सारक तांणी ।
राग रंगावलि अंग जिरह झमझपस आंणी ॥
वीरम चढीयां सत्र चढै सवें सलपांणी ।
मांणिक हरीया दोलीया वड थट फरांणी ॥
पाऊं थहै लूझणा जसदी करवांणी ।
वीरमनु केहा कहै कहै मांगलीयांणी ॥
जोतु वीरम सलपीयांण आगै लूणीयांणी ।
धीरे धीरे जोईयां आया सलपांणी ॥
मदो आय विलंब सी वगजे ही पांणी ।

वार्त्ता

वीरमदेजी तो बाहर चढीया । सगला साथनु जोईयासु जाय नैडे ठालै हुवा ।

नीसांणी

वीरमस माथि कुदाईयां जेहा मालाला ।
भापे भापे आवीयो मोहिल मूछाला ॥
पाहु थट सलूझणा भाला लूवाला ।
सा ज्या तोनै जोईयां सलपांण रढाला ॥
एकै कांनी दोलीयौ के वीरम छत्राला ।
मदो तेजा उथक्या दल दो छै हीरा ॥
ओचक ढाहे दाढीयां तोह उपर वीरा ।
वहादर मदो वधीयाद्रि मायं गहीरा ॥

वार्त्ता

वीरमदेजी घोड़ी पमसाय नै आपड़ीया । मदो सगला कटक आगै छै । तरै मदानै वीरमदेजी दीठो । तरै मदा उपरि वीरमदेजी नाखीया नै आय नै मदानै तरवारि वाही । सोतरवारि तूटि गई । तिणरी साख ।

नीसांणी

चावप लाया सलपीयांण छिडता जिण धुटी ।
थे कुलई यां न मिसरी पुरसांण चिहुटी ॥

मदो दे सिरवालीया न सीस गेच चिमुठी ।
टेपे एकती फीयुं आंण चाच नहुटी ॥
तुटे होरै मिसरी वाच वहादर पूटी ।
झमदे तेग सलपीयाण झिखाणी तुटी ॥
तर मेपे लास लपोयाण छेड तुरंग उगाही ।
वीरम दुही मिसरी सारमाताही ॥
तुटी होय मिसरी नहादर सराही ।
वाहण हारा क्या करै जन फतै नाही ॥

वार्त्ता

वीरमदे तरवारि वाहिनै आपरा माथमै पाछो जाय उभो रह्यो । वीरमदेजी पिछतावो करै छै । जे माहरी वाही मदो जीवतो रहै तिको आन दीसै छै । या रै हाथ खेत आवसी । जैतसी देपालाणी कह्यो दीठो जिका नर गयो छै । आन आपा सगलानै मारसी । तरै जोइया निचार दीठो समाधि वछेरी जेता थे फेरी छै । सो तोनै इणरी कीमत छै । तिको तु दगताली डारै ढोल वजाय । ज्यु समाधि वछेरी नाचे तो वीरम देपालो हुवै । तो आपे मेला होय नै वीरमदे नै मारा ।

इतरै वीरमदेजी वाग उठाइ । वीरमदे नै आवतो देख जैतसी इगताली ढोल वजायो नै होकार कीया । तरै समाधि तो नाचण लागी ज्यु ढोल वाजै ज्यु घोडा नाचे । आघो पग नचावतरै । तरै दोलै गहलोत चढ्यो । वडा ठाकुर उरो आव । अरे परो मरावै छै । तरै वीरमदे घोडी पाछी वाली । तरै जैतसी पाछै आयनै घोडीरा पाछला पगारै झटका री दीधी नै घोडी तो हेटी पडी । तरै वीरमदेनी लागनै उतरीया । तिणरी सापरी ।

नीसाणी

आनटीया हीय तीय न छोह छोही ढगी सै ।
जैतल झाडी कराचली आप वेही वगी ॥
समाधि दीयै क्युं ना रही त्रिगनालि निलगी ।
उभकै देता जिण करै त्रिहु होय पगी ॥
वीरम समाधि कूद ही होकारै देई ।
घाई घाई अरीयै ढोल वजैधाई जैतलघुई ॥
मिसरी सो वन जडाई उतरीया झमध जै पगरटाई ।
वीरम समाधि गुझाय कै असमाधि उपाई ॥

वार्त्ता

अठै मदोनै वीरमदे दोनु लथो बथी हुवा। माहो मांहि कटार्‍यां वही। वीरमदेजी कटारी वाहै तिको मदो टाल जाय छै। वीरमदेजीरै कटारी लागी मरमरी मदो वीरमदेजीरी चोट फबणदे नही। तरै वीरमदेजी दातां सु कटारी झाली मदानै बाथांमै झालि वीरमदे दांतां सु कटारी चलाई। सो मदोनै वीरमदे दोनु रिण षेत रह्या। तिणरी साख।

नीसांणी

मदो नै वीरमदे दल मझ समेत।
उ जोयो उ राठवड़ राजै छत्र पते॥
दुहु घती भलबथीयां दुहु अहथ घते।
जांणै छाजां बजीयां किरमाल उलते॥
मदो नै वीरमदे रिण रो है फबै।
उ जोयो उ राठवड़ मन दुहुँ गरबै॥
बहादर लूणै सलपीयांण वहिगए सलछै।
समझे हथ कटारीयां मतवालै पछै॥

वार्त्ता

वीरमदेवज कांम आया। तरै दोलै गहलोत पागड़ो छाडीयौ। तरै सगलै साथ पागड़ो छांड्यौ नै आमो सामा तरवारया मिल्या। तिणरीसाष।

नीसांणी

राठोडां नै जोईयां तेरी धुहकारा।
मांणिक हरीया दोलीया यड़ थाट कगारा॥
रायाहु थटां लूझणा खांडा दो धारा।
वीरम पासै दोलीयै भलकीया उतारा॥

वार्त्ता

दोलै गहिलोत मांणिकदेनै कह्यो। माणिकदे मदाणी मदाजीरै प्रवाडै तो वीरमदे। वीरमदेजीरै प्रवाडैमदो। वड़ा रजपूत सांमै मुहडै आव। तरै मांणिकदे मदांणी दोलो गहिलोत दोनु लथोबथी हुवा तरवार वाजि नै वेहु रिण खेत रहया। तिणरी साखरी।

नीसाणी

राठोडा नै जोईया वाजी निकरारी ।
दोलैं भ्रीहि मिसरी पुरसाण पलारी ॥
माणिकदे नल छडीयौ वडनरी करारी ।
माणिक लडीया दोलीया हुँ ईस्रू हारी ॥

वार्त्ता

माणिकदे ने दोलो दोनु लडि नै काम आया । कलौ मोहिल नै जसो लूणीयाण दोनु लडिनै काम आया । तिणरी साख ।

नीसाणी

त्रापे त्रापे आगीया मोहिल उद्दा ।
खवै खैडा चिनकोट भ्रल भोरदा ॥
वहादर ढाढी अखीया नीसाणी छदा ।
चाकहि जाण उतारीया सिर जे सोहंदा ॥

वार्त्ता

अठै वेढ नीवडी । देपाल पाछौ जाय उतरीयो । बगतर उतारि नै देपाल जोईयौ अपूठो रिण जोवण नै आवै छे । निसक थको पुनडा आहेडीरा हाथ पडि गया छै । पिण सावचेत छै । तरै पुनडै आहेडी देपाल नै आवतो देख नै दोला गहिलोत नै कह्यौ । दोलाजी देपाल नैं आवतो देखो छो । थाहरो हाथ सावता छै नै मारै डगडै तीर चढायज्यो तो देपाल नै पाडि राखु । तरै दोलै गहलोत विसने डागडो चढाय दयो । पुनडै आहेडी पगासु डागडो झाल नै तीर दातासु झालिनै देपाल रै बगल मै झाटकी । तिको तीर दुवासु फूटि बगवल मै जाय लागो । देपालजी तो रिण खेत रह्या । जो या रो माझी मारि राख्यो । तिणरी साख ।

नीसाणी

धण हय झूनी पुनडै जे पट पलोटी ।
चुण तरग सहुँ कडीया बे भरीक पोटी ॥
देपालै तन लाईया वात करी न खोटी ।
चोगुणी कीनी पुनडै रावता दी रोटी ॥

वार्त्ता

राठोड वीरमदेजी रो साथ सगलो काम आयौ । जो यारो साथ सादी तीन हजार लोक काम आयो । देपाल जो यासु मांगलीयाणीजी उपगार कीयो थो तिण सु गाव वसी लूटी गई । तरै मांगलीयाणीजी नै से झवालै छै साथ नै आदमी ४ साथेदेनै मारवाडि नै पुहचता कीया ।

माल वित तो लूटि मे गयौ सो थलवट माहे चारणांरो काला उगांव छै तठै मांगलीयांणीजी आय छांनो रह्या । चूडोजी नाना वरस ५ तथा ७ मे छै । संवत १४४० वीरमदे जी कांम आया । काती वदि ५ राठोड वीरमदे कांम आयो । तिण समीया रो गीत हर सूँ बारट कहे—

गीत

वटाऊ वात कहो वीर मांयण, जोपम दीह तणौ जडीया ।
पोरस आयस कोई पूछै, पैला केता रिण पडीया ॥
विढण वारवांण कहो वटाउ, एता क्यु मैं आवडीया ।
सैहथ आप महेवा सांमी, पाडे माझी रिण पडीया ॥
वीरमसु देपाल विढंतै, अणी चढे नह उवरीया ।
राव जोयां अनै कमधज राव, राबविहु भेला रहीया ॥
रावभूरा भई वीसलदे, करे काट भ्रप साथ कीया ।
अंतेवरां न मु क्या, एकल पण पर भुंय साझण हार पीया ॥

वार्त्ता

वीरमदे पुत्र राव चूडो १, देवराज २, गोगादे ३, जेसिंघ ४, विजो ५, देवराज वीरमोत बडो बेटो तिण नै वीरमजी महेवासु नीसरीया । तरै महाजन लोक वसी सगली दे नै थली माहे मेलीया था । सो लोक लेनै देवराज थली नु गयौ । तिकौ देवराजजी कालाउ सोम सिर विचै पूगलीयो को हर छै । तठै राज थान माडि नै रह्या । जेठाणीयां कनै तठै रहै छै । पमारारी ठकुराई तद सहज मै भागी थी सो थलवट माहे गाव हुरडावै आसाय चाके इक फुटकर रजपूत रहता । तिण कालाउ गाव माहे देवराज आय रह्यो थौ । सो ओ रजपूत दिन २ गलता गया ऐं धरतीरा धणी होता गया । देवराजरी ठकुराई वधी तिके देवराजौ तउठारा उठै हीज रह्या । देवराज पुत्र राबतराजा १, दुरजन सल २, महिराज ३, पूनो ४, चाहडदे ५, गोगो ६, राणो ७, खीमकरण ८ । इति राठोड़ वीरमदे मलखावतरी वार्त्ता ।

अथ गोगादे वीर मोतरी वार्त्ता--

गोगादे वीरमोत वडो रजपूत । सेवालै राजथान वडो आषाडसिध । गोगादेनु मांणकी तरवारि जलंधरी नाथ दीधी । वडेरणै रैहता वीरमदेजी थका एकै दिन रावल मालाजीत नु जगमालजी नु दसरावा उपर गोगादे मुजरो करण नै महेवै आया था । सो रावलजी उठै ही राषीयौ थो ।

एक दिन जगमालजी गोगादेजी कना भैसा नै झटकौ वुहाडीयौ सो गोगादेरा झटका सु भैसा रो माथौ अलगो जाय पडयौ । तरै सगलै साथ झटकौ वषाणीयौ । तिको गोगादेरा वषाण जगमाल नै सुहावै नही । तरै जगमाल ओकर वचन बोलीयौ । भैसानै आगै पाछै

बाधिनै माथो चाटै तिणरा किसा बखाण । रजपूती पणी गोगादेजीरी जद जाणा दला जोइयारो माथो इण भांति पार्ट तो बापरो वैर लेतो । इसो वचन जगमाल गोगादेनै सुणाय नै कह्यो । तिको गोगादेरा मनमै हुसार वही ।

गोगादे वरस ३५ री उमर छै । इतरै गोगादेजी जासूस मेलीया । तिका जासूसी पजोय दला जोइयारी निगै लेनैं गोगादेजीनै आण कह्यो । दलो जोईयो ढाणीया रहै छै । आमो सामा गाडा उभा करिनै हेठै ढोलीयो बिछायनै धणी धणीयाणी सुवै छै । फलाणा थल हेठै दला जोइयारा गाडा छै । इतरी खबरि जासूसां आण दीधी ।

इतरा मैं धीरदे जोईयो दला जोईयारो भतीज जिण जेसलमेर परणीजण जाता का कीनै कह्यो थो जे आज काल्हि सावण आवरा नेलै छै । तिको अण चीतीया वैरीया सुं को होय तिण सुं मो आया पहली मोसर देयो तो वेगी खबरि मेलजो । इसो कहिनै जांन चढ' ।

अठै गोगादेजी २०० रजपूतासु चढीया । तिको राती वाहो दीयौ । दलोनै दलारी बहु रथारा ओवणा हेठै सूता छै । तठै आय नै गोगादेजी माणकीना मा तरवारि मेली । तिको दोय रथारा ओवण नीचै धणी धणीयाणी सीरख पथरणो दोड माचो नीचै धरती एकण झटकासु इतरा वाढीया । तिण समैरा ।

दुहा

सझि गोगादे साट, वाही वैरा वालवा ।
ओवट घरट निराट, दोय रथ ओवण वरभीया ॥१॥
गोगै वीरम वैर छल, ए वाही कुलवट्ट ।
दोय रथ ओवण वत्रीया, सीरपड सघट्ट ॥२॥
गोगै वीरम वैर छल, भली ज वाली रीस ।
मार्‍या दला जोईया, वटका कीया बतीस ॥३॥

वार्त्ता

इतरामै तिते नै पाछा वलीया । दला जोईया री घोटा असवारी री नाम पावटी तिको भूहरामांहि नाधो छै । तिणनै मला जोईयारो बहु कह्यौ । थारा असवारनै मारयो लूण रीता खीर वही तो आ वेला छै । जेसलमेर जायनै धीर देनै वाहर घालि घोडानै छाडीयो । तिको जेसलमेररा मारग लीयौ । तिको जेसलमेररै गोरिवै वाती हीस कीधी । तिरा धीर दे काना सुणी ।

तरै तीजो फरो रोता था । तरै घोडै चो हीस कीनी । तरै धीरदे जोयो इपलेवो छुडाय नै चोथो फरो बिच लीधा चढीयौ । साथ राणगदे भाटी हुवौ । सातसै असवारांसु

इणां पिण पाधरा श्रो सांटीया गोगादेजी रा साथसु देठालो हुवौ। तरै गोगादेजीरै साथ तलाव रोकीयौ। बेहु साथ तरवारयां वागी। तिण समै जोईया भाटीयांरा साथनै तिस लागी। तरै रांणंगदे भाटी गोगादेजी नै कह्यौ तु मारवडिरो छत्र मांहरो साथ त्रिसी यो पांणी विण पीधा मरसी तौ अगत जासी। तिणसुं मानै तलाव पाणी पावौ। म्हे पांणी पीनै तलाव थानै पाछौ सूपदेसा थां विचै मां विचै कटारी उपरा हाथ दे कह्यौ आ छै। किण ही वातरो अपसोस जाणज्यो मती। रांणंगदे भाटी राम नमै धगो तिको कटारीरी पडदडी माहि तीतर राखीयो छै। तरै गोगादे साच मान आपरा साथसु अलगा जाय उभा रह्या। जोईयां भाटीयां पाणी पीनै फेर तलाव उपरा वेढ कीधी। गोगादेजी रो साथ सारो कांम आयौ नै गोगादेजी लोहासुं धापनै पडीया। गोगादेजी रा हाथ रो खडग विजैनांमा नव हाथ वधै। तिको राणंगदे नै कह्यौ। वडा सगा श्रो मांहरो खडग विजैनामा थांहरा हाथमे राषौ। तरै राणंगदे बोल्यो। थे राठोड भाई छौ। थांहरो वेसास किसौ। तरै गोगादेजी आप दिसी अणी कीधी। मूठि रांणंगदे भाटी दिसा करिनै हाथ पसारयौ। तरै भाटी षाडो लेण नै सलवौ आयो दीठै। तिण समै गोगादेजी छुरीसु उछाल मूठ हाथमै झाल रांणंगदे नै वाही। तिको जाणे सावलमै तांत वही। गोडां उपरा पडी। तिको राणंगदे पूटा हुवाणा पटदे धरती पड्यौ।

तरै गोगादेजी हसीया। दात चोकारा मोटा छा। तिको देषनै भाटी रांणंगदे कह्यो। वल्या दातांरो घोस। तद गोगादेजी कह्यो माहरो कोई केडायत होय। तिको पाचे पचासे दिने वैर ले। तिको भाटी टाकुरां कना लेज्यौ। तठासु गोगादेरो वैर भाटीया रै माथै टाहरीयौ। सव्रत् १४४७ रा जेठ वदि १३ भुणीयारडा गावरी पाव्रती तलाव उपरा कांम आया।

कवित्त

चुडो चरुं सु गाल राव गुरु राव भणीजै,
त्रिजो वीर वीराधि लाप मै एक गिणी जै।
गोगा देगिर मेर जिको नरपति नारायण,
जेसिंघ दे जगपति अहित घण दांन परायण।
देव राज दांनइ लउ परै,
सरणाई सुहडां जणा।
कहीया प्रगट महि मडले,
सात पुत्र वीरम तणा ॥१॥

वार्त्ता

सात सिरदार जोईयारा काम आया। गोगादेजीरा तीन सिरदार कांम आया। गोगादे पुत्र करमसी १. सहसमहल २. केला ३. सैसा ४. उदैकरण ५. सहसमलरां वेटां पोतरानै टीवरी गाव पटै छै। केलारा वेटा पोतरानै बिरज गांव पटै छै। उदैकरण गोगादेजी साथे

काम आयौ। जेसिंघ पुत्र सूरो १, अल्हो २, नरो ३, तेजो ४, वैरो ५, इणैरा बेटा पोत्रा निनेउ गाव छै।

इतिगोगादे वीरमोत्तरी वात्ता।

भाटी राणगदे गोगादेजी रै हाथ काम आयो। तिणरो वेटो तिण अरडकमल चुडावतनै मारयौ। तिणरो वैर राव चुडैजी काढीयौ। पछै तिण आटै केलण भाटी मुलतानरी फोज ल्यायनै नागोर मराइ। पछै तिण आटै राव रिडमलजी आसणी कोट जाय नै भाटी देवराज सातलोत मारीयो। पछै वैर भागौ।

तरै राव रिडमल रो बेटा सह हुता पिण एक ना थो। रिडमलजी रो वेटो वैर भाजणरी वेळा न थो। तरै सारा राठोडा कह्या भाटी ठाकुरा नाथो नही आयो छै। तरै केलण भाटी कह्यां राठोड ठाकुरा माहरै ही इसडा नथड मथड घणाही छै। तरै सारा राठोडा कह्यो ठाकुरा नाथो रिडमलौत जारै छै। तरै सगला भाटी ठाकुरा कह्यो इण वातरो किसो सोच छै। नथड मथड केई छै। इण वचनरा आटा उपरि नाथै अको केलणोत मारीयो। पछै नाथूरा वेटा केलण भाटीरा बेटा यणा दिनताइ वैर घघीयो। पछै राना रायसिंघ बीकानेररो धणी जेसलमेर परणीयो तरै राजा रायसिंघ रावल भीमनै नाथूरा बेटा पोतराने अका केलणो तरा बेटा पोतरानै भैला बेसाणीया। तद पूरा वैर भागौ।

राठोड वीरमदेजी गढ सोहाणै जोयारै मामलै काम आया तरै मागलीयाणीजी चुडानै लेनै मारिवाडि माहे आया छा। नाथ काथलवट माहि कालाउ गाव छै चारणारो तठै रह्या। आपो प्रकासीयो नहीं। मोल मजुरी करिनै पेट भरै नै चुडोजी वरस ७ तथा ८ मै छै। तिको गावरा टोगडा चरावै। एक दिन चुडो टोगडा चरावतो खेजडी हेठै सूतो छै। इतरामै एक कालदार सरप चुडारा माथा उपरि फण करिनै बैठो छै। तिण समे आल्हो चारण जाति रोहडीयौ खेत देखण नै आवतो थो। आगै देखै तो चुडो मारगमै खेजडी हेठे सूतो छै। उणरी निजरि आयो वासिग राजा। तरै चारण मनमे विचारियौ वात उल्याडी नहीं। इतरा दिनामै इणडा वडारी टोह न पडी। किणरो वेगे। किणरो पोतरो। जाति किसी। तरै सोच विचारिनै राजा वासिग ने कह्यो गोग धरमी वडा चहुवाण औं तारि हुवा तो भली वात। तरै गोग धरमी तो पयाल दाखल हुवो। तरै चुडा नै जगायनै पूछीयौ बाबा तु कुण छै। साच कहि। घणो हठ करिनै पूछीयौ। तरै चुडैजी कह्यो हु वीरमदे सलखावतरो बेटो छु। तरै चारण मन मै जाण्यौ आवात जुगत छै। अठै चारण मुभराज दीयो। कह्यो बाबा तु माहरो धणी छ। थारै माथै छत्र नेगो मडसी। तु धरतीरो धणी हुसी। तरै तु मानै काइ देसी। तरै चुडै कह्यो बारटजी राज हुं धरतीरो धणी हुसी तो राज मागसो तिकु देसु।

तरै चुडानै लेनै चारण मागलीयाणीजी कनै आयो। मागलीयाणीनी नै ओलभो दीयो। मांत लिछमी राज माहरा धणी इतरा दिन वात पल मै राखी। तरै चारण मा बेटा नै कपडा कराय दीया नै कह्यो रावजा मालाजी रै नाइ भीमो प्रधान छै। तठै चालो तो राजरी जमीत ठहरावां।

तरै चारण मांगलीयांणीजीनै चुडानै साथै लेनै महेवै छांना आया। मांगलीयांणीजी तो गाव मै छाना ओ ताकि रावीया। चुडानै लेनै भीवा पवास कनै गया। रांम २ कीयो। हेठा बैठा। तरै भीवै पवास पूछीयो। बारटजी राज ओ मोटीयार कुण छै? तरै बारटजी भीवारा कान मै वात कही। वीरमदेजीरो बेटो चुडो छै। मागलीयांणीजी गाव माहि फलांणी जायगा छै। भीवाजी राज चुंडो आपरै पोले छै। बरदासत करावज्यो। इतरी भलावणि देनै बारटजी सीष कीनी। पछै भीवो पवास मागलीयाणीजी रै पगां लागा नै परची दिराई। कितरायक दिन तो इण तरै गुदरान कीयो। चुडोजी भीवा पवान कनै रह सादो रजपूत रहै जिण तरै।

एक दिन मालोजी दरबार बैठा था। भीवो पवान चुडानै लेनै दरबार गयो। मुजरो करि नै हेठा बैठा। इतरामै रावलजी नाडाछोड करण नै उठीया। तरै चुडै उठिनै झोडी आघी कीनी। तरै रावलजी सामी निजरि देनै जोयो। नाडा छोड करिनै पाछा पधारया। तरै भीवानै पूछीयो। भीवा! ओ मोटीयार तो कनै कुण छै। तरै भीवै हाथ जोड नै अरज कीनी प्रथीनाथ तकसीर माफ हुवै तो रावलजी मुं मालिम करु। तरै रावलजी कह्यौ हुवै तिका परी कहो। थारी कह्यां कोई लोपां नही। तरै भीवै कह्यो महाराजरो पाना बाद छोरु छै। वीरमदेजीरो बेटो चुडो छै। तरै रावलजी वते भीवानै क्यु कहणीआयो नही। तरै भीवारा वह्लासु सालोडी गावरै थाणै मेलीयो। तिको चुडो रोजिगार पावै।

अबै चुंडारो दिन वलीयो। जिका तो वडे तिको पाधरी पडै। चुडारी ठकुराई वधी। चुडोवज वजीयो। साथ सामांन रापण लागो। सो माले रावल सुणीयो। तरै भीवा पवास नै ओलंभो दीयो। भीवा तै आ किसी उपाधि पाटी। वीरम विरायीरा छोरु वधारया। तरै भीवै कह्यो। रावलजी सिलामत आप आगै जिण टाकुर कही छै तिको परीज हु सी। पिण मै तो वणो वधीयो क्युही दीठो नही। यु कहि नै भीवे वात टलाय दीनी। पछै तीण दिन सुं चुडै भुजाई माडी। लोका माहे वणो जस हुवो। तिको रावलजी घणो दुष पावै। तरे रावलजी सालवडी जाणरो विचार कीयो। तरै भीवै चुडानै कवाडि मेलीयो जे रावल मालोजी साल वडी पधारसी। थे सादे सैलवेस माहि रहज्यो। तितरै मालोजी पिण सालवडी आया। तरै चुडारो लवेस सादो सलै दीठो। तरै रावलजी कह्यो। मा आगै जिणां टाकुरां कह्यो तिणां रै मुंहडै धूल पडसी नै तरै रावलजी पाछा महेवै आया। वानै चुडो इस हीज भांति वध वधीयो।

इतरामै चुडानै माता नागणेची। तूठी प्रतख होय नै चुडासु वातां करै। जठै चुडो जठै चांमंड। सो एक दिन चामंड आधी रातिरी आय नै कहण लागी। चुडा जागे छै? तरै चुडै कह्यौ माताजी जागु छु। तरै माताजी कह्यो। सवारै जालोर दिसलै मारग व्यापारीयांरा पोठ्या ४ लुणसुं भरीया छै। मांह सोनारी ईट छै। उपरा लूण छै। तुं सोनो उरोलै। तरै चुडो पांच सात आदमी मातबर लेनै जालोररा मारगमै जाय बैठो। प्रभातै ही पोठीया लीया व्यापारी आय नीसरी या। चुडो व्यापारीयांनै पकडि नै पोठीया ले आयो। मांहसु सोनो काढिनै परची कीनी। बाकीरो सोनो गावरी सीव मै धरती मै गाडि दीयो। पोठीया पाछा लूण सु भरिनै महेवै पुहचता कीया। पछै व्यापारीयां नै छोड दीया। तिके रावल

मलीनाथजी कनै पाधरा फिरादु गया । तरै रावलजी चुडानै बुलाय नै हकीगति पूछी । इण्यारो माल क्युं लुटाणो । तरै चुडेजी अरज कीवी महाराज राहगीरी दाण मागता बोलाचाली हुई । तर या व्योपारयां दरबाररा चाकरा नें गोता दीया । तिण उपरा दिन १ तथा २ रोक रखाणीया । ऐ समाचार छै । तरै रावलजी वात साची मानने चुडा न सीखदीनी । व्यापारीयानै परा धुरकार दीया । झगमारो छौ । कुडी फिरीयाद क्युं करणी पडे । तरै व्योपारी पीछा पहिनै परा गया । रावलजी दीठो लूण मै माल कुण घालसी । कूडो तोफान करै छै । अनै चुडाजीरै हाथ माल आयो । खरचीरी बोहताज हुई । तिण समे मंडोवररी धरतीमै तुरकाणी हुंती । धरती माहै फुटकर सा रजपूत हुता नें कोटे चाकरी मागलीया । सिंध लडणारी चौधरी हुती नें मंडोवर तुरकारो थाणो रहतो । तिको टेका आसायच मागलीया संधला कना घासरी परहरी मगाई सो इणां मगला ही आणी । तरै मुगला इदानै कहाडीयो घासरी परहरी थे पिण ल्यावज्यो । तरै इदा मनमै विचारि दीठी । धरतीमे लोक कोई न छै नै आ वात भली न लागै । सवारै वले म्हानै हीज बेगार पकडसी । तरै इदा माहै वडेरो हर धवल गोडावत उदो गोडावत ए दोनु भाई भला रजपूत छै । सो इणां मुगलासु जवाब कीयो । म्हे परहरी आणसा । घरानै मीस कीनी ।

आपमणरा भाई सब बुलाय नैं आलोच कीयो जे मुगल ता जोरै चढीया । आप इण भाति पहप सकसा नही । जे थे क्युं बल बाधो तो आप मुगलानै मारा । तरै सगला ही भाई सधा कह्यो माहरै थे वडेरा ठाकुर छौ । जिका थे करसो तिण वात माहे सगला टाकुर छा ।

तरै इदा गाडा घडरा एक सौ १०० घासमुभरीया । गाडा माहे पाच ५ जणा कट रजपूत बसाणीया नै गाड्या जोतर नै मंडोवर गढरी तलहटी जाय उतरीया । हर धवल गोडा डेतउ दो गोडा उत गढ उपर गया । वडेरा मुगल हुता तिणानै कह्यो म्हे घडरा गाडा आणीया छै । तरै मुगल पाच सात सिरदार हुता तिके पनाथ पामनान तोनै गाडा जोवण नै तलहटी आया । मुगल घात माहि आया दीठा । तरै एकण समचै गाडाग सध खोलीया नै लोह उडायो । मुगलानै तो मारि लीया । मुगलारा आदमी २०० मरण गया । इणांरा पिण आदमी पाच सात काम आया । तुरकारा मारकी मरण गया । मारलायो मारची नै पीठी मोट गढ मंडोवर ईदां उरोलीयौ । गढ लेनै इदै हरधवल उदै मनमै विचारीयो । भाई सधा नै कह्यो । गढ आपणै पाचे पचासे दिने पछै ही रहणो नही । तिणसु गाव सालावडी रावल माला रो भतीज वीरमदजीरा बेटो चुडो छै । तिणनै गढ दीजै । तरै मारां ही इसा मिलनै कह्यो । राव माहरै वडेरा छौ । राजलोकाय आवे ज्युं करो ।

तरै ईदो रायधवल सालवडी आयो । आयनै चुडाजीनै कह्यो म्हे मंडोरगढ लानो छै । राज गढ पधारिनै टीको कढावो । तरै चुडोजी आ वात मानै नही । जे गढ तोनै मानै कुण देसी । तरै राय धवल इदै आपरी बेटारो नालेर दीयो । तरै राव चुडा न्हारै परणीया । टीका काढिनै गढ मंडोवर हथलेवा माहि दीयो । राव चुडा मंडोवररा धणी हुवो । इदा रजपूत हुवा सो आगै धरती माहे सीधलरै कोटेचा मांगलीया रजपूत हुता । तिणानै राव चुडै पालीया नही । धरती माहे आपरा थका रजपूत राखीया । रावलमलीनाथजीनी आपरी मा राय चुडैनी मदयासु बुलाय लीया । मंडोवर ठकुराई चुडाजीरी पजनी गई ।

दुहो

इंदांरो उपगार, कदेय भूलो कमधजां ।
सहु जांणै संसार, मंडोवर हथलेवै दीवी ॥१॥

तठा पछै राव चुंडो नागोर उपरां गयौ । तरै नागोर मांसु तुरक नाठा । नागोर राव चुंडै लीधी । पछै राव चुंडो नागोर हीज रह्यौ । ठकुराई निपट जोरै चढी । राव चुडारा पवाडा घणा छै । इतरामै आलो रोहडीयो कालाउ गांवसु चुडानै धरतीरो धणी हुवो सुणीयौ तरै नागोर राव चुडा कनै आयौ । दिन पाच सात रयो । पिण ओलखै नही । तरै चारण समझावणी कीनी ।

दुहो

ऊकाला उकाह, तोनै चीत न आवै चुडरा ।
फाटो फुटो जाह, डीडवांणो इंडीया पछै ॥१॥

इतरा मै राव चुंडै दुहो सुणनै तुरत ओलख्यो । रावजी उभा होयनै मिलीया । घणौ आदर सनमान दीयो । मास छ मास रापनै चारणनै लाप पसाव दीयौ । विरज गांव सासणमै दीयौ । बारटजी सीप कीनी । तिण समीयारी ।

नीसांणी

राव चुडावड राव न रांणा, डगर उठीया वीरांणा ।
वहै मंडोवर कीया धीगाणा, लीया पाटनै डीडवांणा ॥
ढाढी वाचै कागद पत्र, चुडै राव उठाया छत्र ।

पछै राव चुडै मोहिलारी धरतीसु निपट जोर पुहचायो । तरै राव चुडानै मोहिला लाडणुरै धणी धुणपुररै धणी आपरी वेटी परणाई । सो राव चुडो मोहिलांणीरै वसि हुवो ।

जगतमै राव चुडो प्रसिध हुवौ । वडो दातार पट दरसणरो आधार हुवो । रजपूतांरा झूलरा कनै रहै । हर हमेस माज रोज दीजै । भुजाई निपट घणी हुई । रोजीनो भ्रित १२ मण लागै । इण माफक बीजोई सराजाम हुवै । तरै भुजाई मोहिलाणीरै हवालै हुई । आप दारु पीनै मतवाला थका रहै । मोहिलाणी भुजाई दिन २ घटावती गई । चुडाजीरै घरची भुजाईमै निपट साकडी आंणी । तरै रजपूत था सो तो परा गया । घ्रत सेर अढ़ाई मै भुजाई आण रापी । मोहलाणी एक दिन राव चुडाजीनै कह्यौ । रावजी म्हे थाहरै किसडेक सवार कीधी छै । थारै मण घ्रत लागतो तिको अढाईमै आणीयौ छै । तरै राव चुडै कह्यौ । रजपूतांणी तै तो वात विगाडी । माथा उपरि दुसमण घणा छै । तरै राव चुडै थारै आय नै दीठौ । देषै तो रजपूतारो साथ कोई नही ।

सो चुडे पहला सगलासु दुसमणीगीरी कीनी थी। तितरै केल्हण भाटी मुलतान सु सालमखाँननु ले आयो। सावलो देवराजमुलतान जायनै फौन ले आयो। फौजरा सुणी होयनै राव चुडा उपरि आया। तरै चुडानै आपरा रजपूता कह्यो। रावजी सिलामति साथ थोड़ो छै। आप नीसरो तो भलो काम करो। तरै रावजी कह्यो। वडा रजपूता नीसरिनै जावा कठी। तरै आप चुडोजी मरण रुपी होय छै ठा नै कवरानै काढणरो मतो कीयो तरै कवर रिडमलनै बुलायनै चुडेजी कह्यौ। म्हे तो अठै मरण रुपी हुवा छा पिण माहरो मन ठोड न छै। तरै कवर रिडमलजी कह्यो रावजी सिलामति राजरा मन माहि हुवै सौ फुरमावै। आप फुरमावसो तिक्यु म्हे करिसा। तरै राव चुडै रिडमलजीने कह्यो माहरो जीव मरता छोरो जो नीसरै जो मोहिलाणीरी बेटा कानाने टीको द्यो तौ।

तरै रिडमलजी कह्यो राजरो जीव सो हरो करो। म्हे कानानै टीको देसा। जठासुधो कानो धरतीरो धणी रहसी तठा सूधो ऊ कानारी धरतीमे उभो रहिनै पाणी न पीया। कहिनै कवरा इतरो सो साथ नीसरीयो नै राव चुडोजी १२ आसामीयासु वाजिनै नागोर काम आया लारै सतीया नागोर हुई सवत् १४६५ रा वैसाख वदि १४। राव चुडा पुत्र रिडमल। १, भीम २, रिणवीर ३, अरडकमाल ४, पचायण ५, सतो ६, कानो ७, रामो ८, पूनो, ९, सिवराज १०, लुमो ११, विजो १२, भोपत १३, राजिग १४।

कवित्त

रिडमल राजिगराव सतोहर चद पटतर,
रावत गुरु रिणधीर भुजा बल भीम समगल।
कानो अरडकमाल पुनो पोहवी अरिगजण,
सहसमाल अर विजो लपे दल लुढो भनण।
सिव राज रामदे गोपाल कहि भोपति सेना सबला,
चवदै ही राव चुडा तणा हेकण हेकसु अगला।

वार्त्ता

सवत् १४३२ राव रिडमलजीरो जनम सवत् १४६५। राव रिडमलजी चुडाजी टीकै बैठा। मुगल सेलमखान मुलतानरो। सोगायत राव चुडा नै मारिनै अजमेर रै पीररी जात आयौ। सो जात करिनै पाछो वल्यो। तरै राव रिडमलजी साथ भेलो करिनै राव चुडारा वैरमै सेलमखाननै कुट मारयौ।

इति राव चुडारी वार्त्ता

सम्पादकीय टिप्पणी

परिशिष्ट संख्या २ के रूप मे वीरवांण सम्बन्धी तीन राजस्थानी वार्तायें दी गई हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—

१ वीरमदे सलखावतरी वार्ता।

२ गोगादे वीरमोतरी वार्ता।

३ राव चूण्डारी वार्ता।

वीरवाण का विषय इतिहास की दृष्टि से बहुत उलझा हुआ है। अब तक हमारे इतिहासकारों ने हजारो की संख्या मे प्राप्त होने वाली ऐसी वार्त्ताओ को कपोलकल्पित मान कर इनको महत्व नही दिया है। वास्तव मे ऐसी वार्ताओं का ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्व हैं।

"वीरवाण" काव्य के अनेक अंश भी इन वार्ताओं में मिलते हैं, जिनसे काव्य की लोकप्रियता और सम्बन्धित विषय का ऐतिहासिक महत्व प्रकट होता है। साथ ही प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थो से भी इन वार्ताओ की पुष्टि होती है।

			पृष्ठ	पंक्ति
१८.	धरजासी धर लुट्टसी	नीसांणी ३	२	४
१९.	अषानंदा एकठा	,, ४	,,	२
२०.	हुकम'ज दियो हजूरियां	,, ,,	,,	३
२१.	चल करंतां चूक व्ही अरि काट उड़ाया	,, ,,	,,	४
२२.	राड़धरो कायम कियो	दूहा ५	३	१
२३.	लगर लपूं लार वहै	नीसाणी ५	,,	१
२४.	मालवियो बलराव है	,, ,,	,,	२
२५.	राज करै भ्रम रीत सो	,, ,,	,,	३
२६.	थित मगल थाई	,, ,,	,,	४
२७.	मंडलीका ज्यूं मालदे	,, ,,	,,	६
२८.	मिणधर रावल माल	दूहा ६	,,	२
२९.	रावल मालो राजवी राज करै भ्रम रूप	दूहा ७	,,	१
३०.	दत्तक भाव रचषा दुनी	,, ८	,,	२
३१.	तवेलै मालहा तणैं	,, ९	,,	१
३२.	तिका दिना मणियर तिसो	,, १०	,,	१
३३.	घर घर व्यावै घोड़ियां बधै वछेरा वेस	,, ,,	,,	२
३४.	पड़ै माहि नाही पड़ै घाट इसै घोड़ांहं	,, ११	४	१
३५.	ऐसा आवोड़ाह	,, ,,	,,	२
३६.	नग घर मीणियं नीपजै	,, १२	,,	१
३७.	तीज तणै मगरै त दिन सुता'ज लेगा सात	,, १६	,,	२
३८.	मांडल री धर मेलिया	,, १७	,,	२
३९.	कव्र हूंत हेरू कहै भ्रुवै ज सुण धणियांह	,, १८	,, ,,	,, १
४०.	कथ हेरूकी सुण कंवर	नीसाणी ६	,,	१
४१.	ऐहड़ा आपांणी	,, ,,	५	३
४२.	चढियो मालाणी	,, ,,	,,	५
४३.	तीजणिया सब आवजो	,, ,,	,,	६
४४.	कल मैहमद रै ईद रौ	,, ,,	,,	१०
४५.	ए तीजणियां एकठी	,, ,,	,,	१३

			पृष्ठ	पंक्ति
४६	धीराद चीराणी	नीसाणी ६	४	१५
४७	हुव कूक हुनाणी	,, ,,	,,	१७
४८	गींदोली करसू म्हे हय पीठ चढाणी	,, ,,	,,	१९
४९	लेगो ज्युहीं लानियो	,, ,,	,,	२०
५०	चाचल कमधा चढिया	,, ,,	,,	२१
५१	इल मीणियर कर कमलो	,, ,,	,,	२३
५२	दीनां गींदोली देऊ	दूहा २०	,,	२
५३	हूँ मैमदशा बेगड़ो	,, २१	,,	१
५४	रान गींदोली राखिया	,, २२	६	,,
५५	भिरड़ कोट कुल भाण	,, २३	,	,,
५६	बैर सत नी चालियो सनवा रै उर साल	,, २४	,,	,,
५७	सत्रै आनिया साथ	,, २७	,,	,,
५८	राणी रूपादे निसी सांवत जिसा सक्त	,, २९	,,	,,
५९	धारू निसङा उण घर भन भव तणा भगन्त	,, ,,	,	२
६०	रचियो सतजुग राह	, ३०	,,	,
६१	परो दैवण भिरड गढ	,, ,,	,,	२
६२	दिली सू चढि आया दुभण	नीसाणी ७	,,	,
६३	मांडलगढ मैहमद चढे	,, ,,	,,	२
६४	मांत लोपी सायरा मिल पाजेनलांणा	,, ,,	,,	३
६५	इण निज मैहमद आनियो	,, ,,	,,	४
६६	हजरत बहु भेला हुआ	,, ,,	७	५
६७,	पान गमानउ पूनियां	,, ,,	,,	७
६८	हिन्दू तुरसाणा	,, ,,	,,	९
६९	पेड़ तणा वन पोसणा	,, ,,	,,	१३
७०	वधू उगाणां	,, ,,	,	,,
७१	पूठण लागी नानिरा	दूहा ३१	,,	२
७२	रायुन्द करि ।। वचन	३२	,,	,
७३	रव पता धमुराज री	नीसाणी ८	,,	,
७४	आगनिरा अदयव है	,, ,,	,,	२

			पृष्ठ	पंक्ति
७५.	मूंछ धरै कर मालटे	नीसाणी ८	८	४
७६.	किलम अरावा त्यार कर	,, ,,	८	११
७७.	भुरजा भुरजा भिरड्गट वड़ नाल गड़की	,, ६	,,	१
७८.	सोर धुंवा रिण घोर सूं धर अंबर ढंकी	,, ,,	,,	२
७९.	असमान कड़क्की	,, ,,	,,	३
८०.	भूप तुराटा मेलिया जुध कारण जक्की	,, ,,	,,	४
८१.	आलम आलम अखियो धज नेज फरक्की	,, ,,	,,	५
८२.	जूटा पल जक्की	,, ,,	,,	६
८३.	म्लैछ तड़फड़ै मारका गीधाण गहक्की	,, ,,	,,	७
८४.	वीरांण वमक्की	,, ,,	,,	८
८५.	आसीस अछक्की	,, ,,	,,	९
८६.	हूरा वर तक्की	,, ,,	,,	१०
८७.	यण घावा छक्की	,, ,,	,,	११
८८.	सेना वेहुं संक्की	,, ,,	,,	१२
	हींस हुवै ऐराकिया	नीसाणी १०	९	३
	चढिया धूंस वाजता जंग भिड़िया जाणी	,, ,,	,,	४
	सादूलो किस सासवै	,, ,,	,,	६
	असमर लेकर उठिया	,, ,,	,,	७
	आप दरगह आखिया	,, ,,	,,	८
	विडंगा चढिया वीरवर	,, ,,	,,	९
	मीर छडाला मारिया खग वाग खिराणी	,, ,,	,,	१०
	केता अरियण कटिया	,, ,,	,,	११
	तेरै तुंगा भाजिया	,, ,,	,,	१२
	मीर गजां घड़ मारिया	,, ,,	,,	१४
	माल मिणियर देस में	,, ,,	,,	१५
	नाल न माना मुगलां	,, ,,	,,	१६
	साह दोऊं मन संकिया	दूहा ३५	,,	१

		पृष्ठ	पंक्ति
दीयो भूता दायजो	नीसाणी १५	१२	१०
अकथ कूंपै री असी	,, ,,	,,	१२
अ भग नंगारो आपियो	दूहा ४८	,,	१
कूंपा नै अस कवलियो भूता कीधो भेट	,, ,,	,,	२
कूंप कंवर विदा कियो	,, ५०	१३	१
भिरड़ कोट दल मेलसी हणसी हाथा हूंत	,, ५१	,,	१
भिड़ज कवलियो भूत	,, ,,	,,	२
कूंपा दे अस कवलियो मुख सूं कहियो माल	,, ५२	,,	१
कूंपै दीनो कवलियो	,, ५३	,,	१
कवलै आगै धूप कर दियो पागड़ै पाव	,, ५४	,,	२
कमधज चढियो कवलियै	,, ५५	,,	१
दल फिरिया दरियाव ज्यूं	,, ,,	,,	२
मुजरो कर जगमाल सूं	,, ५६	,,	१
जगै हुकम दे झोकिया	,, ५७	,,	१
मीरा रा माथा उडै	,, ५८	,,	१
कसियो राजकवार	,, ५९	,,	२
जबर भूत लै जाणिया	,, ६०	,,	१
जुध चढ़ियो जगमाल टे	नीसाणी १६	१४	२
बगतर कुंटा बीडिया	,, ,,	,,	३
चवरी रिण कामण चमूं	,, ,,	,,	५
झुलल़ीयां सग जानिया	,, ,,	,,	६
झाया भरं कवलियो	,, ,,	,,	८
जिण विध चालै जो सनै	,, ,,	,,	९
पग पग नेजा पाड़िया	,, १७	,,	७
कुण मारै राडै	,, ,,	,,	१०
ए लै फौजा अविया लख्खूं अठ्ठ लारां	,, १८	,,	२
दीधो वेरो दोलिया वीरम पूरा रा	,, ,,	,,	३

		पृष्ठ	पंक्ति
कहो कामात करारा	नीसाणी १८	१४	६
कर कूत सवारा	,, ,,	१५	१०
माल वधाया मोतिया	,, ,,	,,	११
तीन लाख धुर में त दिन	दूहा ६१	१५	१
पग पग नेजा पाडिया	,, ६२	,,	१
बीबी बूझे खान ने	,, ,,	,,	२
उक्त समापो इसरी	,, ६३	१६	१
गाऊ हूँ खुणियाणिया	,, ,,	,,	२
जसरपिया रा ऊ ट	,, ६६	,,	१
तूटी मैमद सू त दिन	,, ६७	,,	२
जद यू लिखा जबाब	,, ६६	,,	१
खिवा लेसू सात ही	,, ,,	,,	२
खिव धणी कद खकिया	,, ६९	,,	१
तूटि खिध सू इण तरे	,, ७१	१७	१
मधू उडाया मोर	,, ,,	,,	२
सुणियो जग सारी	नीसाणी १९	,,	३
सार भला मल खकिया	,, २०	,,	१
सिर तूटा फूटा मुगट	,, ,,	,,	२
मादु बहादर मार कै	,, ,,	,,	३
घट पड़िया घट घायला	,, ,,	,,	४
त्रामक बजाया	,, ,,	,,	५
लूटै सिंघ जग जीत कर			
दल मिथियर आया	,, ,,	,,	६
मलीनाथ चढू सुदै	दूहा ७३	,,	१
अ तहपुर बीरम त्रिया			
मांगलियाणी हात	,, ,,	,,	२
मिलिया वीरम जोदया	नीसाणी २१	,,	३
मांगलियाणी सू दलो	,, ,,	१८	५
वेस त्रिसू मा सू वणै	,, ,,	,,	७
अरन करो थै आप सू	,, ,,	,,	११
मागलियाणी मोद मन	दूहा ७४	,,	१
दलो, मडु, देपालनै			
खादू बीर सधीर	,, ,,	,,	२
मूल नही वैसास	,, ७५	,,	२

		पृष्ठ	पंक्ति
अबकी विरियां माय	दूहा ७६	१८	२
मांगलियाणी महल री वीरम मानी वात	,, ७७	,,	१
जंगा मंझ भिड़िया जवन	,, ७६	,,	२
वीरमदे रे हुकम सूं हालै दसूं हजार	,, ८१	१६	२
मापो दलो जोड़यो	नीसाणी २२	,,	२
विडंगा चढिया वीरवर	,, ,,	,,	६
मीर केई रिण मारिया	,, ,,	,,	८
वरस क कितायक वीतिया	दूहा ८३	,,	१
किणो ठाण अस कालमी	,, ,,	,,	२
मूंडा आगल माल रै किणियक कीधी आण	,, ८५	,,	२
मूंडा आगल माल रै	,, ८६	,,	१
कै पाबू रै कालमी कै सूरज रै सपताम	,, ,,	,,	२
उण सू वधी उपाध	,, ८७	,,	२
दस हजार रिपिया देऊं	,, ८८	२०	१
मदु ऊरी दे मोल	,, ,,	,,	२
दले वणो ही दाखियो	,, ८६	,,	१
राजविया रा तोल	,, ,,	,,	२
कीधी किणियक काम	,, ६०	,,	१
मारै लेसूं माल साकुर पण लेसूं मरव	,, ६२	,,	१
जद उण मालरा जाणियो	,, ६३	,,	१
पूगी दलै रै पास	,, ६५	,,	१
रूक झड़ी अध रात	,, ६६	,,	२
सुध ले साहिवाणा	नीसाणी २३	,,	१
दलै खान सामाध	,, ,,	,,	२
सूता बंधव सात कूं जौसेल जगाया	,, ,,	,,	४
खेड़ मिलण ने आवियो	दूहा ६८	२१	१
उण सूं वधी उपाध	,, ६६	,,	१
वीरम नै दीधी विडंग	,, ,,	,,	२

वीरम रै उणहिज व खत
पमगा हुआ पलांण

		पृष्ठ	पंक्ति
दलै साथ चढियो दुझन	दूहा १००	२१	१
कुरलै खेमे काढिया	,, ,,	,,	२
बद विकियो जगमालदे	,, १०१	,,	१
मन मार रमते	,, १०२	,,	२
जमराज विरतै	नीसाणी २४	,,	२
जुड़िया जुध जगा	,, ,,	,,	३
एकण जोइया वासतै	,, २५	,,	१
माल निछोड़ै माझियां	,, ,,	,,	४
बद धिन्यो जगमाल	,, ,,	,,	५
परतल हेकण परदलो	,, २६	,,	१
वीरम मालो बीछड़ै मड़ टीकू माड़	,, ,,	२२	४
बसियो वन माड़	,, २७	२२	४
नर चढियो पाटण नवी	,, ,,	,,	२
मागलियाणी तेह	,, ,,	,,	६
जोया पोह चावै न दिन	दूहा १०३	,,	१
चढ धूर चलाया	,, १०४	,,	२
यलवट्टी आया	नीमाणी २८	,,	१
रचि रोस चढाया	,, ,,	,,	२
पडिया पेगा पेडुसू	,, ,,	,,	४
मड आसायच भोमिया मज सूर सजाया	,, ,,	,,	५
सूरा कट पडिया समर	,, ,,	,,	६
कूट असाचय कढिया पग बाढ पिराया	,, ,,	,,	८
कमध बतीसू गाव सें	,, ,,	२३	९
सेभै वीरम सधु बड	,, ,,	,,	१०
ऊमग मन आणी	,, ,,	,,	११
परणे भटियाणी	,, २९	,,	१
नर गोगादे नेमियो	,, ,,	,,	३
रिणतूर रूडाया	,, ,,	,,	४
इम जोइया घर आविया	,, ३०	,,	१
	,, ,,	,,	३

			पृष्ठ	पंक्ति
उरड़ मोतियां थालभर	नीसाणी	३०	२३	४
वीरम कुरंगां वालवै	,,	३१	,,	१
जका पटक जगमाल रे	,,	,,	,,	२
आगमंणी न आवै	,,	,,	,,	३
दलै रीझ सामाद दी	,,	,,	,,	४
वीरम सूं जुध वाज कै	,,	,,	२४	५
दल बलसूं जगमालदे	,,	,,	,,	६
डेरा समियांणै दिया	,,	,,	,,	७
मेल दिलीसू मेलियो	,,	,,	,,	८
चेतवियोड़ो सिंह थल	,,	,,	,,	९
नगर धणी लिष नीत सू पढ़ आषर पानै	,,	३२	,,	१
माल कहै वै मारका	,,	,,	,,	२
जेथ करै जगमालदे	नीसाणी	,,	,,	३
मेल दिली सूं मेलियो तेड़ै तुरकां नै	,,	,,	,,	४
वीरम तो सूं वाजसी	,,	,,	,,	५
लाय कवीलां वागंल	,,	,,	,,	७
जांण सिचांणे झड़फिया	,,	,,	,,	९
लीधा असल फिर लाडणू वीरम वीरध्ये	,,	३३	,,	१
सत्र मोयल सध्ये	,,	,,	,,	२
वीरम कोडंड पकडियो मल तरगस मध्ये	,,	,,	,,	३
असवार डलध्ये	,,	,,	,,	४
क्या नीसाणी तीरदी मीरजादा कध्ये	,,	,,	,,	५
जांण कबूतर छुट गया हुव लथो वध्ये	,,	,,	,,	६
असरपियां आवै	,,	३४	,,	१
मिलिया वीरम मारगां	,,	,,	,,	४
तीन सहंस चढ़िया तरां	,,	३५	२५	३
असरपियां लीयां	,,	,,	,,	४
मोकल कल्ला भारमल	,,	३६	,,	१

			पृष्ठ	पंक्ति
इण कारण पडिया अठे जगलपुर आया	नीसाणी	३६	२५	,,
उदा उ सहर आविया	दूहा	१०७	,,	१
उदल नू पतसाहजी	नीसाणी	३७	,,	१
लिया पजाना साहदा	,,	,,	,,	३
ऊदा गुनै हगार तू	,,	,,	,,	४
जगलपुर आया	,,	३८	,,	१
झूझाऊ पतसाहरा	,,	,,	,,	२
रिणताल रचाया	,,	,,	,,	५
काढे श्रोटी कोटसू	,,	३९	२६	७
दस हजार चढिया दुझल	,,	,,	,,	१०
चढ घोडा भड चालिया	,,	४०	,,	१
मिलिया भारत जागल	,,	,,	,,	२
मीर केइ रिण मारिया	नीसाणी	,,	,,	३
काट कटका काढिया	,,	,,	,,	४
हूर अपछरूर हरष अत	,,	,,	,,	५
वीरम घोडे जागल साहियाण सिधाया	,,	,,	,,	७
वैरोलप रहना कूदलजी दरसाया	,,	,,	,,	१४
बारा गाम ब उगसिया	,,	,,	,,	१५
डाण वले उचका दिया	,,	,,	,,	१६
धाडै धन धुर माझिया	,,	,,	,,	१७
वारम नू देवण वले	,,	,,	,,	१८
लपवैरे पैदा गुनप	दूहा	१०८	२६	१
लेखे रिपिया लाप	,,	,,	,,	२
पूजै हरियल पीर कु	,,	१०९	,,	१
पमगा सिरै पड़ाहियो हीरलोहि हुवास	,,	११०	२७	२
मादू चढै जवाद	,,	१११	,,	१
हीराले धीरे चढै	,,	,,	,,	२
जोयास जुध जुड़णरी	,,	११४	,,	२
सो पग वागा सूरमा	,,	११५	,,	१

		पृष्ठ	पंक्ति
जुडिया रिण जोधार	दूहा ११५	,,	२
पिड लीधाँ सुरापणो	,, ११६	,,	१
जामै छल धणियां जिसा	,, ,,	,,	२
वीरम रै सत्र साढिया	नीसाणी ४१	,,	२
वीरम चित्त विटालिया	,, ,,	,,	३
सात हजारूं साढिया	,, ,,	,,	४
आयर जिणरी ओठियां कल कूक कराणी	,, ,,	,,	५
दस हजार चढिया दुभल	,, ,,	,,	६
ला रै लुणियाणी	,, ,,	२८	८
साचो सलाखाणी	,, ,,	,,	९
मलीनाथ जगमालसूं	,, ,,	,,	१०
आंपा मारण उठिया	,, ,,	,,	१२
लखवेरै सूँ थटलिया	,, ४२	,,	१
सरवर भरिया नीरसूँ	,, ,,	,,	३
मोढल आवै मिलण कूँ	नीसाणी ,,	,,	५
मूँछै अतर गुलाब का	,, ,,	,,	१०
पोलां तोरण बंधिया	,, ,,	,,	११
मोटल मिलियां वीरमे आफू गलवाया	,, ,,	,,	१३
आफू हाथ उछाल के	,, ,,	,,	१४
मोटल कूँ भी मारियो	,, ,,	,,	१५
धन लूटे लीधी धरा गढ़ कूँ अपणाया	,, ,,	,,	१६
हरिया भाले हाथ सूं	,, ,,	,,	१७
मदू अषै मारको	,, ,,	,,	२१
वीर रस छाया	,, ,,	,,	२२
पाफर हिंदू काटकै	,, ,,	२९	२४
बाता सूं बिलमाय कै	,, ,,	,,	२६
सीहै कहिया वचन सब	,, ,,	,,	२७
पांच दिहाड़ां पालिया	,, ,,	,,	२९
जिणरै कासूं जेज	दूहा ११८	,,	२
दलै जिसो नह देखियो	सोरठो ११९	,,	१
बत्रर गुना जिण जारिया	,, ,,	,,	२

		पृष्ठ	पंक्ति
दलै मेज परधान कू	निसाणी ४३	२९	१
तुम हिन्दू गुना करो	,, ,,	,,	७
..ाम धणियां हदे	,, ,,	,,	८
आय परधानदू अखियो	,, ४४	३०	४
दले अरु देपालकू	, ,,	,,	७
वीरम न्याय न हल्लही	,, ,,	,,	८
पोतै फेरू पाजरू	,, ,,	,,	१०
दोनू तरफारा दलो	दूहा ११२	,,	१
झलिया रहै न जोइया	,, ,,	,,	२
दिन अगै पसरादियै	निसाणी ४५	,,	[illegible]
माणस पनरै मारिया	,, ,,	,,	३
झरता हत्ता जोइया बुकाऊ आया	,, ,,	,,	४
सो सारा साहियाण में	,, ,,	,,	५
अधी ऊच आपा ..र बधी अपणाया	,, ,,	,,	६
दस हजार चढिया दुझल	निसाणी ,,	,,	१०
लपवेरे ऊपर लहर	,, ,,	,,	११
यू देपाले अखिया सुणो दला लुणियाणी	,, ४६	३१	१
वास चोवीस वसानिया	,, ,,	,,	२
मुदै जनाइ मारियो	दूहा १२३	,,	१
सूप परी साहियाण	,, ,,	,,	२
दुसह वचन कहिया दलै	, १२५	,,	१
तिण समीपै पूगल तणो	,, ,,	,,	२
बूकणरै दोय बेटिया	नीसाणी ४७	,,	१
सो मागी देवराज य	,, ,,	,,	४
रानल सुभड़ राजवण	,, ,,	,,	५
कहियो जद कसमीर दे	,, ,,	,,	७
हूँ पणा सू हिंदवा	,, ,,	,,	८
सो कुण हिंदू हम सूणा जिसडू परणालै	,, ,,	,,	९
परणा सू सगपण करै	,, ,,	,,	१०
जद पाछो कहियो जसू	,, ,,	,,	११

वीरम साहस तोलिया
छूट पडी किरमाणिया
वीमाह न होई
अवलन सूजो आवियो
सो साची होई
बूकणका घर बोटिया
साला सातूइ
बोतल हातल बेटियां
वीमाह न होइ
आविया दल्लेपा आगै
मूझ गनायत मारिया
जुध छुट्टी जागै
वीरम सू जुध वाजमा
ऐ बल धारे ऊठिया
उजवाला घर आपणी
हैंवर दोय हजारिया
सहस दसू ही साड़िया
लाग पचासा लूटिया
मोटल सिरपा मारिया
जोइया सू जुध जुटआ
मावै न छाती मधू
झलिया रहै न जोइया
दोऊ दिसरा दुय दलो
मदपूर मचोले
कटा लगा कथ कूड़
लप वारै वीरम कनै
आयाकू आन्द दिया
लप वेरो रहवास कू
उसमासू वीरम तनै
चोथी गाम चबूतरा
पोसे इकसट पाजरू
धरनीहि रहाया
हाती रहै न जूरिया
मिलिया चिड़िया महलै

	पृष्ठ	पंक्ति
नीसाणी ५२	,,	२
,, ,,	,,	३
,, ,,	,,	४
,, ,,	३४	५
,, ,	,,	६
,, ५३	,,	९
,, ,,	,,	३
,, ,,	,,	४
,, ,,	,,	५
,, ,,	,,	६
,, ५४	,,	२
,, ,,	,,	३
,, ,,	,,	४
,, ,,	,,	५
निसाणी ,,	,,	६
,, ,,	,	७
, ,,	,,	८
,, ,	,,	९
,, ,,	३५	१३
सोरठा १३५	,,	१
नीमाणी ५५	,	२
,, ,,	,,	४
,, ,,	,	५
,, ,,	,,	७
,, ,,	,,	९
,, ,,	,,	१०
,, ,,	,,	११
,, ,,	,,	१२
,, ,,	,	१३

		पृष्ठ	पंक्ति
हम लीध निभाया	नीसांणी ५५	३५	१५
पादर हिंदू गुण किया	,, ,,	,,	१८
थोडा जग मांही	,, ५६	,,	२
मन्न वैटां सीहांगमैं	,, ,,	३६	५
सब लेवण सीहांणकूं	,, ,,	,,	६
जोरू छोरू छोड़कर	,, ,,	,,	६
अंत वीरम आया	,, ,,	,,	११
लग मैं वचन निभाया	,, ,,	,,	१२
मागलियांणी मोट मन	,, ,,	,,	१४
दलै अरु देपाल कूं	,, ,,	,,	१६
पालो रूंप न काटवै	,, ,,	,,	१७
थे सांतू भाया	,, ,,	,,	१८
कथन दलाहता कया	दूहा १३६	,,	१
आई समझायो वोहत	,, ,,	,,	२
मांगलियांणी मापली	नीसांणी ५८	,,	१
क्यूं काकल कीनै	,, ,,	,,	३
हकं राटोहड हल्लण	,, ,,	,,	४
वीरम चढिया वीरवर	,, ५६	,,	१
वीरम न्यात न हलवी अनियम मुहाणा	,, ,,	३७	४
इम मुखावर वोलिया चढिया मत आण	नीसांणी ,,	,,	५
है वे हिन्दू समझ मन फरहास पिराणा	,, ,,	,,	७
दरखत हग्यिल पीरदां	,, ६०	,,	१
लोड्या देस विदेस मे	,, ,,	,,	२
पीर परच्चा इल प्रगट	,, ,,	,,	३
राम रहिम जु एक है	,, ,,	,,	४
वीर फरासा बादशा दरखाती ढोवै	,, ,,	,,	५
के मूल्लां तागा करै	,, ,,	,,	६
बारै कोसां नेवंदे वो ढोल सुणाया	,, ,,	६१	?
सो सुणिया सीहाण मै	,, ,,	,,	४

		पृष्ठ	पंक्ति
वीरम सू जुध बाजआ			
चित चेत न चल्लै			
जारो सरणो ताकियो	नीसाणी ६२		
धणियाप धराई		३८	७
वेहिज मारण ऊठिया	,, ६३		
सोहीज सहाइ		,	२
मागलियाणी मोटको	,, ,,		
आपा कुसले काढिया	,, ,,	,,	३
मदु वै वै दिन मारका	,, ,,	,,	४
कुछ वीरम कू नह कैया	,, ,,	,,	५
बारै गाव ज वगसिया	,, ६४	,,	६
सात हजारा साढिया	,, ,,	३९	१
दिन हेक दगाइ		,,	२
मोटल सिरधा मारिया	,, ,,		
जिण सऊड जवाई		,	३
पाधा पोसे पाजरू	,, ,,		
मधू अप्पे मारको सच	,, ,,	,,	४
गुना अनेका जारिया	,, ,,	,,	५
दल्लै लुणियाणी		,,	७
सो परहास कटाविया	,, ६५		
पाफर माल कुराण कू	,, ,,	,,	१
दुमभल मदु देपालदे	,, ,,	,,	३
अपरा बाधर आपणी	,, ,,	,,	४
केदेहा पाणी		,,	५
बावे घरसू बोईया	,, ,,		
कै सूटै सलपाणी		,,	७
हरपत मन सूरा हुवा	,, ,,		
कहिया मड़ मायां दलै	,, ६६	,,	८
वीरम सू जासो विहण	दूहा १४३	,,	३
लपवेरै जाजो मती	,, ,,	,,	१
साकुर अरपा पांढवनै	,,१४४	,,	२
मदू सेर जवाद पर	नीसाण ६७	,,	२
बगतर कुठा चीड़िया	,, ,,	४०	१
सार छतीसू साफ सच	,, ,,	,,	३
इम मदुवे आया		,,	५
जैतलसू देपालै सफ	,, ,,		
	,, ,,	,,	६
		,,	८

		पृष्ठ	पंक्ति
मिलिया अब सारा मरद	नीसाणी ६७	४०	९
चढीया सामंत सूरमा मुछां वल घल्लै	,, ६८	,,	१
हाथां खग झल्लै	,, ,,	,,	२
कर षवरां किल्लै	,, ,,	,,	३
घर राख्या दल्लै	,, ,,	,,	४
आप गवाला आषियो	,, ६९	,,	१
अण भंग कोपे ऊठियो	,, ,,	,,	२
ढोल वधाई वागिया	,, ,,	,,	३
मांगलियाणी सांपली धण उभी पल्लै	,, ७०	४१	१
रहजा नार वरजियो सुण मेरी गल्लै	,, ,,	,,	२
आज पडप्पण आपरै धन लीधो दल्लै	,, ,,	,,	३
कलकी थूहल्लै	,, ,,	,,	४
फिर वीरम कूं आषियो कही माँगलियांणी	,, ७१	,,	१
जे तूं ठाकर संलषियांण ए भी लुणियांणी	,, ,,	,,	२
दल्लो अवगुणं दाटवै गुण आदू जाणी	,, ,,	,,	३
कहियो कमधजं रीसकर	,, ,,	,,	५
सांणी कूं कहियो सरस है	,, ७२	,,	४
आफू ले उमंदा	,, ,,	,,	५
वोहतत्रथीटे वेलियां	,, ,,	,,	६
विध विधकर मन वेठियो षिम पून किताई	,, ,,	,,	७
मागलियांणी पालवा	,, ,,	,,	९
गुना अनेका जारिया दल्लै सिपवाई	,, ,,	,,	१०
मूझ तणी कंथ मानकै	,, ,,	,,	१२
लषवेरै लाई	,, ,,	,,	१४
हूं पण कागद-मोकलूं	,, ,,	,,	१५

		पृष्ठ	पंक्ति
मागलियांणी माहरी	नीसाणी ७३	४२	१
हू आलस बैठस्	,, ,,	,,	४
अरक विद्रुम दिस ऊगवै	,, ,,	,,	६
वेग घटै वीहगेसकी	,, ,,	,,	७
गोरष भूले ग्यानकू	,, ,,	,,	८
धणिया धाडेता तणीं	,, ,,	,,	१०
हू सुन्द कर वेहू घरै	,, ,,	,,	११
उठिया अवतारी	,, ७४	,,	१
हड हड नारद हसियो	,, ,,	,,	२
मागलियांणी स्यामनै	,, ,,	,,	३
घूड चलो हण ढोल रे			
लप घोबा लारी	,, ,,	,,	४
रांणी पाणी रालियो	,, ,,	,,	८
सुणिये गल मारी	,, ,,	,,	१०
सांणी करी समाधकू	,, ,,	,,	१२
दोय सहस चढिया दुभल	,, ७५	,,	१
माये माये आविया	,, ,,	४३	४
मागलियां अरू सायला	,, ,,	,,	५
माणक हरियो दोलियो			
घट घाट घरवाणी	,, ७६	,,	१
मिट्ट हजूरी तेण दिन	,, ,,	,,	२
रोवण भाक लगू र जू	,, ,,	,,	३
दस सहँसु चढिया	,, ७७	,,	१
हुऐ घर तस्की	,, ,,	,,	३
घोमे मकरस्की	,, ,,	,,	४
घट पाधर विडे	नीसाणी ७८	,,	२
वीदम देगे कुंबरां			
बन भर विहडे	,, ,,	,,	३
कर पारस अडे	,, ,,	,,	४
दम्नदि गडडै	,, ,,	,,	५
बरबा सुरां सांतां	,, ७६	,,	१
गीधण आतर गिगनडू	,, ,,	,,	२
देगर भूतर धमकिया	,, ,,	,,	३
धाहयो घटै बबाद सू	,, ,,	,,	५

		पृष्ठ	पंक्ति
सिर भालै साजियां मदु लुणीयांणी	नीसाणी ७६	४३	७
वाढ़ घणा सिर वैरिया	,, ८०	,,	१
साकुर एण जवाद कूं केता रंग कैण	,, ,,	,,	२
मूछा रंग थारां मदु रजवट दा गहणा	,, ,,	,,	३
वोहत वकारै वेलीयां	,, ,,	४४	४
तोषार झपट्टी	,, ८१	,,	१
छुपी मियानां नीसरी पुरसांण चोहट्टी	,, ,,	,,	२
पैसट जोइया पाडिया जंग वीरम जुट्टी	,, ,,	,,	३
षल षैंगां पुट्टी	,, ,,	,,	४
रिण मांझ समथ्थै	,, ८२	,,	१
इल भारत इथ्थै	,, ,,	,,	२
षागां झड़ फड़ पेलिया रिण फाग रमंथ्थै	,, ,,	,,	३
हुय लथो वथ्थै	,, ,,	,,	४
साजै हाथ कटारियां नर वाहै वथ्थै	,, ,,	,,	५
अस वीरम की उच्चके	,, ८३	,,	४
इतै जवाद समाद उत	दूहा १४७	,,	१
वलवंत मदु वोलिया विध चूक वताया	नीशाणी ८४	,,	१
ताली तासक तोवरा	,, ,,	,,	३
धीरी धीरी धीरपै	,, ,,	,,	४
अछरा रथ आया	,, ,,	,,	५
सुसती करण समाध कूं	,, ,,	४५	७
ऊंची ऊंची ऊछलै	,, ,,	,,	८
ताजण मटकी तोपसा लषतांन लगाया	,, ,,	,,	१०
वीरम वदली त्रिडंग लष	,, ,,	,,	११
धींव पडै तरवारियां	,, ,,	,,	१३
वीरम हांकै वीडंककूं	,, ,,	,,	१५

		पृष्ठ	पंक्ति
जद वीरम मन जाणिया	नीसाणी ८४	४५	१६
अला अला ऊचार कै			
चढ पैंगा चल्ला			
हुय वीरा हल्ला	,, ८५		
वीरम मल्ला वीटिया	,, ,,	,,	१
बाजी गलबल्ला		,,	२
भड़ वीरम मदु पै भिडे	,, ,,		
जाणै जम टिल्ला		,,	३
भागै रिण भल्ला	,, ,,		
घड कुंवर घल्ला	,, ,,	,,	४
उठिया गिर टिल्ला	,, ,,	,,	५
सुण साची सल्ला	,, ,,		६
दिन कढता दल्ला	,, ,,	,,	७
करता रिवमल्ला	,, ,,	,,	८
मिलिया दल मैदान में	,, ,,	,,	९
माफी कर सल्ला		,,	१०
बण बेठा बल्ला	,, ,,		
कहा भाई भल्ला	,, ,,	,,	११
बादुर दादी बोलिया	,, ,,	,,	१२
नीसाणी गल्ला		,,	१३
नल्ला सल्ला नीवगै	,, ,,		
सो जाणौं अल्ला		,,	१४
मदु अख्खे वीरमा	,, ,,		
लाप गुना मैं जारिया	,, ८६	,,	१५
थें नह गुना जारिया	,, ,,	४६	१
दला विना तू जारतो	,, ,,	,,	२
वीरम कहिया बाद मैं	,, ,,	,,	४
भड सारा मारू भिडो	,, ,,	,,	५
जद मदु हूँ जाणसू	,, ,,	,,	७
कहियो मदू कटक कू	,, ,,	,,	९
वीरम सू जुध जूटजो	,, ,,	,,	१०
तोले तरवारी		,,	११
बाण बदुक कबाण कू	,, ,,		
दूरी कर डारी		,,	१२
सामल मद सोय	,, ,,		
	दूहा १४८	,,	१३
		,,	१

			पृष्ठ	पंक्ति
वीरम सूं जुध आजआ	दूहा	१४८	४६	२
बक्का रै कुण वीरमो	,,	१४६	,,	२
सिंह पटाभर साप हो	नीसाणी	८७	,,	४
तेरू कुण सायर तिरै जम कूं कुण मारै	,,	,,	,,	५
मदू तो भिन मारको	,,	,,	४७	७
मत धड़को दाषै मदू	,,	,,	,,	१०
कथ राषां लारै	,,	,,	,,	१२
बाथ घलां असमांणसूं	,,	,,	,,	१३
सज दोऊ दल सामटा विच घूमर वग्गी	,,	८८	,,	१
असमाण सिलग्गी	,,	,,	,,	२
फिर पीळी दग्गी	,,	,,	,,	३
घूमावण लग्गी	,,	,,	,,	४
विच मूठां लग्गी	,,	,,	,,	५
पोड चहुं जब कंपडा पग होय अपग्गी	,,	,,	,,	६
उतरिया वीरम कमंध	,,	८६	,,	१
भाई भाई भाषियो	,,	,,	,,	२
पैसठ अस चढ़ पाडिया	,,	,,	,,	४
भल भलवाड भलक्किया	,,	६०	,,	३
भड उर फूट अफारा	,,	,,	,,	४
पडिया असकड पाषती	,,	,,	,,	५
ढलिया विणजारा	,,	,,	,,	६
पालै पनरै पाड़िया	,,	,,	,,	७
भिड़ षग भल्लै षारा	,,	,,	,,	८
मांगलिया अरु साषला	,,	,,	४८	६
ओनैत अगारा	,,	,,	,,	१०
तूटा जिम तारा	,,	,,	,,	१२
मदपै अर मथ्थै	,,	६१	,,	१
सामी मदु पै साजदी षग भाटक षथ्थै	,,	,,	,,	२
घण जाण घडथ्थै	,,	,,	,,	३

		पृष्ठ	पंक्ति
लाण रमै रिणु गेरिया डडे हड हथ्थै	निसाणी ६१	४८	४
मदुपै वीरम माचिया	,, ६२	,,	१
हाथी जाणक हूँचकै	,, ,,	,,	२
साकल छूटा सापरत	,, ,,	,,	३
हदपूरै हामा	,, ,,	,,	४
कीदा हद कामा	,, ,,	,,	६
मोटा दुसमण मारिया	,, ,,	,,	७
वल मूछा वाली	,, ६३	,,	१
एकण धाव उतारिया	,, ,,	,,	२
जेतल जसू मोठिया	,, ,,	,,	४
अण भग लूण उजालियो चालै	,, ,,	,,	५
वीरम अ ग विहडिया मूछा वल घल्लै	,, ६४	,,	१
कर क्रोध अचल्लै	,, ,,	,,	२
भीलपनै कू माखियो झट तरगस झल्लै	,, ,,	,,	३
कीधा चप लल्लै	,, ,,	,,	४
धानष सामा पाव दे सर दाता झल्लै	,, ,,	,,	५
छूटा तीर अचिंतरा धड़ फूग दल्लै	,, ,,	४९	६
चूका वैग पिलांणतै ठलटा कर चल्लै	, ,	,,	७
धनप चढाया पूनियै	,, ६५		१
दह पडियो देपालदे धरलैणी चोटी	,, ,,	,,	३
परगर कीधी पनियै	,, ,,	,,	४
वीरम मदुरै पोढीया	,, ६६	,,	२
प्यार सहस पड सूरमा	,, ,,	,,	३
अ ग वीरमरै ओपिया	दूहा १४६	,,	१
जूट हो थारे	निसाणी ६७	,,	१
वीरमसु जुध वाजणै	,, ,,	,,	३
विढ रहिया रिण खेत बिच	दूहा १४७	,,	१
नव कोटी रा नाथ	,, ,,	,,	२

		पृष्ठ	पंक्ति
पडिया वीरम पाघती संग इतरा सूरा	नीसांणी ९८	४६	१
पडघेत सनूरां	,, ,,	,,	२
पडियो चायल सैंसमल	,, ,,	५०	३
पडियो आहेड़ी पनो झड़ियो पग झाटे	,, ९९	,,	३
फिर मर तन काटे	,, ,,	,,	४
मांगलियो मंगलौ पडै	,,१००	,,	१
वीरम संग वीठिया	,, ,,	,,	३
रिण पड़िया राठोड़	दूहा१४८	,,	२
जसू रिण में जूझियो कर जोस हमल्ला	नीसांणी१०१	,,	१
झड तेगा झल्ला	,, ,,	,,	२
धुडले वर घल्ला	,, ,,	,,	३
हूरां संग हल्ला	,, ,,	,,	४
चढिया डोली च्यार गिरणे गल वल्ला	,, ,,	,,	५
कर अल्ला अल्ला	,, ,,	,,	६
दलो कहै मै वरजिया	,,१०२	,,	१
वीरम सूं जुध वाजनै धूड़ वलो इण धाड़ नै	,, ,,	,,	२
जो कीधी (सो) पाई	,, ,,	,,	४
दलै वीगड़ी देख ने	,, ,,	५१	५
तेजल संग दे मेलिया चूंडो अरु वाई	,, ,,	,,	६
दोय दिहाड़ा पंथ वुही थलवट्टी आई	,, ,,	,,	७
तक घोड़ा लावै	,,१०३	,,	२
वालक तोहि न वीसरै	,, ,,	,,	३
जद आले मन जाणियौ	दूहा १४९	,,	२
अही फण कीधो ऊपरा भूपत तप भारीह	,,१५०	,,	१
आलै मन जद जाणियो ओर कोई अवतारीह	,, ,,	,,	२
चढिया आलो चूंडरज	नीसांणी१०४	,,	२

		पृष्ठ	पंक्ति
माला सू चूडो मिलै	नीसाणी १०४	५१	३
मन चिन्त मिटावै	,, ,,	,,	६
उगमसी नै आवियो	दूहा १५१	,,	१
मडोवर (मैं) दी कर महर	नीसाणी १०५	५२	५
चामडरै बरसू करै	,, १०६	,,	३
चढी घर हुय चुडकू	,, ,,	,,	६
सग चूडा लाया	,, ,,	,,	८
छल भीधा बल दाखिया	,, ,,	,,	६
हर नल इदा राण हुय	,, ,,	,,	१०
ऐम तलेठी आविया	,, ,,	,,	११
सो गाडा उगम सरच गड भितर लाया	,, ,,	,,	१३
मुगला दोय हजार नू	,, ,,	,,	१६
राज मडोवर चूड नू	,, ,,	,,	१७
रिधू मडोवर राज	दूहा १५३	,,	२
उगम चूडे आगला	नीसणी १०७	५३	१
किलमा थांणा काटिया	,, ,,	,,	३
इदानिम परजो अवर	दूहा १५४	,,	१
दिवी मडोवर दायजे चूडो चवरी चाड	,, ,,	,,	२
सेआवैयू आत सत	दूहा १५५	,,	१
सधो गोग देवराज	,, ,,	,,	२
घर	दूहा १५६	,,	१
मडोवर रो भोमियो	,, ,,	,,	२
धजियो गोग सुजान	दूहा १५७	,,	२
उटिगो दैवज कालियो एदी गल कचर	नीसाणी १०८	,,	२
महर हुई गिरधर मया	,, ,,	,,	८
पर गोगै पल पाटियो	,, ,,	,,	६
वपियो बाल पर	,, ,,	,,	११
दल हाली दल वाट सू	नीसाणी १०६	,,	१
उठ टलो पर आवियो	,, ,,	,,	६
उदम धीरै वांन सग पुगल पाधारी	,, ,,	,,	७

		पृष्ठ	पंक्ति
चूंडो हेरूसूं चवै पाछो वचन प्रियोग	दूहा १५६	५५	१
हूँ मामो मारू नहीं	,, ,,	,,	२
घर चित जा तूं धीरियां	दूहा १६०	,,	१
धीरप दे मिल धीरमूं	दूहा १६१	,,	१
सुगन लेट चढियो सरस वेर लेण वरवीर	,, ,,	,,	२
चढ पूर चलाया	नीसाणी १११	,,	२
गड गड चवक गाजिया	,, ,,	,,	३
असं पडिया उंबा त्रै	,, ,,	,,	४
त्रैडा ऊजड त्राटतै	,, ,,	,,	५
भाला आव ठहक्किया	,, ,,	,,	७
सूतां फोही सबद सुण	,, ,,	,,	११
अब गल सीहों ऊचरै	,, ,,	,,	१५
अलगासूं असं पेड़िया	नीसाणी ११२	,,	१
ऊठ वेदला जोइया सूतो कन जंगे	,, ,,	,,	२
निस आधी षल नेमियो	दूहा १६२	५६	१
घण सिर फूटै घट	,, ,,	,,	२
पांगां किरमर पाकड़े रिदे जालधर रट्ट	दूहा १६३	,,	१
लेवण वीजल वट्ट	,, ,,	,,	२
पूरां ही त्रल हट्ट	दूहा १६४	,,	१
ईसा पिलंग घरट्ट	,, ,,	,,	२
नवगढ पत्त नरेस	दूहा १६५	,,	१
देउ सष्रियां साथ ले	नीसाणी ११३	,,	१
वाधावे गोगे कमध	,, ,,	,,	२
वैर पितारो वालियो	,, ,,	,,	३
तिलक कियो इण कारणै	,, ,,	,,	४
कहियो जद गोगे कमध	नीसाणी ११४	,,	१
सिर दूं मारो काटकर	,, ,,	,,	२
हेसु पमंग पड़ाहियो	,, ,,	,,	४
षवरा मेलूं धीरपै	,, ,,	,,	५
भिड त्रेनू भाई	,, ,,	,,	६

		पृष्ठ	पंक्ति
बेठां हूत सवाय	दूहा १६६	५६	१
हैसू लियो बचाय	" "	"	२
तू आया दल राजदा	नीसाणी ११५	५७	२
पमग चढै पड्डाहिये	" "	"	३
कर पूरो लगाम दे			
पिठ्ठ ब मडे पलाण	दूहा १६७	"	१
पुगल जाइये पड़ाइया	" "	"	२
गोगै दल्लो मारीयो	दूहा १६८	"	१
पाहलियो केहरकली	दूहा १७०	"	१
विडे गाउ जड़ वाट	" "	"	२
काह कट्टका आह सुण सजिया मड सारा	नीसाणी ११६	"	१
ऊडै रज असमान मैं	" "	"	३
बेदगी पडिया विडग पथ	" "	"	५
हेक मना हुय हालिया	नीसाणी ११७	"	१
असी कोस अपालिया क्या लग्गै वारी	" "	"	२
वणिया दुलहा वाहरू चप वैर विचारी	" "	"	३
गोग लछु सिर ऊतरै	" "	५८	५
धीर सुणै अरि धूघडै लग सपड़ै लारी	" "	"	६
चढिया उदल धीर दे धरती धूजाणी	नीसाणी ११८	"	२
हीरालो न पड्डाहियो	" "	"	३
आय लघूसर उतरा गहमें मरियोडा	नीसाणी ११९	"	१
दूर अचाणक देखिया	" "	"	३
रिण बज्जे रोडा	" "	"	४
भूपा विरसा आपरा	" "	"	५
दनिया हाथ न आवसी	" "	"	६
थहिया दल पाला	नीसाणी १२०	"	१
रोसैल रढाला	" "	"	३

		पृष्ठ	पंक्ति
सूरा सिंघण थेह ज्यूं	नीसाणी १२०	५८	५
कूड़ा रांण कसुंस कर	,, १२१	,,	३
अभंग लुणाणी ऊठिया	,, ,,	,,	४
पोह धर मूछां पांण	दूहा १७१	,,	१
दिस गोगारे मलफिया	,, ,,	,,	२
जूटा षल जक्कै सेल भचडका यूं सहे	नीसाणी १२२	५६	१
किरमाल कडक्के	,, ,,	,,	२
कैमर खरलक्कै	,, ,,	,,	३
मुष मारस बक्कै तेग घड़ा भड़ बीछड़े	,, ,,	,,	४
पड़ लोथ दड़क्कै	,, ,,	,,	५
भल जमरांण जऊक्कै	,, ,,	,,	६
रथ भाण ठहक्कै	,, ,,	,,	७
आंण चढिया चक्कै	,, ,,	,,	८
गुणियण ऊभा वादसै वोहला जस वक्कै	,, ,,	,,	६
वग्वा हूरां अच्छरा वेहूं हकक्कै	,, ,,	,,	१०
दोनूं ओड़ां वेग दे लोही धकधक्कै	,, ,,	,,	११
जांणक भरिय पषालदा मुष षोल्या सिक्कै	,, ,,	,,	१२
धरती पड़िया धीरदे वायक मुष बक्कै	,, ,,	,,	१३
नर गोगा जक्कै	,, ,,	,,	१४
उदल हेसूं आहड़ै	नीसाणी १२३	,,	२
कवर भीड़वा कारणै	,, ,,	,,	३
जोध वेहु रिण जुटिया	,, ,,	,,	४
पड़िया अस भाड़ पाषती	,, ,,	,,	५
भिड़ियाल महा भड़	,, ,,	,,	६
पंषणियां भष पूरिया रिण रैणा रत्तड़	,, ,,	,,	७

		पृष्ठ	पंक्ति
चढ़े विमाणा चालिया	नीसाणी १२३	५६	८
धड वड़ वानप चाढिया गुण वीध मणका	१२४	,,	१
तीर छुटोहा छूटगा नह सूज तनका	,, ,,	,,	२
जूभा मड़ नका	,, ,,	६०	३
जोड़या कमधज जुटिया	,, ,,	,,	४
भिड़िया मड़ वका	,, ,,	,,	६
सग्गा रक समाप दै	नीसाणी १२५	,,	३
कहियो गंगै हास कर दे सग्गा ताली	,, ,,	,	६
जीते कर सम्मर	नीसाणी १२६	,,	१
काटये पग गोगे कियो	,, ,,	,,	२
पाव उलट्टा साधीया	,, ,,	,,	४
तो काया अभ्रर	,, ,,	,	५
हुय सिध दसमो हालियो	,, ,	,,	६
सात वीस नीसाणिया	दूहा १७२	६१	१
भाणिया गुण सुभ भाय	,, ,,	,,	२
सुध वानीजो सकवियां	दूहा १७३	,,	२

———

सम्पादकीय टिप्पणी

वीरवांण का कर्त्ता ढाढी बादर विशेष शिक्षित नही ज्ञात होता। साथ ही एक ढाढी की कृति होने से इसको काव्य शास्त्र की दृष्टि से शुद्ध करने और प्रतियाँ लिखने के प्रयत्न भी बहुत कम हुए। मूल पाठ मे किसी तरह का परिवर्तन करना हमने वैज्ञानिक दृष्टि से ठीक नही समझा है। परिशिष्ट ३ के अन्तर्गत हमने देवगढ प्रति के पाठान्तर दिये है जिनसे अर्थ समझने मे सुविधा रहती है।

वीरवांण मे काव्य-शास्त्र की दृष्टि से अनेक भूले दिखाई देती हैं किन्तु इस काव्य की पूरी शुद्ध प्रतियाँ नही उपलब्ध हो जाती तब तक मूल पाठ मे फेर-बदल करना उचित नही ज्ञात होता।

परिशिष्ट ४

मुहणोत नैणसी का वक्तव्य

"वीरम महेवे के पास गुढा बाधकर रहता था। महेवे में खून कर कोई अपराधी वीरमदेव के गूढे में आ शरण ले लेता तो वह उसे रख लेता और कोई उसको पकड़ने न पाता। एक समय जोइया दल्ला भाइयों से लड़कर गुजरात में चाकरी करने चला गया, बहुत दिनों तक वहा रहा और विवाह भी कर लिया। अब उसकी इच्छा हुई कि स्वदेश में जाना चाहिये, अपनी स्त्री को लेकर चला, मार्ग में महेवे पहुँचकर एक कुम्हारी के घर डेरा किया। कुम्हारी से कहा कि बाल बनाने के वास्ते किसी नाई को बुला दे। वह नाई को ले आई, बाल बनवाये। नाई की जात चकोर होती है, चारों ओर निगाह फैलाई, अच्छी घोड़ी, सुंदर स्त्री देखी और यह भी भाप लिया कि द्रव्य भी बहुत है, तुरंत जाकर राव जगमाल से कहा कि आज कोई एक घाटेती यहां आकर अमुक कुम्हार के घर उतरा है, उसके पास एक अच्छी घोड़ी है और स्त्री भी उसकी अति सुन्दर मानो पद्मनी ही है। जगमाल ने अपने आदमी भेजे कि जाकर खबर लावो कि वह कौन है। गुप्तचर कुम्हार के घर आकर सब देख भाल कर गये। तब कुम्हारी ने दल्ला को कहा कि ठाकुर! तुम्हारे पर चूक होगा। दल्ला उसका अभिप्राय न समझा, पूछा क्या होगा? बोली, बाबा तुम्हें मारकर तुम्हारी घोड़ी और गृहिणी को छीन लेंगे।

दल्ला—कौन?

कुम्हारी—इस गांव का ठाकुर।

दल्ला—किसी तरह बचाव भी हो सकता है?

कुम्हारी—यदि वीरमजी के पास चले जाओ, तो बच जाओ।

उसने चट घोड़ी पर पलाण रखा और स्त्री को लेकर चल दिया, वीरम के गुढे में जा पहुँचा। जगमाल के आदमी आये, परन्तु उसको वहा न पाकर लौट गये और कह दिया

कि वह तो गुढे को चला गया। पांच-सात दिन तक बीरम ने दल्ला को रक्खा, उसकी भले प्रकार पहुनई की, विदा होते वक्त उसने कहा कि बीरम! आज का शुभ दिवस मुझे आपके प्रताप से मिला है, जो तुम भी कभी मेरे यहां आओगे तो चाकरी पहुँचूंगा मैं तुम्हारा रजपूत हूं। बीरम ने कुशलतापूर्वक उसे अपने घर पहुँचा दिया।

माज़ाजी के पौत्रो और बीरमदेव से सदा खटाखट होती रहती थी, इसलिए महेवे का वास छोड़कर वीरम जैसलमेर गया; वहा भी ठहर न सका और पीछा नागोर आया, जहां यह लगा गावो को लूटने और धरती में बिगाड़ करने, परन्तु जब देखा कि अब यहां रहना कठिन है तो जांगलू में ऊदा मूलावत के पास पहुँचा। ऊदा ने कहा कि वीरमजी! मुझमें इतनी सामर्थ्य नही कि मै तुमको रख सकूं, तुम आगे जाओ, तुमने नागोर में उजाड़ किया है सो यदि वहां का खान बाहर लेकर आवेगा तो उसको मैं रोक दूंगा। तब बीरम जोहि-यावाटी में चला गया। पीछे से नागोर का खान चढ़कर आया, जागलू के घेरा लगाया, ऊदा गढ़ के कपाट मूंद भीतर बैठ रहा। खान ने उसे कहलाया कि मालव और बीरम को हाजिर कर। तब ऊदा खान से मिलने के वास्ते गया और वहा कैद में पड़ा। उससे वीरम को मांगा तो कहा कि "बीरम मेरे पेट में है, निकाल लो।" खान ने ऊदा की मा को बुलवाया और उससे कहा कि या तो वीरम को बता नहीं तो ऊदा की खाल खिंचवाकर उसमें भुसा भरवाऊंगा। ऊदा की माता ने भी वही उत्तर दिया कि "वीरम ऊदा की खाल में नही है, उसके पेटे में है सो पेट चीर कर निकाल लो।" उसके ऐसे उत्तर से खान खुश हो गया, अपने साथ वालो से कहने लगा—"यारो! देखा राजपूतानियो का बल, कैसी निधड़क होती है।" ऊदा को कैद से छोड़ा और बीरम का अपराध भी क्षमा कर दिया। वीरम जोहियो के पास जा रहा। जोहियो ने उसका बहुत आदर किया, जाना कि यह आफत का मारा यहा आया है। पास खर्च न होगा सो दाण में उसका विस्वा (भाग) कर दिया और बड़ा स्नेह दरसाया। वीरम के कामदार दाण ऊगाहे तब कभी कभी तो सारा का सारा ले आवे और जोहियो को कह दे कि कल सब तुम ले लेना। यदि कोई नाहर वीरम की बकरी मार डाले तो एक के बदले ११ बकरियाँ ले लेवे और कहे कि नाहर जोहियों का है। एक बार ऐसा हुआ कि आभोरिया भाटी बुक्कण को जो जोहियो का मामा व बादशाह का शाला था और अपने भाई सहित दिल्ली सेना में रहता था, बादशाह ने मुसलमान बनाना चाहा, वह भाग कर जोहियो के पास आ रहा। उसके पास बादशाह के घर का बहुत माल, तरह तरह के गदेले गलीचे और बढ़िया बढिया वस्त्राभूषण थे। वे वीरम ने देखे और उनको लेने का विचार किया। अपने आदमियो को कहा कि अपन बुक्कण को गोठ जीमने के बहाने उसके घर जाकर मार डाले और माल ले लेवे। राजपूत भी सहमत हो गये। तब वीरम ने बुक्कण को कहा कि कभी हमें गोठ तो जिमाओ। बुक्कण ने स्वीकारा, तैयारी की और वीरम को बुलाया। वहा पहुँचते ही वह बुक्कण को मार उसका माल असबाब और घोड़े अपने डेरे पर ले आया। तब तो जोहियो के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि यह जोरावर आदमी घर मे आ घुसा सो अच्छा नही है। पाच सात दिन पीछे वीरम ने ढोल बनाने के लिए एक फरास का पेड़ कटवा

डाला । उसकी पुकार भी जोहिया के पास पहुँची, परन्तु वे चुप्पी साध गये । कहा हम वीरम से झगडा करना नही चाहते हैं । एक दिन वीरम ने दल्ला जोहिया ही को मारने का विचार कर उसे बुलाया । दल्ला खरखल (एक छोटी हलकी गाडी) पर बैठकर आया जिसके एक तरफ घोडा और दूसरी तरफ बैल जुता हुआ था । वीरम की स्त्री मागलियाणी ने दल्ला को अपना भाई बनाया था ; उसने जान लिया कि चूक है सो जल के लोटे में दातन डाल कर वह लोटा दल्ला के पास भेजा । वह समझ गया कि दगा है । चाकर से कहा कि मेरा पेट कसकता है सो जगल जाऊ गा, फिर खरखल पर बैठ घर की तरफ चला । थोड़ी दूर पहुँच बैल न खरकता को तो वहा छोडा और आप घोडे सवार हो घर पहु च गया । घोडे के स्थान पर एक राठी जुतकर खरखल खाचने लगा, वीरम अपने राजपूतों को इकट्ठे कर रहा था । जब वे सलाह कर आये और दल्ला को वहा न देखा तब पूछा वह कहा गया है ? चाकर ने कहा जी ! उसका पेट कसकता था सो जगल गया है तब तो दलिया गहलोत बोल उठा कि दल्ला गया । वीरम ने कहा कि खरखल चढा कितनी दूर गया होगा, चलो अभी पकड लेते हैं । राजपूत ने कहा खरखल छोड घोडे पर चढ गया । इन्होने एक सवार खबर के लिए भेजा । उसने पहु चकर देखा तो सचमुच एक तरफ बैल और दूसरी तरफ आदमी जुता खरखल खींच लिये जाते हैं । उसने लौटकर खबर दी कि दल्ला तो गया । सब कहने लगे कि भेद खुल गया, अब जोहिये जरूर चढकर आवगे । दूसरे ही दिन जोहिया ने इकट्ठे होकर वीरम की गायों को घेरा । ग्वाल आकर पुकारा, वीरम चढ आया । परस्पर युद्ध ठना, वीरम और दयाल जोइया भिडे वीरम ने उसे मार तो लिया परन्तु जीता वह भी न बचा और वहीं खेत रहा ।

वीरम के साथी राजपूत गाव बडेरण से वीरम की ठकुराणी को लेकर निकले । मार्ग में जहा ठहरे वहा धाय ने एक आक के झाड के नीचे वीरम के एक वर्ष के बालक पुत्र चूडा को सुलाया, परन्तु चलते वक्त उसको उठाना भूल गयी । जब एक कोस निकले गये, तब बालक याद आया, तुरन्त एक सवार हरीदास दहवायत पीछा दौडा । इस स्थान पर पहु चकर क्या देखता है कि एक सर्प चूण्डा पर छत्र की भाति फण फैलाये पास बैठा है । यह देख पहले तो हरिदास को भय हुआ कि कही बालक पर आपत्ति तो नही आ गइ है । जब थोड़ा निकट पहु चा तो सर्प वहा से हटकर बाबी में घुस गया और सवार चूण्डा को उठाकर ले आया, माता की गोद में दिया और सारी रचना कह सुनाइ । आगे जाते हुए मार्ग में एक राठी मिला । उसको सब हकीकत कह इसका फल पूछा । राठी ने कहा यह बालक छत्रधारी राना होगा । वे लोग पडोलिया में आये । वहा राना लोग इकट्ठे हुए । चूण्डा की माता ने कहा कि मेरे पति से दूरी पड़ती है, मुझे तो उसी से काम है, इसलिए मैं सती होऊ गी । फिर चूण्डा को धाय के सुपुर्द कर कहा कि "पृथ्वी माता और सूर्य्यदेव इसकी रक्षा करें । तू इसे लेकर आल्हा चारण के पास चली जाना ।" फिर चूण्डा की माता और मागलियाणी दोनों सती हुइ और साथ सब बिखर गया । चूण्डाजी के दूसरे तीन भाइ गोगादेव, देवराज, और जैसिंह को उनके मामा उनको ननिहाल को ले गये और

चूण्डा को आल्हा चारण के पास भेज दिया । जहां धाय चूण्डा को सदा गुप्त रखती और भलीभांति उसका पालन पोषण करती थी ।

राव वीरमदेव के चार राणियां थीं ? भटियाणी जसहड़ राणा दे, जिसका पुत्र राव चूण्डा; २–लाला मांगलियाणी कान्ह केलणोत की बेटी, जिसका पुत्र सत्ता; ३–चन्दन आसराव रिणमलोत की बेटी, जिसका पुत्र गोगादेव; ४–इ दी लाछां, अगमसी सिखरावत की बेटी, जिसके पुत्र देवराज और विजपराज ।

राव चूण्डा–जब धाय चूण्डा को लेकर कालाऊ गाव में आल्हा चारण के पास पहुँची, तो उससे कहा कि बाई जसहड़ ने सती होने के समय तुमको आशीष के साथ यह कहलाया है कि इस बालक को अच्छी तरह रखना, इसका भेद किसी पर प्रकट मत करना मैंने इसको तुम्हारी गोद में दिया है । चूण्डा वहा धाय के पास रहने लगा । कोई पूछता तो चारण कहता कि यह इस रजपूतानी का बालक है । इस प्रकार चूण्डा आठ नव वर्ष का हो गया । एक दिन बर्सात के दिनो में ग्वाल गाव के बछड़ो को लेकर जल्दी ही जगल में चराने को चला-गया था और चारण के बछड़े घर पर रह गये, तब आल्हा की माता ने कहा "बेटा चूण्डा ! जा इन बछड़ों को जंगल में दूसरे बछडो के शामिल तो कर आ ।" चूण्डा उनको लेकर वन में गया, परन्तु दूसरे बछड़े उसको कही नजर न आये, तब तो रोने लगा । पीछे से चारण घर में आया चूण्डा को न देखकर माता को पूछा कि चूण्डा कहां है ? कहा बछड़े छोड़ने वन में गया है । चारण कहने लगा, माता तूने अच्छा नही किया, चूण्डा को नही भेजना चाहिए था । जब दूसरे बछडे न मिले तो अपने बछड़ो को वही खड़े कर चूण्डा एक वृक्ष की छाया में सो गया । पीछे से आल्हा भी ढूंढता ढूंढता वहा पहुँचा तो देखा कि बछड़े खड़े हैं, चूण्डा सोता है और एक सर्प उस पर छत्र किये बैठा है । मनुष्य के पाव की आहट पा नाग बिल मे भाग गया, चारण ने जा चूण्डा को जगाया, कहा बाबा तू जंगल में क्यों आया, घर पर चल । घर आकर मां को कहा कि अब कभी इसको बाहर मत भेजना । फिर चारण ने एक अच्छा घोड़ा लिया, कपड़े का उत्तम जोड़ा बनवाया, शस्त्र लाया और चूण्डा को सजा सजू कर महवे रावल मल्लिनाथ के पास ले गया । मालाजी का प्रधान और कृपापात्र एक नाई था । आल्हा उससे जाकर मिला, बहुत कुछ कहा सुनी की, तो नाई बोला, रावलजी के पावो लगाओ । शुभ दिवस देख चारण चूण्डा को राव मालाजी के पास ले गया और उसने बहुत कुछ धैर्य बधाकर अपने पास रक्खा । चूण्डा भी खूब चाकरी करता था । एक दिन रावल के पंलग के नीचे सो रहा और नीद आ गई । जब मालाजी सोने को आये तो पलग तले एक आदमी सोता पाया । जगाया, चूण्डा को देख रावलजी राजी हुए । अवसर पाकर नाई ने भी विनती की कि चूण्डा अच्छा रजपूत है इसको कुछ सेवा सौंपिये । माला ने चूण्डा को गुजरात की/तरफ अपनी सीमा की चौकसी के वास्ते नियत किया और अपने भले राजपूतो को साथ में दिया । तब सिखरा ने कहा कि रावलजी मुझको समझकर साथ देना । रावलजी ने कहा कि जो हमारी आज्ञा है । घोड़ा सिरोपाव देकर चूण्डा को ईदे राजपूतो के साथ विदा किया । वह काछे के थाने पर जा

उठा और अच्छा प्रबन्ध किया। एक बार सौदागर घोडे लेकर उधर से निकले। चूण्डा ने उनके सब घोडे छीन लिये और अपने राजपूतों को बाट दिये, एक घोडा अपनी सवारी को रक्खा। सौदागरा ने दिल्ली जाकर पुकार मचाई, तब वहा से बादशाह ने अपने अहदी को भेजा कि घोडे वापस दिलवादो। उसने ताकीद की, माला पर दबाव डाला, तब उसने चूण्डा के पास दूत भेजा घोडे मगवाये। चूण्डा बोला कि घोडे तो मने बाट दिये, केवल यह एक घोडा अपनी सवारी के लिये रक्खा है सो ले जाओ। लाचार माला को उन घोडा का मोल देना पड़ा और साथ ही चूण्डा को भी अपने राज्य में से निकाल दिया। वह इ दावाटी में इदों के पास आकर ठहरा और वहा साथी इकट्ठे करने लगा। कुछ दिना पीछे डीडणा गाव लूट लाया। तुर्कों के पडिहारों से मडोवर छीन ली थी और वहा के सरदार ने सब गावो से घास की दो दो गाडिया मगवाने का हुक्म दिया था। इदों को भी घास भिजवाने की ताकीद आई तब उन्होंने चूण्डा से मडावर लेने की सलाह की। घास का गाडियाँ भरवाइ और हरेक गाडी में चार चार हथियार बद राजपूतों को छिपाया। एक हाकने वाले और एक पीछे पीछे चलने वाला रक्खा। पिछले पहर को इनकी गाडिया मडोवर के गढ के बाहर पहुँची। गढ के दरवाजे पर एक मुसलमान द्वारपाल भाला पकडे खडा था। जब ये गाडिया भीतर घुसने लगी तो द्वारपाल ने एक गाडी में बछा यह देखने को डाला कि घास के नीचे कुछ और कपट तो नहा है। बर्छे की नोक एक राजपूत के जा लगी, परन्तु उसने तुरन्त कपडे से उसे पोंछ डाला, क्योंकि यदि उस पर लोहू का चिन्ह रह जावे तो सारा भेद खुल पडे, दर्बान ने पूछा-क्यों ठाकुरों ! सब में ऐसा ही घास है? कहा हा जी, और गाडिया डगडगाती हुई भीतर चली गइ। इतने म सध्या हो गयी, अधेरा पडा। जो रजपूत छिपे बैठे थे, बाहर निकले, दरवाजा बद कर दिया और तुर्कों पर टूट पडे। सबको काट कर चूण्डा की दोहाइ फेर दी, मडोवर लियाँ और इलाके से भी तुर्कों को खदेड खदेडकर निकाल दिया।

जब रावल माला ने सना कि चूण्डा ने मडोवर पर अधिकार कर लिया है तब वह भी वहा आया। चूण्डा से मिलकर कहा-शाबाश राजपुत्र! चूण्डा ने गोठ दी, काका भतीजे शामिल जीमे। उसी दिन ज्योतिषिया ने चूण्डा का पट्टाभिषेक कर दिया और वह मडोवर का राव कहलाने लगा। चूण्डा ने दस विवाह किये थे, जिनसे उसके १४ पुत्र उत्पन्न हुए-रणमल, सत्ता, अरडकमल, रणधीर, सहसमल, अजमल, भीम, पूना, कान्हा, राम, लूभा, लाला सुरताण और बाघा। (कही लाला और सुरताण के स्थान में बीजा और शिवराज नाम दिये हैं।)

एक पुत्री हसबाइ हुई, जिसका विवाह चितोड के राणा लाखा के साथ हुआ जिससे मोकल उत्पन्न हुआ था। पाच राणिया और उनके पुत्रा के नाम निचे दिये हैं—

राणी सांखली सूरमदे, धीसल की बेटी, पुत्र रणमल।
वायदे गहलोताणी, स इड माक सूदावत की बेटी, पुत्र सत्ता।

भटियाणी लाडा कुंतश केलगोत की बेटी, पुत्र अरड़कमल।
सोनां, मोहिल ईसरदास की बेटी, पुत्र कान्हा।

ईंदो केसर गोगादे उगाणोतरी बेटी, पुत्र—भीम, महसमल वरजांग, रूदा, चादा, ऊजु।

मंडोवर हाथ आने पर राव चूण्डा ने और बहुत सी धरती ली और उसका प्रताप दिन ब दिन बढ़ता गया। उस वक्त नागोर में खोखर राज करता था और उसके घर में राव चूण्डा की साली थी। उसने राव को गोठ देने के लिए नागोर के गढ में बुलाया। वह चार-पांच दिन तक वहां रहा और वहा की व्यवस्था देखकर अपने राजपूतों से कहा कि चलो नागोर लेवे, राजपूत भी इससे सहमत हो गये। एक दिन वह राजपूतों को साथ ले नागोर में जा घुसा, खोखर को मारा, दूसरे सब लोग भाग गये और नागोर में राव की दुहाई फिरी। वह वहा रहने लगा और अपने पुत्र सत्ता को मडोवर रक्खा। नागोर नगर सं० १५१२ (सं० १२१५ होगे।) कैमास दाहिमे ने बसाया था।

एक दिन राव चूण्डा दरबार में बैठा था कि एक किसान ने आकर कहा कि महाराज मैं चने बोने को खेत में हल चला रहा था कि कूऐ के पास एक लट्ठा दीख पड़ा। सम्भव है, उसमें कुछ द्रव्य हो। यह विचार कर कि वह धन धरती के धनियो का है मैं आपको इत्तला करने आया हूँ। राव ने अपने आदमी उसके साथ द्रव्य निकालने को भेजे। उन्होंने जाकर वह भूमि खोदी, परन्तु माल बहुत गहराई पर था, सो हाथ न आया। उन्होंने आकर राव चूण्डा से कहा तो राव स्वयं वहा गया और बहुत से बेलदार लगाकर पृथ्वी को बहुत गहरी खुदवाई, तो उसमें से रसोई के बर्तन निकले अर्थात्—चरवे, देगे, कूंडियां, थालिया आदि। राव ने उनको देखा, ऊपर गह्लावड़े का नाम था और ऐसा लेख भी था कि जो इस भांति रसोई कर सके वह इन बर्तनो को निकाले। राव ने कहा कि इनको यहीं डालदो। तब सरदारो ने कहा कि इनमें से एक आध चीज तो लेनी चाहिये, तब एक पली (तेल या घी निकालने की) ली। नागोर आकर उसको तुलवाई तो १५ पैसे भर की उतरी। राव चूण्डा ने आज्ञा दी कि आगे को मेरे रसोवड़े मे इस पली से घी परोसा जावे, सबको एक एक पूरी पली मिले, यदि आधी देवे तो रसोइदार को दड दिया जावेगा।

एक दिन अरडकमल चूण्डावत ने भैंसे पर लोह किया। एक ही हाथ में भैंसे के दो टूक हो गये, तब स। सरदारो ने प्रशसा कर कहा कि वाह वाह ! अच्छा लोह हुआ। राव चूण्डा बोला कि क्या अच्छा हुआ, अच्छा तो जब कहा जावे कि ऐसा घाव राव राणगदे अथवा कुंवर सादा (सादूल) पर करे। मुझको भाटी (राणगदे) खटकता है उसने गोगादेव को जो विष्टाकारी (वेइज्जती) दी वह निरन्तर मेरे हृदय का साल हो रही है। अरडकमल ने पिता के इस कथन को मन में धर लिया, उस वक्त तो कुछ न बोला, परन्तु कुछ काल बीतने पर सादे कुंवर को अवसर पाकर मारा। इसके बदले राव राणगदेव ने

सखला महाराज को मार डाला। महाराज के भतीजे रावलिया सोमा ने राव चूण्डा के पास जाकर पुकार की और कहा जो आप भाटी से मेरे मामा का वैर लेवे तो आपको कन्या ब्याह कर एक सौ घोडे दहेज में दूंगा। राव चूण्डा चढ चला और पूंगल के पास जाकर राणगदे को मारा और उसका माल लूटकर नागोर लाया, राव चूण्डा के प्रधान सवदू भाटी और ऊना राठोर थे।

राव चूण्डा की एक राणी मोहील के पुत्र जन्मा, नाम कान्हा रक्खा। मोहिलाणी ने बालक को घूटी न दी, यह खबर राव को हुई। उसने जाकर रानी से पूछा कि कुंवर को घूटी न देने का क्या कारण है। वह बोली कि जो रणमल को राज से निकालो तो घूटी दूं। राव ने रणमल को बुलाकर कहा बेटा तू तो सपूत है, पिता की आज्ञा मानना पुत्र का धर्म है। रणमल बोला–पिताजी, यह राज कान्हा को दीजिए। मुझे इससे कुछ काम नहीं। ऐसा कह पिता के चरण छूकर वहा से चल निकला और सोजत जा रहा। (रणमल को निकालने का दूसरा कारण यही पर ऐसा लिखा है) भाटी राव राणगदे को जब राव चूण्डा ने मारा तो राणगदे के पुत्र ने भाटियों को इकट्ठा किया और फिर मुलतान के बादशाही सूबेदार के पास गया, अपने बाप का वैर लेने के वास्ते वह मुसलमान हो गया, और अपनी सहायता पर मुलतान तुर्क सेना ले नागोर आया। उस वक्त राव चूण्डा ने अपने बेटे रणमल को कहा कि तू बाहर कही चला जा, क्योंकि तू तेजस्वी है सो मेरा वैर लेने में समर्थ होगा। जो राजपूत तेरे साथ जाते हैं उनको सदा प्रसन्न रखना, उनका दिल कभी मत दुखना। जेठी घोडा सिखरा ऊगमणोत को देना। मैंने कान्हा को टीका देना कहा है जो इसको (कान्हगाव) लेजाके ले जाकर तिलक दिया जावेगा।

राव की राणी मोहिलाणी ने एक दिन घृत की भरी हुई एक गाडी आती देखी, अपनी दासी भेज खबर मगवाई कि क्या रावजी के कोई विवाह है जो रोज इतना घृत आता है। दासी ने आकर कहा बाईजी विवाह तो कोई नहीं यह घृत तो रावजी के रसोडे के खर्च के लिए है यहां बारह मण रोज खर्च होता है। मोहिलाणी बोली यह घृत लुटता है। रावजी से कहा कि रसोडे का प्रबन्ध मुझको सौंपिए। राव ने स्वीकारा, राणी पाच सेर घृत में रोज काम चलाने लगी और रावजी को कहा कि मैंने आपका बहुत फायदा किया है, परन्तु इस कार्यवाही से सब राजपूत अप्रसन्न हो गये थे इसलिए बहुत से रणमल के साथ चल दिये।

जब नागोर पर भाटी व तुर्क चढ आये तो राव चूण्डा भी सजकर मुकाबले के वास्ते गढ के बाहर निकला, युद्ध हुआ और सात आदमियों सहित राव चूण्डा खेत रहा। भाटियों ने राव का सिर काटकर बर्छे की नोक पर धरा और उस बर्छे को भूमि में गाड़कर राव के मस्तक को ऊपर रक्खा और मसखरी के तौर पर भाटी आ आकर उसके सामने यह कहते हुए सिर झुकाने लगे कि "राव चूण्डाजी जुहार।" तब राव केलण वहा आया। यह बड़ा शकुनी था, कहने लगा—ठाकुरो, सुनो आगे को मारी टीका के चाकर होंगे और इसे तसलीम करो।

राव चूण्डा के सरदार रणमल को ढूंढाण की तरफ ले गये। रणमल ने पिता के आज्ञानुसार साथ के सब राजपूतों को राजी कर लिया। केलण भाटी रणमल के पीछे लगा। रणमल एक गांव में पहुँचा, एक पनघट के कुऐ के पास ठहरा। वहां पनिहारियां जल भरने आई। उनमें से एक बोली 'बाई! आज कोई ऐसा यहां आया है कि जिसने अपने बाप को मरवाया, धरती खोई, उसके पीछे कटक आता है सो ऐसा न हो कि अपने को भी मरवावे।" पनिहारी के ये वचन रणमल के कान में पड़े। वह बोला आगे नहीं जाऊंगा, पीछा करने वाली सेना से लडूंगा सब पीछे फिरे, शस्त्र संभाले, युद्ध हुआ, खिलरा ने बादशाही निशान छीन लिया। मुगल और भाटी भागे और रणमल नागोर में आकर पाट बैठा।

गोगादेव थलवट में रहता था। वहा जब दुष्काल पड़ा तो मऊ (लोग या प्रजा) चली, केवल थोड़े मनुष्य वहा रह गये। आषाढ़ आया तब लोग गावों में आकर बसे। उनमें बानर तेजा नाम का एक राजपूत गोगादेव का चाकर था, वह भी मऊ के साथ गया था। पीछे लौटता हुआ वह अपने पुत्र पुत्री और एक बैल सहित गाव मीतासर में रात्रि को ठहरा। प्रभात के समय जब वह स्नान को गया और पानी में बैठकर नहाने लगा तब उस गॉव के स्वामी मोहिल ने उसको बेटी की गाली दी और कहा "अरे पापी, लोग तो यहां जल पीते हैं और तू उसमें बैठकर नहाता है।" इतना कहकर उसके पराणी (वह लकड़ी जिसके एक सिरे पर लोहे की तीक्ष्ण कील लगी रहती है) मारी, जिससे उसकी पीठ चीर गई। लोगो ने कहा कि यह गोगादेव का राजपूत है तो मोहिल बोला कि "गोगादेव जो करेगा सो मैं देख लूंगा।" तेजा वहां से अपने गाव आया। उसके घरमें प्रकाश देखकर गोगादेव ने अपने आदमी को खबर के लिए भेजा और फिर उसको बुलाया। दूसरे दिन जब गोगादेव तालाब पर स्नान करने गया तो तेजा भी उसके साथ गया था। जब नहाने लगे तो गोगादेव ने तेजा की पीठ मे घाव देखकर पूछा कि यह कैसे हुआ? उसने उत्तर दिया कि मीतासर के राणा माणकराव मोहिल ने मेरी पीठ में आर लगाई और ऐसा कहा है। इस पर गोगादेव साथ इकट्ठा करके मोहिलों पर चढ़ा। उस दिन वहां बहुत सी बराते आई थी। लोगो ने समझा कि यह भी कोई बरात है। द्वादशी के दिन प्रातःकाल ही गोगादेव चढ़ दौड़ा, लड़ाई हुई, राणा भाग गया, दूसरे कई मोहिल मारे गये, गाव लूटा, और २७ बरातो को भी लूटकर अपने राजपूतो का बैर लिया।

गोगादेव जब जवान हुआ, तब अपने पिता का बैर लेने के लिए उसने साथ इकट्ठा किया और जोहियो पर चढ़ चला। इस बात की सूचना जोहियो को होते ही वे भी युद्ध के लिए उपस्थित हो गये। (शत्रु को धोखा देने के लिए) गोगादेव उस वक्त पीछा मुड़ गया और २० कोस आकर ठहरा। अपने गुप्तचर को बैरी की खबर देने के लिए छोड़ आप उसकी घात में बैठा अवसर देखने लगा। जोहियो ने जाना कि गोगादेव चला गया है तो फिर अपने स्थान को लौट आये। गुप्तचर ने आकर खबर दी कि मैंने दल्ला जोहिया और उसके पुत्र धीरदेव का पता लगा लिया है और जहा वे सोते हैं वह ठौर

निकला। धीरदेव इस अर्से में पूगल के राव राणगदे भाटी के यहा विवाह करने गया था और उसके बिछोने पर उसकी बेटी सोती थी, धीरदेव के भरोसे तलवार झाडी। उसकी कृपाण उस बाला को काट, बिछौने को चीर, पलग को काटती हुई पट्टी से जा अटकी। इसी से वह तलवार 'रलतली' प्रसिद्ध हुइ। जब दल्ला मारा गया तो उसका भतीजा ह.सू पडाइये नाम के घोडे पर चढ धीरदव को यह समाचार पहुचाने के लिए पूगल को दौड़ा। धीरदेव विवाहोत्तर अपनी पत्नी के पास सोया हुआ था, ककन डोरडे अब तक न ये। पहर भर रात्रि शेष रही होगी कि घोडा पडाइया हिन हिनाया। धीरदेव की आ खुल गई, कहने लगा कि पडाइया हिन हिनाया। साथ के नौकर चाकर बोले, जी! इस वक्त यहा पडाइया कहा? इतना कहते तो देर लगी कि ह.सू सम्मुख आ खडा हुआ। धीरदेव ने पूछा कुशल तो है? उत्तर दिया कि कुशल कैसी, गोगादेव बीरमोत ने आकर तुम्हारे पिता दल्ला को मारा, अब वह वापस जाता है। धीरदेव तत्काल उठा, वस्त्र पहने, हथियार बाधे, घोडे जीन कराया, सवार होने ही को था कि राव राणगदेव भी वहा आगया, कहने लगा कि ककनडोरे खोलकर सवार होओ। धीरदेव ने उत्तर दिया कि अब पीछे आकर खोलेंगे। तब तो राव राणगदेव भी साथ हो लिया और दोनों चढ धाये। आगे गोगादेव पदरोला के पास ठहरा हुआ था, घोडों को चरने के लिए छोड दिया था, साथ सब जल के किनारे टिका हुआ था। भाटी और जोइये निकट पहुचे। घोडे चरते हुए देखे तो जान लिया कि यह घोडे गोगादेव के हैं, तब उनको लेकर पीछे फिरे और पदरोला आये। कटक प्यासा हुआ तब कहने लगे कि जल पीकर चलें। जलपान किया, घोडा को भी पिलाकर ताजा कर लिया और फिर दो टुकडी हो दोनों तरफ से बढे। इन्हें देखकर गोगादेव ने पुकारा–अरे घोडे लाओ! तब ढीढी (कोइ नाम) बोला–"अरे! गोगादेव के घोडे नहीं मिलते हैं, जोहिये ले गये, छुडाओ।" युद्ध शुरू हुआ। भाटी जोहिया राठौडों से भिडे। गोगादेव घावों से पूर होकर पड़ा, उसकी दोनों जघा कट गई, उसका पुत्र ऊदा भी पास ही गिरा। घायल गोगादेव अपनी माण की तलवार को टेके बैठा घूम रहा था कि राव राणगदे घोडे चढा हुआ उसके पास से निकला तो गोगादेव कहने लगा "राव राणगदे का बडा साका (साथ) है। हमारा पारवाडा (जुहार?) ले लेवे।' राणगदे ने उत्तर दिया कि "तेरे जैसी विष्ठा का पारवाडा हम लेते फिरें" इतना कहकर वह तो चला गया और धीरदेव आया। तब फिर गोगादेव ने कहा "धीरदेव तू वीर जोहिया है, तेरा काका मेरे पेट में तडप रहा है, तू मेरा पारवाडा ले।" यह सुन धीरदेव फिरा, गोगा के निकट आ घोडे से उतरा। तब गोगा ने तलवार चलाइ और वह पास आ पडा। गोगा ताली देकर हसा, तब धीरदेव ने कहा—'अपना बेर टूटा, हमने तुझे मारा और तूने धीरदेव को, इससे महेवे की हानि मिट गइ।" धीरदेव के प्राण मुक्त हुए तब गोगादेव बोला "कोइ हो तो सुन लेना। गोगादेव कहता है कि राठोडों और जोहिया का बैर तो बराबर हो गया, परन्तु जो कोइ जीता जागता हो तो महेवे जाकर कहे कि राव राणगदे ने गोगादेव को "विष्टागाली" दी है सो बैर भाटियों मे है।' यह बात भीवा ने सुनी और महेवे आकर सारा हाल कहा।

इधर रणखेत में जोगी गोरखनाथजी आ निकले । गोगादेव को इस तरह बैठा देखा, उन्होंने उसकी जंघा जोड़ दी और अपना शिष्य बना कर ले गये, सो गोगादेव अब तक चिरंजीव है ।

अडकमल या अरडकमल चूण्डावत (राठौड़ राव चूण्डा का पुत्र)–जैसा कि ऊपर लिख आये हैं कि अडकमल को भैंस का लोह करने पर उसके पिता ने बोल मारा (कि भैंस का लोह किया तो क्या, मैं तो प्रशंसा जब करु, कि ऐसा ही लोह राव राणगेद या उसके बेटे सादा पर किया जावे ।) पिता का वह बोल पुत्र के दिल में खटकता था । उसने स्थल स्थल पर अपने भेदिये यह जानने को बिठा रक्खे थे कि कहीं राणगदे या सादूल कुंवर हाथ आवे-तो उनको मारू । तभी मेरा जीवन सफल हो और पिता के बोल को सत्य कर बताऊं । छापर द्रोणपुर में मोहिल (चौहान) राज करते थे वहा के राव ने अपनी कन्या के सम्बन्ध के नारियल पूगल में कुंवर सादूल राणगदे बोत के पास भेजे । ब्राह्मण पूंगल आया और भाटी राव से कहा कि मोहिला ने कुंवर सादूल के लिए यह नारियल भेजे हैं । राव राणगदे ने उत्तर दिया कि हमारा राठौडो से बैर है, अतएव कुंवर व्याह करने को नही आ सकता और ब्राह्मण को रुकसत कर दिया । यह समाचार सादूल को मिले कि रावजी ने मोहिलों के नारियल लौटा दिये हैं तो अपना आदमी भेजकर ब्राह्मण को वापस बुलाया, नारियल लिये और उसे द्रव्य देकर विदा किया । प्रतिष्ठित सरदारो के हाथ पिता को कहलाया कि नारियल फेर देने में हम अपयश और लोकनिंदा के भागी होते हैं, राठोडो से डरकर कब तक घर में घुसे बैठे रहेंगे, मै तो मोहिलाणी को व्याह कर लाऊंगा । वह टीकावत पुत्र और जवान था । राव ने भी विशेष कहना उचित न समझा । इसने अपने राजपूत इकट्ठे कर चलने की तैयारी करली और पिता के पास मोर नामी अश्व सवारी के लिए मांगा । राव ने कहा कि तू इस घोड़े को रखना नही जानता; या तो हाथ से खो देगा या किसी को दे आवेगा । बेटा कहता है पिताजी ! मै इस घोड़े को अपने प्राण के समान रक्खूंगा । अब पिता क्या कहे, घोड़ा दिया, कुंवर केसरिये कर व्याहने चढ़ा, छापर पहुंचा और माणकदेवी के साथ विवाह किया । राव कलण की पुत्री माणक भाटियाणी जबर्दस्त थी । उसने गढ़ द्रोणपुर में विवाह न करने दिया, तब राव माणक सेवा ने अपनी कन्या और राणा खेता की दोहिती को ओरीठ गाव में ले जाकर सादूल के साथ व्याही थी । मोहिलो ने सदूल को सलाह दी कि तुम अपने किसी बड़े भरोसे वाले सरदार को छोड़ जाओ । वह दुलहन का रथ लेकर पूंगल पहुंचा जावेगा, तुम तुरन्त चढ़ चलो, क्योंकि दुश्मन कही पास ही घात में लगा हुआ है । सादूल ने कहा कि मैं त्याग बांटकर पीछे चढूंगा । राठोडो के भेदिये ने जाकर अरडकमल को खबर दी कि सादूल मोहिलो के यहां व्याहने आया है, वह तुरन्त नागौर से चढ़ा । इस वक्त एक अशुभ शकुन हुआ । महाराज साथ था, उसको शकुन का फल पूछा तो उसने कहा कि अपन कालू गोहिल के यहां चलेंगे, जब वह आपको जीमने की मनुहार करे तो उसको अपने शामिल भोजन के लिए बैठा लेना । पहला ग्रास आप मत लेना, गोहिल को लेनें

देना। जब वह ग्रास भरे तब उससे पूछना कि हमने ऐसा शकुन देखा है उसका फल कहो। वह विचार कर कह देगा। ये मोहिल के घर जाकर उतरे, उसने गोठ तैयार कराई, जीमने बैठे, पहला ग्रास कालू ने लिया तब अरडकमल कहने लगा—कालूजी हम सादूल भाटी पर चढे हैं, हमको ऐसा शकुन हुआ उसका फल कहो। कालू कुछ विचार कर बोला "तुम जिस काम को जाते हो वह सिद्ध होगा, तुम्हारी जय होगी और कल प्रभात को शत्रु मारा जायेगा।" जाम चढ़कर चढे, महाराज सावल के बेटे आलणसी को राव राणगदे ने मारा था इसलिए अपने बेटे का बैर लेने को महाराज आगे होकर राठोडों के कटक को सादूल पर ले चला। सादूल भाटी त्याग बाट, ढाल बजवाकर अपनी ठकुराणी का रथ साथ ले रवाना हुआ था कि लाखा के मगरे (पहाडा) के पास अरडकमल ने उसे जा लिया और ललकार कर कहा—"भटे सरदार जावे मत। मैं बडी दूर से तेरे वास्ते आया हूं।" तब दाढी वाला—"उडे मोर करे पलाइ मेरे जाइ पर सादो न जाइ," ! मोर (घोडा) उडकर भाग जावे परन्तु मादा नही जावेगा। राजपूतों ने अपने अपने शस्त्र सभाले, युद्ध हुआ, कई आदमी मारे गये, अरडकमल ने घोडे से उतर मोर पर एक हाथ ऐसा मारा कि उसके चारों पाव कट गये और साथ ही सादूल का काम भी तमाम किया। उसके साथ राजपूत मर मिटे तब मोहिलाणी ने अपना एक हाथ काटकर सादूल के साथ जलाया और आप पूगल पहुंची, सासू ससुर के पग पकडे और कहा "मैं आप ही के दर्शन के लिए यहा आई थी, अब पति के साथ जाती हूं।" ऐसा कहकर वह सती हो गयी। अरडकमल ने भी नागौर आकर पिता के चरणों में सिर नवाया, राव चूण्डा हुआ और उसे पट्टे में दिया।

(ऊपर कह आये हैं कि राव चूण्डा ने अपनी राणी मोहिल के कहने से अपने पुत्र रणमल को अपना उत्तराधिकारी न बनाकर उसे निर्वासित किया और मोहिल के पुत्र कान्हा को मंडोवर का राज दिया था।) जब रणमल विदा हुआ तो अच्छे अच्छे राजपूत अर्थात् सिखरा उगमणोत, ऊदा, ऊना त्रिभुवन सिंहोत, राठोड कालोटियाणो उसके साथ हो लिये। आगे जाकर एक रहट चलता देखा, वहा घोडा को पानी पिलाया। उनके मुंह छाने, हाथ मुंह धोकर अमल पानी लिया। वहा सिखरे ने एक दोहा कहा—"कालो काले हिरण निम, गयो टियाणा कूद। आयो परवत साथियों त्रिभुवन गालै ऊद।' तब ऊदा और काला ने कहा कि हम सिखरा के साथ नही जायेंगे, यह निंदा करता है अत पीछे लौट जायेंगे। इतने में दल्ला गोहिलोत का पुत्र पूना उठकर आया, जिसको सिखरे ने कहा कि पीछे फिरो। वह बोला "मैं नही लौटूंगा, ऐसा अवसर मुझे कब मिले।" तब काला और ऊदा ने कहा कि हम पूना के साथ पीछे जावेंगे। सिखरा ने कहा तुम जाओ, मैं नहीं आऊंगा। एक दोहा मुझे भी कहो—

घुमडलेह सिरावणी, कहियो उगह निहाण।
ऊगमणावत कूकियो, रट वगे केकाण॥

फिर पूना राव (चूण्डा) के पास चला गया। ५०० सवारां सहित नाडोल के गांव घणने में आकर ठहरा। नाडोल में उस वक्त सोनगिरे (चहुवाण) राज करते थे।

राव रणमल के यहा तीन बार रसोई चढती और वह अपने दिन सैर शिकार में बिताता था। जब सोनगिरो ने उसका वहा आ उतरना सुना और उसके ठाट ठस्से के समाचार उनके कानों में पहुंचे तब उन्होने अपने एक चारण को भेजा कि जाकर खबर लावे कि रणमल के साथ कितनेक आदमी है। चारण ने राव के पास आकर आशीष पढ़ी, राव ने उसको पास बिठाकर सोनगिरो का हाल पूछा। इतने में नौकर ने आकर अर्ज की कि जीमण तैयार है। चारण को साथ लिये नाना प्रकार की तैयारी का स्वाद लिया, फिर चारण को कहा कि तुझे कल विदा मिलेगी। दूसरे दिन प्रभात ही शिकारियों ने आकर खबर दी कि अमुक पर्वत में ५ वराहो को रोके है। रणमल तुरन्त सवार हुआ और उन पाचों शूकरो का शिकार कर लाया। रसोई तैयार थी, जीमने बैठे, भोजन परोसा गया, साथ के लोग जीमने लगे कि एक शिकारी ने आकर कहा कि पनोते के बादले (बहने वाली बर्साती जलधारा या छोटी नदी) पर एक बड़ा वराह आया है। सुनते ही रणमल उठ खड़ा हुआ और घोड़ा कसवाकर सवार हो चला। चारण भी साथ हो लिया। सवार होते समय जोहियों को आज्ञा दी कि पनोते के बाहले पर जीमण तैयार रहे। जब वराह को मारकर पीछे फिरे तो रसोई तैयार थी। जीमने बैठे, आधाक भोजन किया होगा कि खबर आई कि कोलर के तालाब पर एक नाहर और नाहरी आये है। उसी तरह भोजन छोड़कर वह उठ खड़ा हुआ और वहां पहुंचा जहा बाघ था। जाते वक्त हुक्म दिया कि जीमण तालाब पर तैयार रहे। चारण भी साथ ही गया। जब सिंहो का शिकार कर लौटे तो रसोई तैयार थी–सब ने सीरा पूरी आदि भोजन किया। उस चारण को मार्ग में से ही विदा कर दिया और कहा कि नाडोल यहां से पास है। चारण ने घोड़ा हटाया, नाडोल वहा से एक कोस ही रह गया था। चारण ने पुकार मचाई "दौड़ो दौडो"। बाहर आई है गांव में राजपूत सवार हो होकर आये। चारण को पूछा कि तुझे किसने खोसा ? कहा–मुझे तो किसी ने नही खोसा है परन्तु तुम्हारी धरती लुट गई। पूछा कैसे ? बोला–यह रणमल पास आ रहा है और इतना खर्च करता है, बाप ने तो निकाल दिया, फिर इसके पास इतना द्रव्य आवे कहा से ? यह कही न कही छापा मारेगा या तो सोनगिरो से नाडोल लेगा, हूलो से सोजत लेगा। इस कान से सुनो या उस कान से, मैंने तो पुकार कर कह दिया है।

कितनेक दिन वहा ठहरकर रणमल चित्तौड़ के राणा लाखा के पास गया जहां छत्तीस ही राजकुल चाकरी करते थे। बड़ा राजस्थान, रणमल भी वहा जाकर चाकर हुआ। (आगे राणा लाखा और चूण्डा की बात, राणा का रणमल की बहन से विवाह करना और मोकल के जन्म आदि का हाल पहले सिसोदियो के वर्णन में राणा लाखा के हाल में लिख दिया है–देखो भाग प्रथम पृष्ठ २४)।

एक बार रणमल थोड़े से साथ से यात्रा के वास्ते गया था, पीछा लौटते ढूंढाड में आया। वहां पूरणमल कछवाह राज करता था (यह राजा पृथ्वीराज का पुत्र और सांभर का राजा था)। उसने रणमल को पूछा कि हमारे यहां नौकर रहोगे। उत्तर दिया–रहेंगे।

एक दिन जोधा काधल और पूरणमल चौगान खेल रहे थे। जोधा (रणमल का पुत्र) जेठी घोड़े पर सवार था। पूरणमल ने वह घोड़ा देखा, कहा हमें दे दो। काधल बोला कि रणमलजी को पूछे बिना मैं नहीं दे सकता। पूरणमल ने कहा, मैं छीन लूंगा। फिर जोधा काधल ने डेरे पर आकर घोड़े की कथा रणमल को सुनाई। रणमल अपने भाई बेटे व राजपूतों सहित दरबार में आया। पूरणमल जहां बैठा था वहां उसका घोड़ा दबाकर बैठ गया। उसकी कमर में हाथ डाल पकड़कर खड़ा कर दिया और अपने साथ बाहर ले आया, घोड़े पर सवार कराया और उसके घोड़े के बराबर अपना घोड़ा रख कर ले चले। पूरणमल के राजपूत इन्हें मारने को आये तो रणमल कटार खींचकर पूरणमल को मारने को तैयार हो गया। तब तो वह अपने आदमियों को झगड़ा करने से रोककर उनके साथ साथ हो लिया। बहुत दूर ले जाकर रणमल ने उसे आदरपूर्वक वह घोड़ा दे इतना कह लौटा दिया कि "हमारे पास से घोड़ा यूं लिया जाता है, जिस तरह तुम लेना चाहते थे वैसे नहीं।"

अपने पिता के मारे जाने पर रणमल नागौर आया और अपने पिता के आज्ञानुसार कान्हा को राजगद्दी पर बिठाकर आप सोजत में रहने लगा। भाटियों से बैर था सो दौड़-दौड़कर उनका इलाका लूटने लगा। तब उन्होंने चारण भुजना सढायच को उसके पास भेजा। चारण ने यश पढ़ा, जिससे प्रसन्न होकर रणमल ने कहा कि अब मैं भाटियों का बिगाड़ न करूंगा। उन्होंने अपनी कन्या उसे ब्याह दी जिसके पेट से राव जोधा उत्पन्न हुआ था।

अपने पुत्र सत्ता को पहेर की जागीर राव चूण्डा ने पहले ही से दे दी थी, (दूसरी ख्यातें से) सं० १४६५ में कान्हा का मंडोवर गद्दी बैठना पाया जाता है परन्तु वह अधिक राज न कर सका। उसके भाई सत्ता ने राज छीन लिया, और राज प्रबन्ध अपने भाई रणधीर को सौंपा। सत्ता के पुत्र नर्बद और रणधीर के परस्पर अनबन हो जाने से रणधीर चित्तौड़ गया और रणमल को लाया। राणा मोकल ने रणमल की सहायता कर सं० १४७८ के लगभग उसे मंडोवर की गद्दी पर बिठाया। रणमल और उसके पुत्र जोधा ने नरबद से युद्ध किया, वह घायल होकर गिरा, तीर लगने से उसकी एक आंख फूट गई और उसके बहुत से राजपूत मारे गये। राव रणमल ने मंडोवर ली। राव सत्ता को आंखों से दिखता नहीं था इसलिए राव रणमल ने उसको गढ में रहने दिया और जब वह उससे मिलने गया, अपने पुत्रों को उसके पांवों लगाया। जब जोधा जिरह बख्तर पहने शस्त्र सजे उसके चरण छूने को गया। सत्ता ने पूछा कि "रणमल यह कौन है?" कहा "आपका दास जोधा है।" सत्ता बोला कि टीका इसे देना, यह धरती रक्खेगा। रणमल ने भी उसी को अपना टीकायत बनाया और मंडोवर में उसे रक्खा और आप नागौर चला गया।

एक दिन राव रणमल सभा में बैठा अपने सरदारों से यह कह रहा था कि बहुत दिन से चित्तौड़ की तरफ से कोई खबर नहीं आई है। उसका क्या कारण? थोड़े ही दिन पीछे एक आदमी चित्तौड़ से पत्र लेकर आया और कहा कि मोकल मारा गया। राव

सीमा पर युद्ध हुआ उस वक्त महमूद हाथी पर लोहे के कोठे में बैठा हुआ था, राव रणमल ने चाहा कि अपने घोड़े को उडाकर बादशाह को बर्छी मारे, परन्तु किसी प्रकार बादशाह को राव का यह विचार मालूम हो गया। उसने तुरन्त अपने खवास को जो पीछे बैठा हुआ था अपनी जगह बिठा दिया और आप उसकी जगह जा बैठा। इतने में रणमल ने घोड़ा उड़ाकर बर्छी चलाई, वह कोठा तोड़कर खवास की छाती के पार निकल गई। उसने चिल्ला कर कहा "हजरत मैं तो मरा।" यह शब्द रणमल के कान पर पड़े और उसने जाना कि बादशाह बच गया है। बादशाह हाथी की पीठ पर पीछे की ओर बैठा था और राव की यह प्रतिज्ञा थी कि वह पीठ पर तलवार कभी न चलाता था। उसने फिर घोड़ा उड़ाया बादशाह के बराबर आकर उसको उठाया और एक शीला पर दे पटका जिससे उसके प्राण निकल गये। महपा को बादशाह माडू के गढ़ में छोड़ आया था। जब राणा मांडू पहुंचा तो गढवालों ने महपा को कहा कि अब हम तुमको नहीं रख सकते हैं। राव रणमल ने उसे मांगा तब वह घोड़े पर चढ़कर गढ़ के दरवाजे आया और वहां से नीचे कूद पड़ा जिस ठौर से महपा कूदा उसको पाखंड कहते हैं। पीछे महपा को सिकोतरी का वरदान हुआ

(दूसरी बात इस तरह पर लिखी है)—राव चूण्डा काम आया तब टीका राव रणमल को देते थे कि रणधीर चूण्डावत दरबार में आया। सत्ता वहां बैठा हुआ था। रणधीर ने उसको कहा कि "सत्ता कुछ देवे तो टीका तुम्हें देवे।" सत्ता ने कहा कि "टीका रणमल का है, जो मुझे दिलाओ तो भूमि का आधा भाग तुझे देऊं।" तब रणधीर ने घोड़े से उतर दरबार में जाकर सत्ता को गद्दी पर बिठा दिया और रणमल को कहा कि तुम पट्टा लो। उसने मंजूर न किया और वहां से चल दिया, राणा मोकल के पास जा रहा राणा ने उसकी सहायता की और मंडोर पर चढ़ आया। सत्ता भी संमुख लड़ने को आया रणधीर नागौर जाकर वहा के खान को सहायतार्थ लाया। (उस वक्त नागोर में शम्सखान गुजरात के बादशाह अहमदशाह की तरफ से था।) सीमा पर युद्ध हुआ, रणमल तो खान से भिड़ा और सत्ता व रणधीर राणा के संमुख हुए। राणा भागा और नागौरी खान को रणमल ने पराजित कर भगाया। सत्ता और रणमल दोनों की फौजवालों ने कहा कि विजय रणमल की हुई है, दोनो भाई मिले, परस्पर राम राम हुआ, बात-चीत की, रणमल पीछा राणा के पास गया और सत्ता मंडोवर गया।

सत्ता के पुत्र का नाम नर्बद और रणधीर के पुत्र का नाम नापा था। (सत्ता आखों से बेकार हो गया था इसलिए) राज-काज उसका पुत्र नर्बद करता था। एकबार नर्बद ने मन में विचारा कि रणधीर धरती में आधा भाग क्यों लेता है, मैं उसको निकाल दूंगा थोड़े ही दिनों पीछे ४००) रुपये कही सेआये, उनका आधा भाग नर्बद ने दिया नहीं दूसरी बार नापा ने एक कमान निकलवाकर खींचकर चढाई और तोड़ डाली। नर्बद ने कहा भाई तोडी क्यो?

नापा बोला धरती का हासल आवे उसमें से आधा मागू, कल थैली आइ थी उसमें से मुझे क्यों न दिया ? नरद ने आधे रुपये दे दिये । वह पाली के सोनगिरों का भाना और नापा सोनगिरों का जमाई था । एक दिन नरद ने अपने मामा से पूछा "मामाजी, तुमको मैं प्यारा या नापा ? "कहा-मेरे तो तुम दोनों ही बराबर हो, परन्तु विशेष प्यारा तू है, क्योंकि तेरे पास रहते हैं । नरद ने कहा कि जो ऐसा है तो नापा को विष दे दो । मामा ने कहा "भाई मुझ से ऐसा नहीं हो सकता" । नरद ने एक दासी को लोभ देकर मिलाया और नापा को विष दिलवाया जिससे वह मर गया । अब रणधीर ने अपने आदमी भेज कामदार मुतसद्दियों से पुछवाया कि यह सेना किस काम के लिए इकट्ठी की जाती है परन्तु उन्होंने यही उत्तर दिया कि 'हम नहीं जानते ।" वे आदमी आकर दयाल मोदी की दूकान पर बैठ गये । नरद इस दयाल से सलाह किया करता था, जब बालक था तब से रणधीर ने उसकी पालना की थी । रणधीर के मनुष्यों ने मोदी से सामान लिया । उसने और तो सब चीजें दे दीं, परन्तु घृत न दिया । जब उन्होंने घी मागा तो उत्तर दिया कि "काले के पीला है ।" और फिर घृत दिया । रणधीर के मनुष्यों ने पीछे आकर कहा-राना, यह पता नहीं लगता कि कटक किस पर तैयार हो रहा है । उसने पूछा-दयाल मोदी ने तुमको कुछ कहा ? उत्तर-और तो कुछ भी नहीं कहा, परन्तु घृत देते समय यह शब्द कहे थे कि "काले के पील बहुत है ।" रणधीर बोला-दयालिया और क्या कहता, काला मैं और पीला मेरा सुवर्ण सो यह कटक मेरे ही पर है । तब उसने भी सेना सजी, फिर आप राणा के पास गया । राणा ने पूछा-"रामाजी, कैसे आये ?" रणमल ने भी उत्तर दिया कि तुम्हें मंडोवर देने के लिए आए हैं राणा ने सहायता देनी कही । ये राणा को लेकर सत्ता पर चढ़े । सत्ता ने अपने पुत्र नरद से कहा कि तू भी नागोरी खान को ले आ । नरद कोस तीनेक तो गया, परन्तु जब ताप पड़ी तो पीछा फिर आया और छिपकर माता-पिता की बातचीत सुनने लगा । सत्ता (अपनी स्त्री सोनगिरी से कहता है-"सोनगिरी ! नरद जानता है कि मेरा पिता कपूत है जो रणधीर को आधा भाग देता है, परन्तु रणधीर के बिना मंडोवर रह नहीं सकता । अब नरद नागोरी खान को लेने गया है सो खान आने का नहीं, क्यों कि वह रणमल के हाथ देख चुका है । यह भी अच्छा हुआ, मैं लड मरूंगा ।" (पिता के ऐसे वचन सुनकर) नरद बोल उठा-"मुझे नागोरी खान के पास किसलिए भेजा, मैं भी युद्ध करूंगा और काम आऊंगा ।" सत्ता बोला-"मैं भी यही कहता था ।" नरद ने नक्कारा बजवाया, युद्ध किया और खेत पड़ा । इतने रजपूत उसके साथ मारे गये-ईदा चोहथ, ईदा भीया आदि ।

नरद निपट घायल हुआ था और उसकी एक आंख फूट गई थी । राणाजी उसको उठवाकर अपने साथ ले गये और रणमल को राणा ने मंडोवर की गद्दी पर बिठाकर टीका किया । सत्ता भी राणा के पास आ रहा और वहीं उसका देहांत हुआ ।

(दूसरे स्थान में ऐसा भी लिखा है)--"जब राव चूण्डा मारा गया तो राजतिलक रणमल को देते थे, इतने में रणधीर चूण्डावत दर्बार में आया। सत्ता चूण्डावत वहां बैठा हुआ था, उसको रणधीर ने कहा कि सत्ता! कुछ देवे तो तुझे गद्दी दिला दूं।" सत्ता बोला कि "टीका रणमल का है।" रणधीर ने अपने वचन की सत्यता के लिए शपथ खाई, तब सत्ता ने कहा कि आधा राज तुझे दूंगा। रणधीर तुरन्त घोड़े से उतर पड़ा और सत्ता के ललाट पर तिलक कर दिया। रणमल को कहा कि कुछ पट्टा ले लो, वह उसने मंजूर न किया और राणा मोकल के पास गया। राणा ने सहायता की, सत्ता भी सम्मुख हुआ और रणधीर राणा नागोरी खान को लाया। सीमा पर लड़ाई हुई, रणमल तो खान के मुकाबले को गया और रणधीर ने बसना के राणाजी से युद्ध किया। राणाजी हार खाकर भागे, परन्तु खान को रणमल ने भगा दिया। सत्ता व रणमल दोनों के साथियों ने जय ध्वनि की, रणमल अपने दोनों भाईयों से मिला, बातचीत की, पीछा मोकल जी के पास चला गया। सत्ता गद्दी बैठा और राज करने लगा। कालांतर में सत्ता व रणधीर के पुत्र हुए, सत्ता के पुत्र का नाम नर्बद और रणधीर के पुत्र का नाम नापा था।

रणमल नित गोठें करता था इसलिए सोनगिरों के भले आदमी देखने को आये थे। उन्होंने पीछे नाडौल जाकर कहा कि राठौड़ काम का नहीं है, वह तुम से न चूकेगा, तुमको मारेगा, इसलिए तुमको उचित है कि अपने यहां इसका विवाह करदो। तब लाला सोनगिरा की बेटी का विवाह उसके साथ कर दिया। फिर भी सोनगिरों ने देखा कि यह आदमी अच्छा नहीं है, तब उन्होंने रणमल पर चूक करना विचारा। एक दिन रणमल सोया हुआ था तब लाला सोनगिरे ने आकर अपनी स्त्री से कहा कि "रामी बाई रांड हो जायगी?" स्त्री बोली "भले ही हो जावे, यदि एक लड़की मर गई तो क्या।" ठकुराणी ने अपने पति को मद्य का प्याला पिलाकर सुलाया और बेटी से कहा कि रणमल से चूक है, उसको निकाल दे! रामी ने आकर पति को सूचना दी कि भागो! चूक है। घातक उसे मारने को आये, परन्तु वह पहले ही निकल गया और घर जाकर सोनगिरों से शत्रुता चलाई, परन्तु वे वार पर न चढते थे। उनका नियम था कि सोमवार के दिन आशापुरी के देहरे जाकर गोठ करते, अमल वारुणी लेते और मस्त हो जाते थे। एक दिन जब वे खा पीकर मस्त पड़े हुए थे तो अचानक रणमल उन पर चढ़ आया और उसने सबको मार कर अखावे के कुंए में डाल दिया। ऊपर सगे साले को डाला। कहा, मैंने सासूजी से वचन धारा है। उनका इलाका लिया, राणा मोकल से मिलने के वास्ते गया और वहीं रहने लगा। तब चाचा सीसोदिया और महपा पवार ने मोकल को मारा तब रणमल को उस चूक का भेद मालूम हो गया था, परन्तु राणा को कुछ खबर न हुई। एक दिन महपा और चाचा मलेसी डोडिये के घर गये जो राणा का खवास था। रणमल ने अपने जासूस साथ लगा दिये थे कि देखें ये क्या बातें करते हैं। चाचा महपा ने मलेसी को अपने में मिलाने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वह न मिला। जासूस ने जाकर सारा वृतांत रणमल से कहा और उसने राणा को सुनाया, परन्तु मोकल ने इस पर विश्वास न किया। रणमल मंडोवर गया और

पीछे से राणा पर चूक हुआ। उसने अचलदास खीची की मदद के वास्ते गढ से नीचे आकर डेरा किया था तब महपा ने चाचा को कहा कि आज अच्छा अवसर है, फिर हाथ आने का नही, तब चाचा मेरा और महपा बहुत सा साथ लेकर आये। राणाजी ने कहा कि "ये खातणवाले आते हैं सो अच्छा नही है। जो गेहूँ में न आने चाहिये, यह मदाना के विरुद्ध है।" उस वक्त मलेसी डोडिया ने अर्ज की कि आपको रात रणमल ने चिताया था कि ये आपसे चूक करना चाहते हैं। राणा बोला कि ये हरामखोर अभी क्यों आये? मलेसी ने अब की कि दीवाण! पहले तो मैंने न कहा, परन्तु अब तो आप देखते ही हैं। (चाचा मेरा आन पहुँचे) घोर संग्राम हुआ, नौ आदमियों को राणा ने मारा और पाच को हाडी राणी ने यमलोक में पहुँचाया, पाच का काम मलेसी ने तमाम किया, अन्त में राणा मारा गया। चाचा व महपा के भी हलके से घाव लगे, कुंवर कुंभा बचकर निकल गया। ये उसके पीछे लगे, कुंभा पटेल के घर पहुँचा। पटेल के दो घोडियां थी। उसने कहा कि एक घोड़ी पर चढकर चले जाओ और दूसरी को काट डालो, नही तो वे लोग ऐसा समझेंगे कि इसने घोडी पर चढाकर निकाल दिया है। कुंभा ने वैसा ही किया। जो लोग खोजने आये थे वे पीछे फिर गये। मोकल को मारकर चाचा तो राणा बना और महपा प्रधान हुआ। कुंभा आफत का मारा फिरता रहा। जब यह समाचार रणमल को लगे तो वह सेना साथ लेकर आया, चाचा से युद्ध हुआ और वह भाग कर पई के पहाड़ों पर चढ गया। रणमल ने कुंभा को पाट बैठाया और आप उन पहाडों में गया बहुत दौड़ धूप की, परन्तु कुछ दाल न गली, क्योंकि बीच में एक भील रहता था, जिसके बाप को रणमल ने मारा था। वह भील चाचा व महपा का सहायक बना। एक दिन रणमल अकेला घोडे पर सवार उस भील के घर जा निकला। भील घर में नहीं थे, उनकी मा वहां बैठी थी। उसको बहन कहके पुकारा और बढकर उससे बातें करने लगा। भीलनी बोली कि वीर! तैंने बहुत बुरा किया, परन्तु तुम मेरे घर आ गये अब क्या कर सकती हूँ। अच्छा अब घर में जाकर सो रहो। रात न वैसा ही किया। थोडी देर पीछे वे पाचों भाइ भील आये उनकी मा ने उनसे पूछा कि बेटा! अभी रणमल यहां आवे तो तुम क्या करो? कहा, करें क्या, मारें, परन्तु बडे बेटे ने कहा—"मा! जो घर पर आवे तो रणमल को न मारें।" मा ने कहा—शाबाश बेटा! घर पर आये हुए तो वैरी को भी मारना उचित नही।" रणमल को पुकारा कि वीर बाहर आ जावो। वह आकर भीलों से मिला। उन्होंने उसकी बडी सेवा मनुहार की और पूछा कि तुम मरने के लिए यहां कैसे आये? कहा कि मानजो! मैंने प्रतिज्ञा की है कि चचा को मारूं तब अन्न खाऊं परन्तु करूं क्या तुम्हारे आगे कुछ बस नहीं चलता है। भीलों ने कहा, अब हम तुमको कुछ भी हजा न पहुंचावेंगे। फिर रणमल अपने योद्धाओं को लेकर पहाड तले आया, भीलों ने कहा कि पहाड के मार्ग में एक सिंहनी रहती है सो मनुष्य को देख कर गर्जना करेगी। रणमल तो पगडंडी चढता हुआ सिंहनी के समीप जा पहुचा, वह गर्ज उठी, तुरन्त अडवाल (अडकमल) ने तलवार खींची उस पर वार किया और वहीं काट कर उसके दो टुकडे कर दिये। सिंहनी का शब्द सुनकर ऊपर रहने वालों ने कहा कि सावधान! परन्तु वह एक ही बार बोलने पाइ थी इसलिए

उन्होंने सोचा कि किसी पशु को देखकर बोली होगी। इतने में तो रणमल घोड़े को नीचे छोड़ कर पहाड़ पर चढ़ गया और दर्वाजे पर जाकर बर्छा मारा। भीतर जो मनुष्य थे, चौंक पड़े और कहा, रणमल आया। चाचा मेरा से लड़ाई हुई, सीसोदियों को मार कर पांवों तले पटका चाचा मारा गया और महपा स्त्री के कपडे पहन कर पहाड़ के नीचे कूद भाग गया। रणमल ने चाचा की बेटी के साथ विवाह किया, मनुष्यों के घड़ों के बाजोट और बर्छियों की चंवरी बना कर वहां सीसोदियों की कई कन्याएं रणमल ने अपने भाइयों को विवाह दी और पीछा लौटा।

महपा भाग कर माडू के बादशाह की शरण गया। जब यह खबर राणाजी को हुई तब उन्होंने बादशाह पर दबाव डाल कर कहलाया कि हमारे चोर को भेज दो। बादशाह ने महपा को कह दिया कि अब हम तुमको नहीं रख सकते हैं। महपा ने उत्तर दिया कि मुझको कैद करके शत्रु को मत सौंपिए और आप घोड़े सवार हो गढ़ के द्वार पर आ घोड़े समेत नीचे कूद पड़ा। घोड़ा तो पृथ्वी पर पडते ही मर गया और महपा भाग कर गुजरात के बादशाह के पास पहुँचा। जब उसने वहा भी बचाव की कोई सूरत न देखी तो चित्तौड़ ही की तरफ चला। वहां राज्य तो राणाजी करते थे, परन्तु राज का सब काम रणमल के हाथ में था। महपा रात्रि के समय लकड़ियों का भार सिर पर धर कर नगर में पैठा। उसकी एक स्त्री अपने पुत्र सहित वहां रहती थी, जिसको उसने दुहागन कर रक्खा था। उसके घर आया, पत्नी ने अपने पति को पहचान कर भीतर लिया। अब वह घर में बैठा रहे और सूत के मोहरे व रस्से बनावे। एक दिन एक मोहरी अपने पुत्र को देकर कहा कि जाकर दीवाण के नजर करदे और जो दीवाण कुछ प्रश्न करें तो अर्ज करना कि महपा हाजिर है। बेटे ने हजूर में जाकर मोहरी नजर की और दीवाण ने पूछा तो अर्ज कर दी कि महपा हाजिर है। राणा ने उसे बुलाया। उसने अर्ज की कि मेवाड़ की धरती राठोड़ों ने ली। यह बात सुनते ही दीवाण के मन में यह भय उत्पन्न हो गया कि ऐसा न हो कि रणमल मुझे मार कर राज लेले। राणा ने सेना एकत्रित की और वे रणमल को चूक से मार डालने का विचार करने लगे। रणमल के डोम ने किसी प्रकार वह भेद पा लिया और राव से कहा कि दीवाण आप पर चूक करना चाहते हैं, परन्तु राव को उसकी बात का विश्वास न आया तो भी अपने सब पुत्रों को वह तलहटी ही में रखने लगा। (अवसर पाकर) एक दिन चूक हुआ। २५ गज पछेवड़ी राव के पलग से लपेट दी, जिसपर राव सोया हुआ था। सत्रह मनुष्य राव को मारने के लिये आये, जिनमें से १६ को तो राव ने मार डाला। और महपा भाग कर बच गया। रणमल भी मारा गया। यहां रणधीर चूण्डावत, सत्ता भाटी लूणकरणोत, रणधीर, सुरध्वत और दूसरे भी कई काम आये। (रणमल के पुत्र) जोधा, सीहा, नापा तलहटी में थे भाग निकले। उनके पकड़ने को फौज भेजी गई, जिसने आडावला (अर्वली) पहाड के पास उन्हे जा लिया और वहां युद्ध हुआ, जहा चरड़ा, चादराय, अरडकमलोत, पृथ्वीराज, तेजसिंह आदि और भी राठौडों के सर्दार मारे गये परन्तु जोधा कुशलतापूर्वक मडोवर पहुँच गया।

नर्बद सतावत ने राणाजी को आंख दी जिसकी बात—जब राणा मोकल और राव रणमल मंडोवर पर चढ़ आये (मत्ता के पुत्र) नर्बद ने युद्ध किया और घायल हुआ। उस वक्त उसकी बाईं आंख पर तलवार लगी, जिससे वह आंख फूट गई। राणा नर्बद को उठा कर अपने साथ लाया, घाव बंधवाये और मरहमपट्टी कराये उसको चंगा किया। लाख रुपये की वार्षिक आय का कायलाणे का ठिकाना उसे जागीर में दिया। राणा मोकल चाचा मेरा के हाथ से मारा गया और राणा कुंभा पाट बैठा, उसने राव रणमल को चूक कर मरवाया। नर्बद तब भी दीवाण ही के पास रहता था। एक दिन दीवाण दरबार में बैठे थे तब किसी ने कहा कि "आज नर्बद जैसा राजपूत दूसरा नहीं है" राणा ने पूछा कि उसमें क्या गुण है जो इतनी प्रशंसा की जाती है? उत्तर दिया कि दीवाण उससे कोई भी चीज मांगी जावे वह तुरन्त दे देता है। राणा ने कहा हम उससे एक चीज मांगते हैं, क्या वह देगा? अर्ज हुई कि देगा। नर्बद उस दिन मुजरे को ही नहीं आया था। दीवाण ने अपने एक खवास को उसके पास भेज कहलाया कि "दीवाण ने तुमसे आंख मांगी है।" नर्बद बोला– दूंगा। खवास की नजर बचा पास ही भलका पड़ा हुआ था, जिससे आंख निकाल रूमाल में लपेट उसके हवाले की। यह देख खवास का रंग फक हो गया क्योंकि दीवाण ने खवास को पहले समझा दिया था कि यदि नर्बद तेरे कहने पर आंख निकालने लगे तो निकालने मत देना, परन्तु नर्बद ने तो आंख निकाल हाथ में दे दी। खवास ने वह रूमाल दीवाण के नजर किया और दीवाण ने आंख देखकर बहुत ही पश्चात्ताप किया। आप नर्बद के डेरे पधारे, उसको बहुत आश्वासन देकर उसकी जागीर ड्योढ़ी करदी।

———

मुहणोत नैणसी की ख्यात भाग १ अनुवादक श्री राम नारायण दूगड़, काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित

सम्पादकीय टिप्पणी

मुहणोत नेणसी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "मुहणोतनेणसीरी ख्यात" मे राजस्थान के इतिहास पर विस्तार से लिखा है। मूल ग्रन्थ राजस्थानी भाषा में है जिनका प्रकाशन "राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माला" मे किया जा रहा है। इस ख्यात का हिन्दी रुपान्तर नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

"वीरवांण" सम्बन्धी कई घटनाओ के विषय मे भी मुहणोत नेणसी ने अपनी ख्यात मे लिखा है। मुहणोत नेणसी के वक्तव्य से काव्य के ऐतिहासिक पक्ष को समझने मे बहुत सहायता मिलती है। साथ ही वीरमजी, गोगाजी आदि काव्यगत चरित्रो के सम्बन्ध में कई नवीन सूचनायें प्राप्त होती हैं। इसलिये मुहणोत नेणसीरी ख्यात के सम्बन्धित अंशो को यहां प्रकाशित किया गया है।

परिशिष्ट ५

शब्दार्थ

अगा = सौंपकर।
अखदा = कहा।
अछरा = अप्सराएँ।
अछुरती = अतृप्त।
अणचिंत्या = अचानक।
अणी = फौज।
अपती = अविश्वसनीय।
अबगी = दुख के समय।
अबीह = निडर।
अरक = सूर्य।
अरिगज माग उठाय = शत्रु को नष्ट करने वाली तलवार उठाकर।
अवलिया = औलिया।
अस = अश्व।
असमर = तलवार।
असवार = घोड़ा का चीरा हुआ भाग।
अहराव = सर्पों का राजा।
अहि = सर्प।
आयात=गर्वित।
आरांण = युद्ध।
आयस = आशा।
आमर = व्यामिर।
आफू=अफीम।
आपो = देवो।
आपाणी = पुरुषार्थी।
आदू = आरम्भ से।
आनोखा = जिसको जक (चैन) ही न पड़े।
इल = पृथ्वी।
इख = देखकर।
उकती=समझ।
उजीर = वजीर।
उथपे = हटाना।
उपाध = बखेड़ा।
उमिया = उमा।
ऊधी = उलटी।
उनागी = नंगी तलवार।
उललिये गड्डे = गाड़ी उलटने पर।
उरस = आकाश।
ऊरिया = घोड़े से हमला करना।
ऐराकियां = घोड़े।
ओहां = तरह।
ओघ = खानदान।
ओलागैला = आसपास

ओसके = पांव पीछे हटा दिये ।
कथ = बात ।
कमीणा = विवाह में नेग लेने वाले व्यक्ति जैसे नाई, कुम्हार, बढ़ई आदि ।
कमधा = राठौड़ जाति के राजपूत ।
करग = हाथ ।
करलाया = क्रन्दन किया ।
कर तेगा नंगा = नंगी तलवारे हाथ में लेकर ।
कलह = युद्ध ।
कव = कवि ।
काण = मर्यादा ।
कामेती = कर्मचारी ।
किरमिर = तलवार ।
किरणाला = तेजस्वी ।
किलमा = मुसलमान ।
कूक – फरियाद, शोर ।
कूक कराणी = पुकार की ।
कूकाऊ = पुकारू ।
कूड़ = झूठ ।
केकाण = घोड़ा ।
केवांण = तलवार ।
केवि = कई ।
कोड़ीधर = करोड़ो के मूल्य वाले ।
खगवाढ़ खिराणी = तलवारो की धारे खिर गई ।
खड़िया = चला
खथ्थे = तेजी से
खल = शत्रु ।
खांगां खलकाया = तलवारो से काट डाले ।
खाचा ताणा = खीच तान कर ।
खाजरू = बकरे ।
खापां = तलवार ।
खाफर = काफिर ।
खाम द = खाविंद ।
खिम खून = कितने ही ।
खिताई = अपराधों को क्षमा किया ।
खिमंड़े = सहन करेगे ।
खूनियो = अपराधियो ।
खूर चलाया = घोड़े बढ़ाये ।
खेचर = आकाश पर विचरने वाले ।
खेग = घोड़ा ।
खेंगा = घोड़े
खोज = चिन्ह ।
खोलड़ = झोपड़ी ।
ग्रभ = गर्व ।
गल = बात
गवराये = गीतो मे गाये गये ।
गह में भरियोड़ा = घमंड में भरा हुआ ।
गायणिया = गाने वाली स्त्रिया ।
गिलणकूं = गिरने को ।
गुणियण = गुनी जन ।
गैरिया = होलीपर डंडो से खेलने वाला ।
गैण = गयण, आकाश ।
गैब = अदृष्य ।
घड़ा = सेना ।
घमोड़ी = जोर से मारी ।
घोरां घलवाया = कब्रो में सुलादिया ।
चखलल्ले = लाल आखे ।
चवे = कहना ।
चिगायो = बहकाया ।
चित्त विटालिया = बुद्धि बिगड़ गई ।
चूक = धोखे से मारना ।
चोहटां = बजार ।
चचल = घोड़ा ।
छानै = छिपकर ।

छिवता – स्पश करते हुए।
छोरू – बच्चे ।
ज्याग – यज्ञ।
जरदा – पच सकेगा ।
जरा – तब।
जळ चाढा – आब चढायें।
जहुवार – जुहार, मुजरा
जाव – जवाब।
जारिया – सहन किया।
जीए करे – जीन कसना।
जेज – देर।
जेवडा – रस्से।
टोळा – ऊँटों का भुण्ड।
टिल्ला – धक्का।
ठाला – बेकार।
ठहके – ठहर जाना।
डबर – बादल।
डाणी – कर वसूल करने वाला ग्रहलकार।
डूमडा – ढोली।
डोकर – बुढिया।
डोफा – बेवकूफ।
डोळी – डोली जिसमे घायलो को उठाया जाता है।
तरवारी – तलवार।
तवाई – ग्रापत्ति की जाच।
तागा – मरने को तैयार होना।
ताजए – घोडा।
तेरू – तराक ।
तरे तुगा – फाजो का समुह।
तिरसा – प्यास।
तोरार – घाटा ।
थट – समूह।
थर्प – स्थापित करना।
थान – स्थान।
दाटिया – रोका।
दाठे – राकता है ।
दिन घोळे – दिन दहाडे।
दिहाडा – दिन ।
दुभाल – योद्धा ।
दुथरणी – दो स्तनो वाली से उत्पन्न मनुष्य मात्र ।
दोयए – शत्रु।
धकचाळा – युद्ध ।
धज – ध्वज।
धन – गौधन ।
धरिणयाप – स्वामीत्व ।
धाह – आतक।
धारू – एक प्रसिद्ध भक्त।
धीब – झडी।
धू – मस्तक।
धूड – धूलि।
धूप – खाडा।
धूसबा – ध्वस करने को।
धूम – रए के नक्कारे।
धेख – वैर।
धोवा – अजलि भरकर ।
धोम – क्रोधित।
नखतेत – अच्छे नक्षत्रो वाला ।
नगारे ववापड – नक्कारे पर चोब पडी।
नाठा – भगे ।
नालेर – नारियल।
नाळिया – बन्दूकें।
नेजा – भाला।
नेम – नियम।
पख – पक्ष।
पखराळा – पाखर से युक्त।
पडप्पए – चूता ।
पडै – चित्र।
पण – प्रतिना।
पमग – घोडा।
परदला – कमर मे बाधने का पट्टा जिसमे तलवार रहती है।

परत – विलकुल ।
पल – मांस ।
पलचर – मांस भक्षी ।
पलाणी – घोड़ो पर जीन कसे ।
पाखती – पार्श्व ।
पाखर – घोड़े के लोह के कवच ।
पाणा – हाथ ।
पाडव – चरवादार ।
पाडिया – मारे ।
पाणी राळियो – आंसू बहाये ।
पालवा – मना करने को ।
पाळा – पैदल ।
पालिया – मना किया ।
पिंड – शरीर ।
पेटो – भेद ।
पोहर – एक पहर ।
पोहता – पहुँचे ।
पोह – उषा काल ।
पखणिगा – मांसाहारी पक्षी ।
पंखराव – गरूड़ ।
पंचौल – पचायत ।
फणधर – शेषनाग ।
फरहास – एक प्रकार का वृक्ष ।
फाचरा – लकड़ी के टुकडे ।
वगतर कुठां वीड़िया – वख्तर की कडियां कसकर ।
वकारे – ललकारना ।
वटका – टुकड़े ।
वड़नाळ – एक प्रकार की वन्दूक ।
वडाला – वड़ाई युक्त ।
वक्के – कहते हैं ।
वधाया – स्वागत किया ।
वपसक वडाळा – जिससे वडे-वड़े भी भयभीत हो जावें ।
स – वर्ष ।
वाकर – वकरे ।
वामण – ब्राह्मण आदि ।
वारठ – वारहठ, चारण ।
वारा – समय ।
वागी भाट – जोर से तलवारें चली ।
वाहर – छोटी फौज ।
वीजळ – तलवार ।
वीजाई – दूसरा ।
विरदा रुख वाळा – यश के रक्षक ।
वूडसी – डूव जायगा ।
वेली – साथी ।
भथ्थे – तूणीर ।
भाण – सूर्य्य ।
भाजिया – भग गये ।
भारात – युद्ध ।
भाळवा – देखने को ।
भिड़ज – घोडा ।
भुजपांण – भुजवल ।
भूंड – वदनामी ।
भूतावळ – भूतो मे ।
म – मत ।
मन वेठियो – मन रखा ।
मलफाणी – शेर की उछल ।
महल – स्त्री ।
मागे खासां – मांगकर खायेंगे ।
माणस – मनुष्य ।
मिणधारी – मणिधारी ।
मियानां – म्यानो से ।
मुंजावर – मजाफर ।
मुझ हदा – मेरा ।
मुसकण – मुश्की घोड़ा ।
मोकलूं – भेजूं ।
मगरै – मेला ।
मंडलीक – वडा राज ।
रकेवां – रकाव ।
रणतूर – रण के वाजे ।
रत – रक्त ।

राइका – रैबारी जाति जो ऊंट चराती है।
राडधरा – मारवाड के गाव का नाम है।
रावत – बहादुर।
रोमा – शत्रु।
रूक – तलवार।
लाणत – लानत।
लिगार – बिलकुल।
लियो वडाय – कटा लिया।
लीह – लकीर।
लूण उजाळियो – नमक हलाली की।
लगर – योद्धा।
वनराव – सिंह।
वरमालता – विवाह करते समय।
वळ – खाद्य सामग्री।
वासख – वासुकि नाग।
वागा ढोलारी विगत – ढोल बजाने का वृत्तान्त।
वाळियो – वर लिया।
वास – सहायक।
विडगा – घोडे।
विमाह – विवाह।
विय्याह – विवाह।
वीटिया – घेर लिया।
वीराद वीराणी – वीरो मे भी उत्तम वीर।
वीहगेस – गरुड़।
वीहडै – मारना।
सखरी – अच्छे।
श्रग – स्वर्ग।
सतावी – जल्दी के।
सपतास – सूय का सपताश्व घोडा।
समसेर सभाई – तलवार उठाई।
समापो – देवो।
समीयाण – सज्जन।
सलखाणया – मलखेजी के पुत्र।
सल्ला – सलाह।
साकण – एक प्रकार की डाकिन।
साकुर – घोडा।
साख – फसल।
साखत – घोडे का साज।
साणी – तबेले का दरोगा।
सादूलो – शार्दूल।
साधिया – जोड दिये।
सावळ – भाला।
सामठा – बहुत।
सामेळ – स्वागत।
सायर – सागर।
सावत – योद्धा।
सिरगळ – श्रृगाल।
सिलगी – सुलगी।
सीचाण – बाज पक्षी।
सोण – श्रोणित।
सोबायत – सूबेदार।
सोहडा – योद्धा।
हणसी – मारेगा।
हेरू – तलास करने वाले।
है – हय, घोडा।
हैकण – एक।
हैवर – घोडा।
होकार – हूकार।
भ्रामर – नक्कारा।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी

प्रकाशित राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ

१. कान्हड़दे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ रचित। सम्पादक—प्रो. के. बी. व्यास, एम ए। मूल्य १२.२५
२. क्यामखां रासा, कविवर जान रचित। सम्पादक—डॉ. दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द, भंवरलाल नाहटा। मूल्य ४.७५
३ लावारासा, चारण कविया गोपालदान विरचित। सम्पादक—श्री महतावचन्द खारैड़। मूल्य ३.७५
४. वाँकीदासरी ख्यात, कविवर वाँकीदास। सम्पादक—श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम. ए.। मूल्य ५.५०
५. राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग १, सम्पादक—श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम. ए.। मूल्य २.२५
६. जुगलविलास, महाराजा पृथ्वीसिंह कृत। सम्पादिका—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य १.७५
७ कवीन्द्रकल्पलता, कवीन्द्राचार्य कृत। सम्पादिका—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत: मूल्य २.००
८ भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारण कृत। सम्पादक—श्री उर्दैराज उज्ज्वल। मूल्य १ ७५
९. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर के हस्तलिखित ग्रन्थो की सूची, भाग १। मूल्य ७.५०
१०. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २। मूल्य १२.००
११. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १ मुंहता नैणसी कृत। सम्पादक—श्री बदरीप्रसाद साकरिया। मूल्य ८.५०
१२. रघुवरजसप्रकाश, किसनाजी आढा कृत। सम्पादक—श्री सीताराम लाळस। मूल्य ८.२५
१३. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १। मूल्य ४.५०
१४. वीरवांण, ढाढी बादर कृत। सम्पादिका—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य ४.५०

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.